बापूके पत्र – १

आश्रमकी बहनोंको

[६–१२–'२६ से ३०–१२–'२९ तक]

संपादक

काका कालेलकर

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद

प्रकाशकका वक्तव्य

गांधीजीके अक्षर-शरीरका अेक बड़ा भाग अुनके पत्र हैं। ये पत्र अुन्होंने जितनी जाति, वर्ग और अुम्रके लोगोंको तथा जितने विषयों पर लिखे हैं, अुनका पार नहीं पाया जा सकता। और अिन्हीं सब पत्रोंमें अुस महापुरुषके परम जीवनके कितने ही व्यक्त हुअे विरल पहलू छिपे पड़े हैं। अुनके जीवन-चरित्रकी दृष्टिसे भी यह अेक बड़ा संदर्भ-साहित्य माना जा सकता है। अुन्होंने अपनी प्रकाशित और अप्रकाशित तमाम रचनाअें नवजीवन ट्रस्टको सौंपी हैं। अिस अपार पत्र-साहित्यको जितना हो सके, अुतना प्राप्त करके नवजीवन ट्रस्टने अुचित रूपमें प्रकाशित करनेका निश्चय किया है। अुसके लिअे नवजीवनकी ओरसे अेक खुला निवेदन भी प्रकाशित किया गया है, जिसमें जिन लोगोंके पास गांधीजीके पत्र हों, अुन्हें सूचित किया गया है कि अगर वे अपने पत्र नवजीवनको देंगे, तो अुनके खानगी रूपको अुचित प्रमाणमें निभाया जायगा और अुनकी नकल कर लेनेके बाद वे पत्र अुनके मालिकोंको लौटा दिये जायेंगे। अुस पर हमारे कअी भाअी-बहनोंने अपने-अपने पत्र हमारे पास भेजे हैं। शेष सबसे प्रार्थना है कि वे भी अपने-अपने पत्र भेजें।

श्री काकासाहबने अपने संपादकीय वक्तव्यमें ब्यौरेवार लिखा ही है। बहनोंके नामके पत्र अेक विशेष पत्र-समूह होंगे। अैसे तमाम पत्र श्री काकासाहबने देखकर

छपवानेके लिअे तैयार करके देना मंजूर किया है। जो पत्र अिस समय छपनेके लिअे तैयार हैं, अुनके स्पष्ट ही तीन-चार समूह हैं। अिसलिअे, अिस पुस्तकमें आये हुअे पत्रोंको मुख्य नाम 'आश्रमकी बहनोंको' दिया गया है। अैसा ही खास नाम दूसरे समूहका भी होगा। अिसीके साथ अिन सबका 'बापूके पत्र' अैसा अेक साधारण गौण नाम रखकर खंड १, २, . . . वगैरा कर देना तय किया गया है। अिस पत्रावलीमें अनेक बहनोंको लिखे हुअे पत्रोंके समूह लेनेका विचार है। वे जैसे-जैसे तैयार होंगे, वैसे-वैसे प्रकाशित किये जायेंगे।

श्री काकासाहब अिन पत्रोंको देखकर तैयार कर रहे हैं, अिसके लिअे अुनका और अिस साहित्यको अिकट्ठा करनेमें जिन्होंने सहयोग और मदद दी है, अुन सबका मैं नवजीवनकी तरफसे आभार मानता हूँ।

आशा है यह पत्र-साहित्य सबको रुचेगा।

अिन पत्रोंमें जहाँ-जहाँ तिथियाँ आअी हैं, वे सब गुजराती पंचांगके अनुसार हैं।

१०-५-'५०

वहनोंके बापू

आश्रम-जीवनके वारेमें चर्चा करते हुअे अेक बार मैंने पू० वापूजीसे कहा था कि "आश्रममें जितने पुरुष आये हैं, वे सब आपकी प्रवृत्तिसे आकर्षित होकर आये हैं। राष्ट्रसेवा तो सबका आदर्श है ही; अुनमें से कुछका आकर्षण राजनैतिक स्वराज्यके लिअे है, कुछ लोग यह देखकर आये हैं कि हिन्दू धर्मकी पुनर्जाग्रति आपके द्वारा होगी, कुछको अितना ही आकर्षण है कि आपके जरिये अहिंसा जीवित और प्रभावशाली होने लगी है, कुछका मुख्य आकर्षण अस्पृश्यता-निवारण ही है, जबकि हममेंसे कुछ यह समझकर आये हैं कि राष्ट्रीय शिक्षाका प्रयोग करनेके लिअे यह अुत्तम स्थान है। मगर यह नहीं कहा जा सकता कि आश्रमकी स्त्रियाँ आश्रमके आदर्शको देखकर आअी हैं। गंगाबहन जैसी अेक-दो वहनोंके अपवाद छोड़ दें, तो बाकीकी सब बहनें अपने पति, पिता या भाअी वगैरा किसी न किसीके पीछे-पीछे ही आअी हैं। यह स्पष्ट बात है कि आश्रम-जीवन अुन्हें जबरदस्ती स्वीकार करना पड़ा है। कुछ बहनोंके मनमें आश्रमके आदर्शोंके प्रति विरोध नहीं, तो अरुचि ज़रूर है। मैं सिर्फ ब्रह्मचर्यके आदर्शकी ही बात नहीं कहता, मगर हम जो कौटुम्बिक जीवनको गौण बनाकर सामाजिक जीवन बितानेकी तालीम देना चाहते हैं, वह भी कुछको पसन्द नहीं है। हमारी लक्ष्मीबहनमें गांधर्व महाविद्यालयके सामाजिक जीवनकी आदी होनेके कारण कुछ होशियारी आ गअी है। परन्तु यह देखकर कि

जिनमें सामाजिक जीवनका अुत्साह है, अुन्हींको सारा भार अुठाना पड़ता है, अिस आदर्शके प्रति अुनका भी समभाव नहीं रहा। हमारे भोजनके नियम भी बहनोंको परेशान करते हैं।

"दूसरी बात यह है कि रोज थोड़ी-थोड़ी चर्चा करके स्त्रियोंको सब कुछ समझानेका धीरज पुरुष वर्गमें कम है। ज्यादातर यही वातावरण दिखाओ देता है कि जैसे-तैसे निभा लिया जाय। नतीजा यह है कि स्त्रियाँ आश्रमजीवनको परिपुष्ट बनानेके बजाय शिथिल करनेकी कोशिश करती दिखाओ देती हैं और अिस तरह हमारा बोझ बढ़ता जा रहा है। अिसका अुपाय आप ही कर सकते हैं।"

अिस पर बहुत चर्चा हुओ और तय किया गया कि बापूजीको स्त्रियोंके लिअे अेक कक्षा चलानी चाहिये। बापूजीने अुसमें अेक कीमती बात जोड़ी। अुन्होंने स्त्रियोंके लिअे अेक स्वतंत्र प्रार्थना शुरू की। अुसके सारे श्लोक खुदने ही चुने और स्त्रियोंके लिअे वक्त निकालकर अुसमें अपनी आत्मा अुँड़ेल दी।

अिस सबका अद्भुत असर हुआ। स्त्रियोंमें अेक नअी जाग्रति आओ। अुनके सवालोंकी चर्चा होने लगी। आश्रम-वासियोंको अुनकी मुश्किलोंका अधिक स्पष्ट भान हुआ। कअी विशेष कक्षाअें चलीं, और तरह-तरहके प्रश्न हल होनेके लिअे पैदा हुअे। फिर तो बापूजीने लगभग क्षेत्र-संन्यास लेकर आश्रममें ही अेक साल बितानेका फैसला किया। अनेक प्रवचन दिये। साल भर पूरा होनेके बाद बापूजीने दक्षिणकी यात्रा शुरू की। वे दिन गुजरातके बाढ़-संकटके थे। अुसके बाद मद्रासमें कांग्रेस अधिवेशन हुआ। बापूजी कांग्रेसकी राजनीतिसे अलग हो गये थे

और अुन्होंने राजगोपालाचार्यको अुनके खादीके काममें मदद देनेके लिअे दक्षिणका सफर किया। अिसी कामके सिलसिलेमें अुन्होंने लंका — सीलोनका भी दौरा किया। अुड़ीसा भी गये। गौहाटी कांग्रेसके बाद अुन्होंने फिर राजनीतिमें प्रवेश किया और स्वराज-दलको सलाह देनेका जिम्मा लिया।

सन् १९२७, २८ और २९ के तीन वर्षोंके दरमियान पू०. बापूजीने बहनोंके नाम पत्र लिखकर स्त्री-मण्डलका अपना जमाया हुआ वातावरण जाग्रत रखनेकी कोशिश की। वे स्त्रियोंके सामने रचनात्मक कामका कोअी सुझाव रखते और यदि बहनें अुसे मान लेतीं, तो वे अुन्हें प्रोत्साहन देते थे। यदि वे घबरा जातीं या वहममें पड़ जातीं, तो फौरन अपना सुझाव वापस लेकर या अुसे नरम करके अुन्हें अभयदान देते और अुस विचारको दूसरी तरह घुमाकर फिरसे अुनके सामने ज्यादा सफलतासे रखते थे। सफरके दौरानमें स्त्री-जाग्रतिके जो-जो अुदाहरण अुनके सामने आते, अुनके बारेमें बहनोंको लिखकर प्रोत्साहन देते थे। अिस तरह कअी ढंगोंसे प्रयत्न करके बापूजीने आश्रममें स्त्री-जाग्रतिका वातावरण जमाया था। अुसके मीठे फल भी तुरन्त देखनेको मिले।

जब गांधीजीने दाँडी-कूच शुरू की, तब आश्रमके बहुतेरे पुरुष और युवक अुनके दलमें शरीक हो गये थे और आश्रमके तमाम विभागोंका भार आश्रमकी बहनोंने अपने सिर पर ले लिया था।

आश्रमके बाहरकी बहनोंने भी अुन दिनों बड़ा काम करके दिखाया था। अुसमें भी शराबबन्दीके लिअे शराबखानों पर धरना देनेका काम, शराबके ठेकेदारोंको

समझानेका काम और शराब पीनेवाले लोगोंके घरमें जाकर शराबके खिलाफ कमर कसनेके लिअे स्त्री-पुरुषोंको प्रेरित करनेका काम तो बहनोंने अद्भुत ढंगसे ही किया था। अुन दिनोंकी देश-जाग्रति और खास तौर पर स्त्री-जाग्रतिकी याद करने पर आज भी मन आश्चर्य-चकित हो जाता है और बोल अुठता है कि 'सचमुच ही अुस जमानेमें कुछ जादू-सा कर दिया गया था।' अिसमें शक नहीं कि अुन दिनों मनुष्यने अपने बूतेसे बाहरका काम कर दिखाया था।

२

सन् १९२६ में बापूजीने स्त्री-वर्गके सामने जो प्रवचन दिये थे, सौभाग्यसे चि० मणिबहन पटेलने अुसी समय अुनके नोट ले लिये थे। बापूजीके पत्र जैसे अुन्हींके शब्दोंमें हमारे सामने हैं, वैसा अिन नोटोंके बारेमें नहीं कहा जा सकता। परन्तु मणिबहनकी लगन और निष्ठाका मुझे अनुभव है और नोटोंको पढ़ने पर भरोसा हो जाता है कि जो कुछ है, वह सब केवल प्रामाणिक ही नहीं है, बल्कि लगभग बापूजीके ही शब्दोंमें है। नोट लेते वक्त कुछ मुद्दोंका छूट जाना अपरिहार्य है, मगर जितने भी नोट लिये गये हैं, वे ज्योंके त्यों होनेके कारण कीमती हैं।

बापूजीके पत्रोंमें तीन बातोंका सतत आग्रह दिखाअी देता है :

(१) सामाजिक जीवनका महत्त्व बहनोंके मन पर जमाना और अिस सामाजिक जीवनको जाग्रत करके दृढ़ बनानेके लिअे तरह-तरहके अुपाय करना।

(२) 'शिक्षाका अर्थ अक्षरज्ञान' है, अिस वहमको मिटाकर 'शिक्षाका अर्थ चरित्र-निर्माण और जीवनकी दृष्टिसे आवश्यक कौशल' है, यह नया विचार सबसे मनवाना।

(३) हम समाज पर और अुसमें भी दबाये हुअे वर्ग पर बोझ न बनें और हमारे जीवनमें किसी न किसी तरहसे पाप प्रवेश न करे, अिसके लिअे शरीरश्रम, अुद्योग-परायणता, सादगी और संयमके प्रति निष्ठा पैदा करके अुसीका वातावरण जमाना।

अिन तीन आग्रहोंके साथ-साथ तंबूरेके सुरकी तरह स्त्री-स्वातंत्र्यकी बात अिन पत्रोंमें अखण्ड रूपसे आती ही है। स्त्री सचमुच अबला नहीं है; पुरुषोंकी आश्रित होनेका अुसके लिअे कोअी कारण नहीं। समाजका नेतृत्व पुरुषोंके हाथमें रहे, यह भी कोअी सनातन नियम नहीं। स्त्री अपने जीवनका अपनी स्वतंत्र अिच्छाके अनुसार निर्माण और विकास कर सकती है, और अिसी तरह मानव-प्रगतिमें हाथ बँटा सकती है। बापूजी बहनोंको अिस किस्मकी शिक्षा अुनकी शक्तिके अनुसार देते कभी थकते ही न थे।

आश्रममें कभी-कभी चोर आते थे। अुस अवसरका लाभ अुठाकर बापूजीने प्रश्न छेड़ा कि जब चोर आवें, तब बहनें क्या करें? आश्रममें अगर पुरुष हों ही नहीं, तो बहनें अपनी रक्षा कर सकेंगी या नहीं?

अिस चर्चाके समय बहनोंने बापूजीको जो पत्र लिखे, वे यदि आज हमारे पास होते, तो वह अेक कीमती मसाला साबित होता। अब तो बापूजीके जवाबोंसे सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है कि बहनोंके पत्रोंमें क्या होगा।

पुरुषने स्त्री-जातिको पराधीन बनाया। अपनी भोग-लालसाको प्रधानता देकर अुसने स्त्रीका जीवन अेकांगी, पराधीन

और कृत्रिम बना दिया। पुरुषकी अीर्ष्या और स्वामित्व-बुद्धिके कारण ही स्त्री-जाति अबला, असहाय और अनाथ मानी गअी। अिस सबका विचार करने पर यही तय रहा कि स्त्री-रक्षाकी आखिरी जिम्मेदारी पुरुषोंकी ही है; और जब तक आश्रममें अेक भी पुरुष हो, स्त्रियोंका बचाव करते-करते मर मिटना ही अुसका धर्म है। यह स्वीकार करनेके बाद भी बापूजी कहते हैं कि अभी भले ही तुम अपने आप और अपने ढंगसे अपनी रक्षा न कर सको, लेकिन धीरे-धीरे यह शक्ति तुम्हें पैदा तो करनी ही है।

अुच्च वर्ण और श्रमजीवी जातियोंके बीच जो भेद है, वह सिर्फ पढ़े-लिखे लोगोंमें ही है या पुरुषोंमें ही है, सो बात नहीं। स्त्रियोंमें भी वह अुतनी ही मजबूतीके साथ घर किये बैठा है, यह जानकर बापूजी अिन पत्रोंमें बहनोंको मज़दूरनियोंके साथ 'सगाअीकी गाँठ' बाँधनेकी प्रेरणा देते हैं।

आश्रमकी बहनोंमें कुछ बिलकुल बाला जैसी थीं, कुछ अपढ़ बुढ़िया जैसी थीं, कुछ अनुभवहीन थीं, कुछ शहरी वातावरणसे आअी हुअी थीं, तो कुछ गाँवोंसे सीधी आश्रम पहुँची थीं; और यह बात भी नहीं कि वे सब अेक ही प्रान्तकी थीं। जहाँ अितनी ज्यादा विविधता हो, वहाँ अेक भी बात कहते दस बार सोचना पड़ता है। अिसलिअे अिन पत्रोंमें गांधीजीने बहुत ही सावधानीसे अपनी बात रखी है। जितना गले अुतरे, सर्व-सम्मतिसे करना तय हो, अुतना ही करना, बाकीको छोड़ देना — यह अभयदान तो पग-पग पर दिया हुआ ही है।

अुन्होंने प्रारम्भ किया है समय-पालनके आग्रहसे। प्रार्थनामें आना ही है, तो वक्त पर आना चाहिये। संस्कृतमें

'समय' शब्दके दो अर्थ हैं: अेक है समय और दूसरा है वचन। अिन दोनों अर्थोंमें 'समयः प्रतिपाल्यताम्'— यह है बापूकी पहली सीख। प्रार्थनामें समय पर आना, प्रार्थनामें ध्यान लगाना, श्लोक जबानी याद करना, गीताके अध्याय कंठस्थ करना, अुच्चारणकी तरफ खास तौर पर ध्यान देना — यह सब धीरे-धीरे आ जाता है। प्रार्थनामें जानेका निश्चय करनेके बाद वह असाधारण कठिनाअीके बिना टाला नहीं जा सकता। जिसका निश्चय किया, अुसका पालन होना ही चाहिये। प्रार्थना तो हृदयका स्नान है। जैसे रोज नहानेमें हम नहीं चूकते, वैसे ही हृदयको शुद्ध करनेवाली प्रार्थना भी हम नहीं छोड़ सकते।

पुराने जमानेमें धर्मनिष्ठाका अर्थ था मन्दिरमें देवदर्शनके लिअे जाना। आजकल भगवान रामचंद्रने चरखेका रूप धारण कर लिया है। यह राममूर्ति चरखा छोड़ा नहीं जा सकता। यज्ञके तौर पर यानी परमार्थके लिअे किये जानेवाले कामके रूपमें चरखा चलाना ही चाहिये। अिस कलिकालमें 'वसन रूप भये श्याम' यह हमें भूलना नहीं चाहिये। त्याग द्वारा ही जीवन अुन्नत होता है। मगर त्याग यों ही नहीं हो जाता। सेवाके लिअे, परोपकारके लिअे त्याग करना आसान होता है। अिसीलिअे चरखा-यज्ञका आग्रह रखा गया है। यह चरखा नियमित कातना चाहिये। नियमित किया हुआ काम माफिक आता है। अेक ही बारमें बहुतसा करने लगें, तो अुस कर्मसे आत्मा दुखती है। प्रार्थना और चरखेका सामूहिक कार्य करने लगें, तो अुससे आपसमें अेक-दूसरेका और सबका अीश्वरके साथ सहयोग सधता है।

ऐसा कहकर गांधीजीने स्त्रियोंमें पारिवारिक भावनासे भी व्यापक सामाजिक भावना पैदा करनेकी कोशिश की है और अिसके लिअे अन्दरसे मानसिक विकास करनेकी और बाहरसे अपनेमें से अेक प्रमुख मुकर्रर करके अुसे सबकी सेवा करनेमें मदद देनेकी बात सामने रखी है। "बहनोंके बीच सहयोग अत्यंत आवश्यक है। सारे आश्रमको अेक कुटुम्ब मानो और अुसके द्वारा विश्व-कुटुम्ब-भावनाकी तैयारी करो। आज स्त्री-सेविकाओंकी खास ज़रूरत है, क्योंकि स्त्रियोंके हाथमें स्वराज्यकी कुंजी है। तुम कुशल बनकर, पवित्र जीवन बिताकर, सारे भारतवर्षमें फैल जाओ। लोगोंका यह खयाल कि स्त्री भीरु और अबला ही होती है, गलत साबित कर देना। सभामें अिकट्ठी होओ, तब बहुत बातचीत न किया करो। लड़ाअी-झगड़ेका नासूर मिटा ही देना चाहिये। हम अिकट्ठे तो अिसलिअे होते हैं कि हमारे हृदय मिल जायँ।" अित्यादि महत्वकी बात समझानेके बाद गांधीजीने धीरे-धीरे अुन्हें सार्वजनिक भोजनालय सौंपा है, क्योंकि यह चीज़ स्त्रियोंका परिचित क्षेत्र है।

भोजनालयके साथ-साथ भण्डार आ ही गया। भण्डार रखनेमें हिसाब रखनेकी बात आ गअी। अिसलिअे अुसकी शिक्षा भी लेनी ही रही। यहाँ तक पहुँचनेके बाद बापूजीने स्त्रियोंको बालमंदिर सौंप देनेकी सिफारिश की।

स्त्रियोंकी शिक्षाके मामलेमें बापूजीने अुनके सामने बहुत ही आसान कार्यक्रम रखा है: लिखने-पढ़नेका मुहावरा रखो, अक्षर सुधारो, अुच्चारण शुद्ध करो, हिसाब लिखना कोअी मुश्किल

बात नहीं। अिसके लिअे जोड़, बाकी, गुणाकार और भागाकार तकका गणित आना चाहिये।

अुसके बाद आती है अुद्योगमंदिरकी शिक्षा। अिस शिक्षामें बहुत-सी बातें आ जाती हैं। हमें धीरे-धीरे किसान, जुलाहे, भंगी और ग्वाले बनना है। पाखाने साफ करनेकी साधना भी राष्ट्रीय शिक्षाका महत्त्वपूर्ण अंग है। हमारे लिअे और बच्चोंके लिअे जब तक दूधकी ज़रूरत रहेगी, तब तक गोशालाकी चिन्ता भी रखनी ही पड़ेगी।

अिस प्रकार अुन्होंने शिक्षाके आवश्यक अंग स्त्रियोंके सामने रखे हैं। मगर बापूजीका खास आग्रह यह है कि सच्ची शिक्षा — अुत्तम तालीम — हृदयकी ही है। अिसके लिअे पहली बात निर्भयताकी है। जन्म-मृत्युका हर्ष-शोक छोड़ देना चाहिये। अगर जीना अच्छा आता है, तो मृत्युके बाद जन्म आयेगा ही। और जन्म नहीं चाहो, तो अिस लोकमें ही मोक्षकी साधना की जा सकती है। अिसलिअे दोनों तरहसे मृत्युका डर निकाल ही देना चाहिये।

पुरुषके बिना हम असहाय हैं, अनाथ हैं, यह खयाल सबसे पहले निकाल देना चाहिये। अिसलिअे गहने और शृंगार दोनों छोड़ देने चाहियें। सच्चा सौन्दर्य हृदयमें है, अुसीका हमें विकास करना चाहिये। रूप बनाना और गहने पहनना सब विकार बढ़ानेके लिअे है। विकारी न होनेका नाम ही ब्रह्मचर्य है। वह सध जाय तो अिसी जन्ममें मुक्ति है। विकार मिट जाय, तो रोग भी मिट जाय। हमें जो जवानी मिली है, वह विकारोंको पोषण देनेके लिअे नहीं, बल्कि अुन्हें जीतनेके लिअे है। कला

हम ज़रूर सीखें, मगर सच्ची कला सादी और कुदरती होती है। सुघड़ता और व्यवस्थिततामें बहुत कुछ कला आ जाती है।

स्त्रियोंमें जो स्वाभाविक कलावृत्ति होती है, अुसका विचार करके बापूजी कहते हैं कि प्रदर्शन वगैराका बन्दोबस्त करना अिन्हींका काम है।

स्त्री-संगठनमें जब बीचमें शिथिलता आ गअी, तब अुसका खतरा समझकर गांधीजीने साफ कह दिया कि नियम नरम न किये जायँ। नियम नरम करके लागू करनेके बजाय अुन्हें निकाल देना ज्यादा अच्छा है। अिकट्ठी न रह सको, सामाजिक जीवनका विकास न कर सको, तो अलग रह सकती हो। अपने किसी सगे-सम्बन्धीके साथ भी रह सकती हो।

हरअेक अवसर पर बापूजी अन्तर्मुख होनेकी कला सिखाते हैं। चोर आवे तब क्या किया जाय, अिसकी चर्चा करते हुअे अुन्होंने स्पष्ट ही कह दिया है कि हम अपरिग्रह व्रतका पालन अच्छी तरह नहीं करते और गफलतमें रहते हैं, अिसीलिअे चोरी होती है। धर्मके नाम पर चलनेवाले अनेक रिवाजोंकी जड़ अुखाड़कर अुन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि धर्मपालनका अर्थ है निःस्वार्थ परोपकार, विकारों पर विजय और कायरताका त्याग। किसी भी चीज़को छिपाना पाप है, क्योंकि असत्यकी जड़में साहसका अभाव होता है।

भक्ति धर्मका सबसे बड़ा और प्रधान अंग है। अुसकी बात करते हुअे थोड़ेमें, मगर गहराअीमें जाकर अुन्होंने कहा है — भक्ति यानी श्रद्धा। और वह श्रद्धा जितनी अीश्वरके प्रति हो, अुतनी ही खुदके प्रति भी हो।

भक्तिकी अितनी गहरी मीमांसा हमें और कहीं शायद ही मिले।

धर्मका अर्थ है परोपकार। अितना कहनेके बाद परोपकारसे होनेवाले अहंकार और मैं-पनको निकाल ही डालना चाहिये, यह कहनेका अुन्होंने अेक भी मौका नहीं छोड़ा। वह यहाँ तक कि गंगा नदी बरसातमें कीमती और बहुतसा कीचड़ फैलाकर हमारी जमीनको अुपजाअू बनाती है और आगे बहती है। अितना कहनेके बाद बापूजी और भी जोड़ते हैं कि 'अपना किया हुआ अुपकार कृतज्ञ वाल्कोंके मुँहसे सुनना पड़े, अिस संकोचके कारण गंगा तुरन्त भाग जाती है!'

हमारे देशमें जहाँ देखो वहीं सफाअीकी कमी है। नदीके घाट पर, शहरकी गलियोंमें — अितना ही नहीं, मगर भगवानके मन्दिरोंमें भी अस्वच्छता और गंदगी फैली हुअी होती है। मानो घरके बाहर हमारी कोअी जिम्मेदारी ही नहीं है।

अिन पत्रोंमें शुरूसे आखिर तक हृदयकी शिक्षाकी ही बात है। सद्वर्तन + अक्षरज्ञान = शिक्षा। अितनी आसान व्याख्या करके यह समझाया है कि निर्भयता, सेवानिष्ठा और पवित्रतामें ही सारा सद्वर्तन आ जाता है। सेवा करनी है तो वह 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' बनकर करनी है। और सेवा करते हुअे यदि प्रार्थना छूट भी जाय, तो वह छूटी नहीं कही जा सकती। क्योंकि बापूजी सदा यह शुद्ध दृष्टि देनेसे नहीं चूकते कि संकटके अवसर पर प्रार्थना कर्तव्यपालनमें समा जाती है।

बापूजी सफर करते हों और देखे हुअे भव्य या आकर्षक प्रसंगोंका वर्णन वे न करें, यह हो ही कैसे सकता है? और देशजाग्रतिका महत् कार्य सिर पर लेनेके बाद अेक क्षण

भी वे फालतू कैसे बिता सकते हैं? अिसलिअे आसाम जानेके बाद ब्रह्मपुत्रा नदी और अुसके किनारे कलायुक्त झोंपड़ियोंमें खड़ी की गअी कांग्रेसकी छावनीका वर्णन या गंगाके घाटकी शोभा, बिहारकी अमराअियाँ, कोल्लोकी स्त्रियोंकी पोशाक, मांडले (ब्रह्मदेश) या हरद्वार जैसे शहरोंका वर्णन — ये सब वे अितने थोड़ेमें निपटा देते हैं कि अिसमें बरता हुआ संयम हमें खटके बिना नहीं रहता।

बापूजीको अेक ही बात स्त्रियोंके मन पर जमानी है कि आश्रममें तैयार होओ, कुशल बनो, निर्भय बनो और असहाय स्त्रियोंकी सेवा करनेके लिअे निकल पड़ो।

बापूजी हरिजन सेवा करते हों, तब भी अुनके ध्यानमें स्त्रियोंकी सेवा करनेकी आवश्यकता भी अुतनी ही रहती थी। गोरक्षाके काममें भी असहाय स्त्रियोंकी रक्षाका अुनके मनमें अन्तर्भाव होता था। स्त्रियाँ अपनी विशेषता तो कायम रखें; मगर अपनेको पुरुषोंसे नीची न मानें, अिस बारेमें वे सतत जाग्रत रहते थे। स्त्री-जातिके अुद्धारके लिअे गांधीजी खुद स्त्री बन गये थे, यों कहें तो अुसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। अुन्होंने असाधारण रूपमें स्त्री-हृदय बना लिया था, अिसीलिअे वे स्त्रियोंके हृदय तक पहुँच सकते थे।

बापूजीने स्त्री-जातिकी सेवाके तौर पर क्या-क्या किया और अुसका क्या फल निकला, यह तो किसी स्त्री-जातिकी प्रतिनिधिको ही विस्तारपूर्वक लिखना चाहिये। गांधीयुगके साथ स्त्री-जाग्रतिके अेक खास युगका आरंभ होता है।

स्वराज्य आश्रम, — काका कालेलकर
बारडोली, २-९-'४९

आश्रमकी बहनोंको पत्र

[६-१२-'२६ से ३०-१२-'२९ तक]

१

वर्धा,
मौनवार, ६–१२–'२६

बहनो,

मेरे वचनके अनुसार, सुबह नाश्ता करके, पहला काम तुम्हें पत्र लिखनेका कर रहा हूँ।

अभी सात बजनेमें पाँच मिनट बाकी हैं। अिसलिअे तुम सब अभी तो प्रार्थना-मंदिरमें आ रही होगी। जो समय रखो, अुसका पालन करना। जिसने हाज़िर होना मंजूर किया है, वह आकस्मिक घटनाके सिवा हाज़िर होती होगी। मैंने तो रमणीकलालको गीताजीके अेक-दो श्लोक हमेशा करानेकी सूचना दी है। परंतु तुम अपनी अिच्छाके अनुसार वाचन शुरू करवाना। लिखनेका अभ्यास कभी न छोड़ना। अक्षर हमेशा सुधारना।

मगर यह सब धर्म नहीं, धर्म-पालनमें साधन रूप हैं। धर्मकी व्याख्या तो हम जो श्लोक रोज पाठ किया करते थे, अुनमें है। और हमें तो धर्म-पालन सीखना है। धर्म परोपकारमें है। परोपकार यानी दूसरेका भला चाहना और करना; दूसरेकी सेवा करना। अिस सेवाका आरंभ करते हुअे तुमने अेक दूसरेके साथ सगी बहनका-सा स्नेह रखना, अेकके दुःखमें सबने दुःखी होना। यह तो अेक ही बात हुअी। मुझे पत्र तो हर हफ्ते लिखने हैं, अिसलिअे अब यहाँसे अपना भाषण बन्द होने दूँ।

दक्षा बहन, कमला बहन और चि० रूखी मजेमें हैं। सब तीसरे दर्जेमें आये; परन्तु भीड़ नहीं थी, अिसलिअे कष्ट नहीं हुआ। मैं अकेला ही दूसरे दर्जेमें था। लक्ष्मीदासभाअी तो अपने चरखा-कार्यमें लग गये हैं। यहाँ गीताजीके पाठमें वहाँका-सा हो गया है। विशेष तुम चि० पुरुषोत्तमके नामके मेरे पत्रमें देख लेना।

बापूके आशीर्वाद

२

वर्धा,
१३-१२-'२६

बहनो,

आज भी नाश्ता करके तुम्हारा स्मरण कर रहा हूँ। ठीक ६ बज कर ५० मिनट हुअे हैं, यानी तुम्हारी प्रार्थनाका वक्त हो गया। और सब भूल जायें, पर यह न भूलें। अिसमें अेक दूसरेका और सबका अीश्वरके साथ सहयोग है। यह सच्चा स्नान है। जैसे शरीर बिना धोये बिगड़ता है, वैसे ही हृदयको प्रार्थना द्वारा धोये बिना आत्मा जो स्वच्छ है, वह मलिन दिखाअी देती है। अिसलिअे यह वस्तु कभी न छोड़ना। सुबहके चार बजे सबके बीच सहयोगका मौका है, मगर अुस प्रार्थनामें तमाम बहनें आनेमें असमर्थ होती हैं। सात बजेकी प्रार्थनामें बहनों-बहनोंके बीच सहयोगका मौका है। अुसमें सब आ सकती हैं। बहनोंके बीचका सहयोग अति आवश्यक है।

यहाँ दो अमरीकन बहनें, जो वहाँ अेक दिन रह गअी हैं, आअी थीं। तीन दिन रहकर कल गअीं। वे माँ-बेटी हैं।

लड़की कुमारी है। पच्चीस वर्षकी अुम्रकी है और पाँच सौ लड़कियोंके महाविद्यालयमें अेक अूँची श्रेणीकी शिक्षिका है। दुनियामें नीति-शिक्षण किस ढंगसे दिया जाता है, यह देखनेके लिअे अुसके आचार्यने अुसे भेजा है। अुसकी माँ अुस कुमारीकी रक्षाके लिअे साथ रहती है। दोनों सारी दुनियामें निर्भयतासे घूम रही हैं। अैसी निर्भयता और अुस बहनके बराबर सेवानिष्ठा हममें आ जाय, तो कितना अच्छा हो?

मीरा बहनका जीवन तो सब बहनोंके लिअे विचार करने योग्य बन गया है। अुसके हिन्दी पत्र वहाँ आते होंगे। मेरे नाम जो पत्र आते हैं, अुनसे मैं देखता हूँ कि अुसने अपनी सरलता और प्रेमपूर्ण स्वभावसे गुरुकुलकी बालाओंके मन हर लिये हैं। वह लड़कियोंमें खूब घुल-मिल गअी है और अुन्हें पींजना-कातना अच्छी तरह सिखा रही है। अपना अेक पल भी व्यर्थ नहीं जाने देती। अिस निष्ठा, अिस त्याग और अिस पवित्रताकी आशा मैं तुम बहनोंसे रखता हूँ। तुम कुशल बनकर और पवित्र जीवन बिता कर सारे भारतवर्षमें फैल जाओ, क्या यह आशा तुम्हारी शक्तिसे ज्यादा है? क्षण-क्षण मैं स्त्री सेवि-काओंकी ज़रूरत देख रहा हूँ। त्यागी पुरुष देखनेमें आते हैं। लेकिन त्यागी स्त्रियाँ प्रकट रूपमें थोड़े ही दिखाअी देती हैं? स्त्री तो त्यागकी मूर्ति है। मगर अिस समय अुसका त्याग कुटुम्बमें समा जाता है। जो त्याग वह कुटुम्बकी खातिर करती है, अुससे भी ज्यादा वह देशके लिअे क्यों न करे? अन्तमें तो जो धर्मपरायण बनती है, वह विश्वके लिअे त्याग करेगी। मगर देश तो पहली सीढ़ी है। और जब देशहित विश्वहितका विरोधी

न हो, तब देश-हित-सेवा हमें मोक्षकी तरफ ले जानेवाली बन सकती है।

यह विचार सब बहनें करने लगें, यही अिस सप्ताहकी माँग है।

यह पत्र वहाँ मणिबहन नहीं होगी, अिसलिअे तारा बहनको भेज रहा हूँ। मगर मैं चाहता हूँ कि तुम अपनेमें से अेक प्रमुख मुकर्रर कर लो।

मौनवार   बापूके आशीर्वाद

३

२०-१२-'२६

बहनो,

तुम्हारी तरफसे चि० राधाके पत्र पहुँचे हैं। पू० गंगा बहन प्रमुख मुकर्रर हुअीं, यह ठीक ही हुआ है। मगर प्रमुख बनाये जानेके बाद अुन्हें अुस पदको शोभायमान करनेमें तुम्हें मदद देना है, क्या अिस तरफ तुम्हारा ध्यान खींचू? तुमने निरक्षर बहनको प्रमुख नियुक्त करके सद्वर्तनको, त्यागको प्रधानता दी है। यही होना चाहिये। सद्वर्तनके बिना ज्ञान बेकार है। अिसके बारेमें कभी शंका न करना।

प्रमुखका अर्थ है बड़ी सेविका। राजाको हुक्म देनेका अधिकार तो तभी मिलता है, जब वह सेवा करनेकी शक्तिमें सबमें अूँचा पहुँच गया हो। वह जो हुक्म देगा, वह अपने स्वार्थके लिअे नहीं, मगर समाजके भलेके लिअे होगा। आजकल तो धर्मके नाम पर अधर्म हो रहा है। अिसलिअे राजा त्यागी होनेके बजाय भोगी बन बैठे हैं, और अुन भोगोंके लिअे हुक्म

देने लगी हैं। मगर तुमने तो गंगा बहनको धार्मिक दृष्टिसे प्रमुख बनाया है। यानी तुमने फैसला किया है कि तुम सब सेविका बननेका प्रयत्न करनेवाली हो और तुममें गंगा बहन मुख्य सेविका हैं।

याद रखना कि तुम सब बहनें भारतमातासे सूतके धागेसे बँधी हो। सूतको भूलोगी, तो सेवाको भी भूलोगी। अिसलिअे चरखा न भूलना। राम तो आज चरखेमें ही बसता है। चारों ओर भुखमरीका दावानल सुलग रहा है। अुसमें मुझे तो चरखेके सिवा और कोअी आधार दिखाअी नहीं देता। भगवान किसी मूर्तरूपमें ही हमें दिखाअी देता है। अिसीलिअे द्रौपदीके बारेमें हम गाते हैं, 'वसनरूप भये श्याम'। जिसे देखना हो, वह अुसे चरखेके रूपमें देख ले।

मैं अपनी हद लाँघ गया हूँ। मुझे दो पत्रोंसे आगे नहीं जाना था। ज्यादा लोभ करूँ तो चल नहीं सकता।

मीरा बहनके तमाम पत्र मैं चि० मगनलालको भेजा करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि अुन्हें तुम सब बहनें ध्यानसे सुनो, समझो और विचारो। मेरी नज़रमें अिस समय हमारे पास वह अेक आदर्श कुमारी है।

तुम्हें हाशियावाले अच्छे कागज़ पर लिखनेका कहकर राधाने मुझ पर खासा बोझ डाल दिया है। जहाँ तक अुठेगा, अुठाअूँगा।

अपनी तबीयतके बारेमें मैं कुछ नहीं लिखता, क्योंकि वह बहुत अच्छी है। जमनालालजी और जानकी बहनने मुझे बचाकर खूब शान्ति दी है। मेरा वजन चार पौण्ड बढ़ गया मालूम

होता है। भोजन बराबर किया जा सकता है। बा की बनाअी हुअी प्रसादी हमेशा चखता हूँ। वह अभी तक चल रही है।

मैं यहाँसे कल चलूँगा। बम्बअीसे मीठुबहन, जमनाबहन और पेरिनबहन खादीके कामके लिअे आ रही हैं। अुनसे मैं गोंदियामें मिल जाअूँगा। गोंदिया कहाँ है, यह तुम्हें नक़शेमें देख लेना चाहिये।

दक्षाबहन और जर्मन बहन कल गअीं। अेक बारडोली और दूसरी क़ाशी।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

४

गौहाटी,
सोमवार, २७–१२–'२६

बहनो,

आज तुम्हारा पत्र सवेरे शुरू करनेके बजाय डाक बंद होनेके वक्त शुरू कर रहा हूँ। यहाँ डाक जल्दी बन्द होती है।

यहाँका दृश्य बहुत बढ़िया है। ठेठ ब्रह्मपुत्राके किनारे हमारी झोंपड़ी बनाअी गअी है। काका साहबका जी तो झोंपड़ी देखकर ही अुसमें रहनेको हो जाय। अूपर घासका छप्पर है। यहींके बाँसकी पट्टियोंकी दीवार है। अुसे मिट्टीसे लीप दिया है और अन्दर सब जगह आसमानी खादीसे सजा दी गअी है। भीतर खाट नहीं है, मगर यह कहा जा सकता है कि बाँसके पायोंका अेक तख्ता बनाया है। अुस पर घास बिछा दी है और अुसके अूपर जाजम और जाजम पर खादी। अिसी खाट

पर मैं बैठता हूँ, खाता हूँ और सोता हूँ। वह अितनी बड़ी है कि अुस पर चार आदमी और सो सकते हैं। मगर दूसरा कोअी नहीं सोता। ज़मीन पर भी घास बिछाकर अुस पर जाजम और अुसके अूपर खादी बिछा दी है। अैसी झोंपड़ीमें रहना किसे पसन्द नहीं होगा? हाँ, यह सही है कि अिस झोंपड़ीकी आयु बहुत थोड़ी है। बरसातमें यह निकम्मी है। मगर अिसमें खर्च बहुत कम होता है। बनानेमें दो-अेक दिन लगते होंगे। बनानेमें बहुत कुशलताकी ज़रूरत नहीं रहती। सभी कलाओंका यही हाल है। वे हमेशा सादी और स्वाभाविक होती हैं।

नमी और सरदी खूब है। जो खूब चलते-फिरते हैं, वे बीमार नहीं होते।

और तो बादमें, और अुस वक्त जो याद आ जाय सो।

बापूके आशीर्वाद

५

सोदपुर,
३–१–'२७

बहनो,

अिस बार अभी तक तुम्हारा साप्ताहिक पत्र मुझे नहीं मिला। आज हम खादी प्रतिष्ठानकी ली हुअी जमीन पर बनाये गये नये मकानोंमें हैं। यहाँ बहुतसे छोटे मकान बनाये गये हैं। यहीं अब यंत्र द्वारा खादी धोने, सफेद करने और रंगनेका काम होता है। कल यहाँ बड़ी सभा हुअी थी। अुसमें काफी अुपस्थिति थी। मुझे लगा कि मुझे सभासे चन्दा माँगना चाहिये। मैंने माँगा, और लगभग ३५००) रुपये जमा हुअे।

हम जिस प्रकार प्रार्थना करते हैं, अुसी तरह यहाँ भी होती है। श्लोक भी वही बोले जाते हैं। बेसुरापन हमसे ज्यादा है, अिसलिअे कानोंको कठोर लगता है। मगर धीरे-धीरे अिसमें सुधार हो जायगा।

अिस तक पेरिनबहन, मीठुबहन और जमनाबहन साथ हैं। वे अपना खादीका काम करती जा रही हैं। जो खादी साथ लाअी थीं, अुसमें से आधी तो अुन्होंने बेच डाली है।

तुम्हारी प्रार्थना नियमित चलती रहती है, यह बहुत अच्छा हो रहा है। हाजिरी भी ठीक पाता हूँ।

कातना यज्ञ है, यह न भूलना। गीताजी कहती हैं कि यज्ञ किये बिना जो खाता है, वह चोरीका अन्न खाता है। यज्ञ यानी परमार्थके लिअे किया गया काम। अैसा सार्वजनिक काम हमने चरखेको माना है।

बापूके आशीर्वाद

६

बहनो,

काशी,
१०-१-'२७

चि० राधाका लिखा हुआ पत्र मुझे कल ही मिला। मैं देखता हूँ कि तुम्हारी सात बजेकी प्रार्थना नियमसे हो रही है और अुसमें सबको दिलचस्पी है। अिससे मुझे खुशी होती है। काका साहबका कहना जरूर ध्यानमें रखने लायक है। 'हाँ' या 'ना' कहकर बैठे रहनेके बजाय हमें अुसके कारण समझने या समझानेकी शक्ति पैदा करनी चाहिये।

कल श्रद्धानन्दजीके लिअे श्रद्धांजलिका दिन था। पं० मालवीयजी अभी काशीमें ही हैं। अुन्होंने अन्त समय पर कहलवाया कि गंगाघाट नहाने जाना है और वहाँ अंजलि देनी है। मैं तैयार हो गया और राष्ट्रीय विद्यापीठके विद्यार्थी, जो मुझसे मिलने आये थे, अुन्हें साथ ले लिया। दो-दो की कतार बाँध कर हम निकल पड़े। मालवीयजी शामिल हो गये और हमारा जुलूस बढ़ता गया। गंगाघाटका वर्णन करनेका तो मुझे समय नहीं है। यह दृश्य भव्य है। घाट पर मैं चाहता हूँ अुतनी सफाअी नहीं है।

स्नान करके हम काशीविश्वनाथके दर्शनोंके लिअे गये। वहाँका शेष वर्णन तो शायद महादेव करेगा। जर्मन बहन हमारे साथ थीं। अुन्हें घुसने देंगे या नहीं, अिस बारेमें शक था। वह बहन बौद्ध हैं, अिसलिअे हिन्दू मानी जायगी। अुसे कौन रोक सकता है? अुसे रोकें तो मुझे नहीं जाना है, यह मैंने सोच रखा था। मगर पंडेको यह बताने पर कि वह हिन्दू हैं, वह चुप हो गया।

काशीविश्वनाथकी गलीकी गंदगीकी तो क्या बात लिखूँ?

मौनवार   बापूके आशीर्वाद

मौनवार, १७–१–'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिल गया।

मैं तो सोमवारको ही लिखता हूँ, परन्तु मेरा ठिकाना बदलता रहता है, अिसलिअे तुम्हें मेरा पत्र पहुँचनेकी तारीख तो बदलेगी ही। अब तक मैं गंगाके दक्षिणमें था। कल अुत्तरमें आया, अिसलिअे गंगा नदी लाँघनी पड़ी। पटनासे नावमें बैठ कर अुस पार गये। वहाँ मोटर तैयार थी। अुसमें बैठकर, सोनपुर गये। यहाँकी मिट्टी कीचड़-जैसी नहीं है। अुसमें रेतकी भी मिलावट है। अिसलिअे वह पैरोंको रेशमकी तरह नरम लगती है। बा और मैं लगभग अेक मील तो पैदल चले। चप्पल नहीं पहने थे। रेत बहुत अच्छी लगती थी। अिस भागमें गंगामैया हर साल नअी जमीन तैयार करती है। सैकड़ों मीलसे अुपजाअू मिट्टी घसीट कर लाती है और अुसे छोड़ कर समुद्रकी तरफ दौड़ जाती है, मानो अुसका किया हुआ अुपकार कोअी अुसे सुना दे और अुसे शर्माना पड़े।

आज हम राजेन्द्र बाबूके गाँवमें हैं। राजबंसी और देवदास यहीं हैं। चन्द्रमुखी और विद्यावती जिस शहरमें वे रहते हैं, वहीं हैं, यानी छपरेमें। हम अुनसे छपरेमें मिले। दोनोंका स्वास्थ्य प्रमाणतः ठीक है। चन्द्रमुखीका आश्रमसे खराब, विद्यावतीका कुछ अच्छा।

कलकी स्त्रियोंकी सभामें मैंने नया प्रचार शुरू किया। यहाँकी बहनें चाँदीके भारी गहने बहुत पहनती हैं, बच्चोंको मैला रखती हैं, बालोंमें कंघी नहीं करतीं। अिसलिअे गहनोंकी आलोचना की। नतीजा यह हुआ कि अुनमें से कुछने अपने तोड़े, हँसली वगैरा मुझे दे दिये और वे भी अिस शर्त पर कि दूसरे नहीं खरीदे जायँगे, नहीं पहने जायँगे। यह काम करते वक्त तुम सब बहनोंकी याद आअी। बा मुझे अिसमें खूब मदद दे रही है। मगर यह तो अिसलिअे कि वह मेरे साथ है। अैसे काम मैं करता हूँ अुससे तुम बहुत ज्यादा अच्छे कर सकती हो। मगर अिसके लिअे त्याग चाहिये, अुत्साह चाहिये, सुविधा चाहिये। यह सब तुम्हें कहाँ मिल सकता है? हम श्लोक गाते ही हैं न— आत्मवत् सर्वभूतेषु — सबको अपने जैसा समझना? यों समझें तो किसीके बच्चे मैले हों, तब यह मान कर कि हमारे ही बच्चे मैले हैं हम शर्मायें; कोअी दुःखी हो, तो यह समझ कर कि हमीं दुःखी हैं, दुःखी हों और अुस दुःखको मिटानेके अुपाय करें।

मगर मैं तो अपनी हदसे बढ़ गया। बढ़ना अच्छा लगता है, मगर अपने पास दूसरे पत्रोंका ढेर देखता हूँ तो डर जाता हूँ।

पटना, सोनपुर और छपरा कहाँ हैं, यह नकशा लेकर देख लेना। यह भूमि राजा जनककी है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

गंगा बहन झवेरीने किसकी अिजाजतसे अपने पैरमें मोच आने दी? हरि अिच्छा। आलस्यके मारे हाजिर न हो, तो वह सजाके योग्य काम होगा।

बापू

बेतिया,
२४–१–'२७

बहनो,

आज हम बेतियामें हैं। यह वह शहर है जहाँ मैं १९१७के सालमें चम्पारनके कामके लिअे ज्यादातर रहा था। अिस अिलाकेमें आमके वन हैं। वे बहुत सुन्दर लगते हैं। जगह-जगह राम-सीताके बारेमें कोअी न कोअी दंतकथा तो होती ही है। लेकिन अैसी स्थिति नहीं है कि मैं अिन सब बातोंका वर्णन करनेमें समय दे सकूँ।

मैं देखता हूँ कि तुम्हारा वर्ग बढ़ रहा है। काकासाहबकी बात मुझे तो पसन्द आअी। सच्ची सेवा करनेवाली बहनें आश्रममें तैयार नहीं होंगी, तो कहाँ होंगी? अिसका जवाब तुम्हींको देना है। हमारे पास अिस कामके लिअे न आवश्यक स्वास्थ्य है, न शक्ति है, न अक्षरज्ञान है। परन्तु हममें शुद्ध भक्ति हो, तो अुसके जरिये यह सब आ जाता है भक्तिका अर्थ है श्रद्धा, अीश्वरके प्रति और अपने प्रति। यह श्रद्धा हमसे सारे त्याग कराती है। त्यागके लिअे त्याग करना मुश्किल होता है, परन्तु सेवाके निमित्त त्याग आसान हो जाता है। कोअी माता जान-बूझकर गीलेमें नहीं सोती, मगर अपने बच्चेको सूखेमें सुलानेके लिअे खुद खुश होकर गीलेमें सो जायगी।

मैं देख रहा हूँ कि अिस वर्ष लम्बे समय तक मैं आश्रममें नहीं रह सकूँगा। अिसका मुझे दुःख होता है, मगर हमें तो

दुःखमें ही सुख मानना रहा। खादीके कामके लिअे मुझे भ्रमण करना ही पड़ेगा। लाखोंकी भीड़को खादीका मंत्र अिस तरह घूमकर ही दिया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

९

सदाकत आश्रम, पटना
३१-१-'२७

प्यारी बहनो,

फिर सोमवार आ खड़ा हुआ। अिस बार अभी तक तुम्हारा पत्र मुझे नहीं मिला है। आज हम पटनामें हैं। यहाँ अेकान्त है। अिस जगह पर राजेन्द्रबाबूका प्यारा विद्यापीठ है। स्थान ठेठ गंगा किनारे खेतोंमें है। आसपास दूसरे मकान नहीं हैं। दृश्य अच्छा कहा जा सकता है। विद्यापीठका वार्षिकोत्सव होनेके कारण विद्यार्थी और शिक्षक हर स्थानसे आये हैं। अिसलिअे आश्रमके तमाम मकान भर गये हैं।

तुम्हारे लिअे और आश्रमके लिअे कुछ काम बढ़ा रहा हूँ। यहाँके कार्यकर्ताओंकी स्त्रियाँ हमारी स्त्रियोंसे ज्यादा लाचार हैं। अिनमें से कुछ थोड़े वक्तके लिअे वहाँ आना चाहती हैं। अुन्हें मैं रोकना नहीं चाहता, बल्कि अुल्टे प्रोत्साहन दे रहा हूँ। अगर अिनमें से कुछ बहनें आयें, तो मैं मानता हूँ कि तुम अुनका स्वागत करोगी और सारा बोझ अुठा लोगी। अिन्हें वहाँ भेजनेका अुद्देश्य यह है कि अिनमें थोड़ी जान आ जाय, कातना-पींजना सीख लें। और अुसके बाद मैं चाहता हूँ कि ये आकर यहाँकी बहनोंमें काम करें।

अिस मामलेमें अगर तुम्हें किसीको कुछ कहना हो, तो ज़रूर कहना। मुझसे जल्दबाजी हो रही हो, तो मुझे रोकना। दु:खीको शर्म नहीं होती। मुझे तुम दु:खी समझना। मुझसे अिन बहनोंकी विवशताका दु:ख सहा नहीं जाता। वहाँ हम भी कुछ कम असहाय हैं, सो तो नहीं। मगर यहाँ ये अुससे भी ज्यादा हैं!

बापूके आशीर्वाद

१०

अकोला,
७–२–'२७

बहनो,

आज तो मैं आश्रमके कुटुम्बीजनोंके बीच मौन रख रहा हूँ। किशोरलालभाअी, गोमतीबहन, नाथजी, तुलसीमेहर और तारा तो आश्रमके ही माने जायँगे न? और नानाभाअी, अुनकी धर्मपत्नी और सुशीलाको आश्रमसे बाहरके कौन समझेगा? अिसलिअे अिस सप्ताह मुझसे दूसरे समाचारोंकी आशा रखनेके बजाय अिन्हीं कुटुम्बीजनोंकी खबरकी अुम्मीद रखो।

गोमतीबहनको मामूली बुखार अभी तक आता है, बिस्तरमें पड़ी हैं। परन्तु प्रफुल्लित हैं। चेहरेसे कोअी नहीं कह सकता कि अभी बड़ी बीमारी भोग रही थीं। अिस प्रसन्नताका कारण अुनकी श्रद्धा है। अैसी श्रद्धा हम सबमें पैदा हो!

किशोरलालभाअीकी गाड़ी तो वैसी ही चल रही है। यह नहीं कहा जा सकता कि कुछ ज्यादा शक्ति प्राप्त की है।

कल रातको तो अुन्हें बुखार भी आ गया था। जाड़ा भी चढ़ा था। बुखार थोड़ी देर आकर अुतर गया था।

जहाँ स्नेहीजनोंमें बीमारी हो वहाँ नाथजी न हों, यह तो हो ही कैसे सकता है?

नानाभाअी तो सदाके रोगी हैं। दमेकी बीमारीमें घिरे हुअे हैं। अितने पर भी अुनके मुख पर तो शान्ति ही है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

११

धूलिया,
१४-२-'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र चि० मणिबहन (पटेल) का लिखा हुआ मिल गया।

जो बहनें वहाँ आना चाहती हैं, अुनके बारेमें तुमने लिखा सो ठीक है। मेरी अभी यह अपेक्षा नहीं हो सकती कि तुम अुन्हें अपने साथ रखो। मैं तो अितना ही चाहता हूँ कि तुम अुनके साथ घुलो-मिलो, वे बीमार हो जायं, तो अुनकी सार-सँभाल करो, अुनसे दूर ही दूर न रहो, प्रसंग आने पर अुन्हें अपने पास बुलाओ।

चि० ताराकी बड़ी बहन चि० सुशीलाकी सगाअी चि० मणिलालके साथ की है, यह तुम्हें मालूम हुआ होगा। शादी ६ मार्चको अकोलामें होगी, अिसलिअे मैं तो आश्रममें ८ ता० की शामको या ९ को सुबह पहुँचूँगा। १४ ता० को सोमवार

है। तब तक रहकर वापस घूमने निकल पड़ूँगा। अिस प्रकार मुझे आश्रममें थोड़े ही दिन मिलेंगे।

अिस प्रकार अनिवार्य परिस्थितियोंमें मैं विवाहके काममें पड़ता हूँ, फिर भी, और जैसे-जैसे अुसमें पड़ रहा हूँ, वैसे-वैसे स्त्री-पुरुष दोनोंके लिअे ब्रह्मचर्यकी आवश्यकता अधिकाधिक देखता जा रहा हूँ। चि० मणिलालने केवल अिन्द्रिय-निग्रहके लिअे ३२ वर्ष तक शादी नहीं की। अब शादी करनेकी अिच्छा बताअी, अिसलिअे मैं अुचित सम्बन्ध खोजनेमें लगा। अेक भक्त कुटुम्बके साथ सम्बन्ध हुआ है, अिसलिअे अिस सम्बन्धसे भलेकी ही आशा करने लगा हूँ।

विवाहकी बात करनेमें हम संकोच न करें। मगर विवाहित या कुँआरे अुस बातसे विकारवश भी न होवें। जो अपने विकारोंको न रोक सके, वह जरूर शादी कर ले। जो विकार रोक सके, वह रोके और अिसी जन्ममें मुक्ति प्राप्त करनेकी कोशिश करे।

बापूके आशीर्वाद

१२

सोलापुर,
२१-२-'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिल गया।

मैं देखता हूँ कि तुम्हारा पींजनेका काम ठीक चल रहा है। अिसी तरह नियमित चलती रहोगी तो थोड़े समयमें बहुत प्रगति कर लोगी। नियमित किये गये कामका असर नियमित

किये गये भोजन-जैसा होता है। वह आत्माका पोषण करता है। अेक ही वार ज्यादा ली हुअी खुराक जैसे शरीरको बिगाड़ती है, वैसे अेक ही वारमें अधिक किये हुअे कामसे आत्माको तकलीफ होती है।

आज हम सोलापुरमें हैं। यह वड़ा शहर है। यहाँ पाँच मिलें हैं। अुनमें सबसे बड़ी मुरारजी गोकुलदासकी है। अुनके पोते शान्तिकुमार अुम्रमें तो अभी नवयुवक हैं, परन्तु अुनकी आत्मा महान है। वे खुद खादीप्रेमी हैं और खादी ही पहनते हैं। यह कोअी अुनका सबसे बड़ा गुण है, यह नहीं कहना चाहता। अुनमें दया है, अुदारता है, नम्रता है, अीश्वर-परायणता है, सत्य है। जैसा नाम है वैसे ही गुण रखते हैं। शान्तिकी मूर्ति हैं। करोड़पतिके यहाँ अैसा रत्न है, यह देख कर मुझे बहुत आनंद होता है। अुनकी धर्मपत्नीके साथ तो मेरा परिचय थोड़ा ही था। कल भोजन करते समय अुन्हें पास बिठलाकर पेटभर कर बातें कीं और अपने पतिकी तरह सेवाकार्यमें लग जानेको कहा। तुम सबका अुनके सामने अुदाहरण पेश किया, क्या यह मैंने ठीक किया? अैसा अुदाहरण देनेमें कुछ अभिमान हो तो? तुम सब सेवाभावसे भरी हो, यह कहा जा सकता है या नहीं, यह तो तुम जानो। मेरे मुँहसे तो निकल गया। अुसे सच्चा साबित करना तुम्हारे हाथमें है।

सोमवार

माघ वदी ५, '८२ — बापूके आशीर्वाद

१३

मालवण,
२८–२–'२७

बहनो,

अब मुझे यह अेक ही पत्र लिखना बाकी है। अगले सोमवारको तो मैं तुम्हारे पास आनेके लिअे रवाना हो गया होअूँगा।

सफरमें स्त्रियोंकी सभाअें तो होती ही हैं। अिसलिअे नित-नये अनुभव मिलते ही रहते हैं। यह देखता हूँ कि स्वराज्यकी कुँजी स्त्रियोंके पास है, परन्तु अुन्हें जाग्रत कौन करे? असंख्य स्त्रियाँ निरुद्यमी हैं, अुन्हें कौन अुद्यमी बनाये? माताअें बचपनसे ही अपने बालकोंको बिगाड़ती हैं, अुन्हें कौन रोके? बालकोंको गहनों और अनेक प्रकारके कपड़ोंसे लाद देती हैं; छोटी-छोटी बालिकाओंको व्याह देती हैं; बालिकाअें बूढ़ोंको व्याह दी जाती हैं। स्त्रियोंके गहने देख कर तो मैं हैरान हो जाता हूँ। अुन्हें कौन समझाये कि अिसमें सौन्दर्य नहीं, सौन्दर्य तो हृदयमें है? अैसी तो कअी बातें मैं लिख सकता हूँ मगर अुसका अुपाय क्या? अुपाय तो स्त्रियोंमें से कोअी द्रौपदी-जैसी अुग्र तेजवाली निकल पड़े तभी हो। अैसी शक्ति प्राप्त करनेकी कोशिश करना तुम्हारा काम है। अुसका निश्चय करना और बादमें धीरज रखना। जल्दी करनेसे काम नहीं होता।

माघ वदी ११, '८३ बापूके आशीर्वाद

१४

बहनो, १४-३-'२७

अिस बारकी जुदाअी ज्यादा भारी पड़ी, क्योंकि मुझे बहुतसी बातें करने और विचारोंका लेन-देन करनेका लोभ था। मगर हम स्वतंत्र कहाँ हैं? अीश्वरके हाथोंमें, वह जैसे नचाता है, नाचते हैं। स्वेच्छासे (अपनी अिच्छा रखकर) नाचें तो दुःख पायें। अिसलिअे यद्यपि मेरा लोभ तो पूरा नहीं हुआ, मगर मैं निश्चिन्त रहता हूँ। अुसे मिलाना होगा तब हमें मिलायेगा। तब तक हम पत्रों द्वारा बातें करते रहेंगे।

तुमसे अभी अितनी आशा रखता हूँ, अुसे पूरी करना:

१. तुम सब ओटने, पींजने और कातनेका काम बाक़ायदा और अच्छी तरह सीख लो। वह अितना कि औरोंको भी सिखा सको।

२. सम्मिलित भोजनालयकी देखरेख रखकर अुसे आदर्श भोजनालय बनाओ। अिस काममें तुममें से अेक भी सदाके लिअे लग जाय, यह मैं अभी नहीं चाहता। मगर यह काम तुम्हारी जन्मसिद्ध कुशलताका होनेके कारण सुघड़पन और भोजनके बढ़ियापनका बोझ तुम पर डालता हूँ।

ये दो बोझ तो ठीक हैं न?

मीराबाअी आज रेवाड़ी आश्रम जायगी, जहाँ जमनालालजीकी रुकी है।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

निपानी,
२८–३–'२७

प्यारी बहनो,

मेरी गाड़ी अटक गअी,* अिससे घबराना मत ! आज तो अटकी ही है, कुछ वर्षों बाद जब टूट जायगी तब भी क्या ? गीताजी तो पुकार-पुकार कर कहती हैं और हम रोज अनुभव करते हैं कि जन्म लेनेवाले मरते ही हैं और मरे हुअे जन्म लेते हैं। सब अपना कर्ज़ थोड़ा बहुत अदा करके चलते बनते हैं।

मेरा कहना तो सही ही है। विकारके बिना रोग नहीं। निर्विकारीको भी जाना तो है ही। मगर वह तो पके फलकी तरह अपने आप गिर पड़ता है। मैं अिस तरह गिर जानेकी अिच्छा और आशा रखता हूँ। वह अब भी है, परन्तु अब तो कौन जाने ? विकार हैं और वे अपना काम करते ही रहते हैं। निर्विकार स्थिति तो जब अनुभवमें आये तब सच्ची।

तुम अपने कर्तव्यमें रची-पची रहना। जवानी विकारोंको जीतनेके लिअे मिली है। अुसे हम व्यर्थ ही न जाने दें। पवित्रताकी रक्षा करना। चरखा न छोड़ना। हो सके तो आश्रमको भी न छोड़ना।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

* पहली बार ब्लड-प्रेशरका दौरा हुआ।

१६

११–४–'२७

बहनो,

तुमने तो मुझे मुक्ति भेजी है। मगर मुझसे बिना कारण अुसका अुपयोग कैसे किया जा सकता है? अब मेरी तबीयत अैसी नहीं है कि मैं तुम्हें पत्र ही न लिख सकूँ। कल तो काफ़ी घूमा भी था। तुम्हें पत्र लिखना मेरे लिअे कोअी बड़े श्रमकी बात नहीं है।

तुममेंसे किसीने सम्मिलित भोजनालयमें बारी-बारीसे जानेका क्या निश्चय किया? लक्ष्मी बहनने* तो जानेकी अिच्छा दिखाअी ही थी। अगर अभी तक कोअी न गअी हो, तो वे तो चली ही जायँ। अगर अिस भोजनालयमें कुछ भी कमी होगी, तो अुसका दोष तो सभी बहनोंके सिर होगा न? पुरुष तुम्हारे बराबर सीख लें, तो बादमें भले ही तुम मुक्त हो जाना। मगर तब तक तो हरगिज़ नहीं।

अिसके साथ मीराबाअीका पत्र है, सो चि० मणिलालको देना। वह पढ़ने लायक होनेसे भेजा है।

बापूके आशीर्वाद

---

* संगीतशास्त्री खरेकी पत्नी। अिन्हें गांधर्व महाविद्यालयमें सम्मिलित भोजनालय चलानेका अनुभव था।

१८-४-'२७

बहनो,

गंगाबहनकी ग़ैरहाज़िरीमें यह पत्र तुम्हारे मंत्रीको भेज रहा हूँ। गंगाबहनकी ग़ैरहाजिरीमें तुम्हें कामचलाऊ प्रमुख नियुक्त करनेकी ज़रूरत है। तुम्हारा काम अब तो अितना पक्का माना जाना चाहिये कि जैसे दूसरी संस्थाअें अपने आप सुव्यवस्थित रूपसे चलती हैं, वैसे ही तुम्हारा काम भी चले। अैसा होनेके लिअे कोअी नेत्री तो होनी ही चाहिये। नेत्रीको अधिकार तो थोड़े होते हैं, पर अुसकी जिम्मेदारी बहुत होती है। वह निरंतर अपनी संस्थाका हित सोचे और सदा अुसकी सेवाशक्ति बढ़ाये।

मालूम होता है तुमने राष्ट्रीय सप्ताह बहुत अच्छे ढंगसे मनाया। पाखाने साफ करनेकी जिम्मेदारी तुमने ली, यह बहुत अच्छा हुआ। अिस प्रकार शक्तिके अनुसार जिम्मेदारी लेती रहा करो।

जो बहनें आश्रमसे बाहर काम करने जायँ, अुनके साथ सम्बन्ध कायम रखना। राजीबहन और चम्पावतीबहनके साथ सम्बन्ध रखा होगा। राजीबहनका काम कैसा चल रहा है, यदि जानती हो, तो मुझे लिखना।

मेरी तन्दुरुस्ती सुधरती हुअी मालूम होती है। अिसके लिअे हमेशा ही तो मैं अेक सरल प्रयोग करता रहा हूँ। वह सफल हो जायगा, तो अुसके अुपयोग बहुत-से हैं। मगर अभी अुसका वर्णन करके तुम्हारा समय लेना नहीं चाहता। शायद अगले सप्ताह अुसका हाल देनेकी मेरी हिम्मत हो जाय।

मौनवार
चैत्र बदी २

बापूके आशीर्वाद

१८

२५-४-'२७

बहनो,

तुमने मुझे पत्र लिखनेसे छुट्टी दे दी, मो अैसा लगता है कि तुम लिखना नहीं चाहतीं ! या जैसे राजाके बिना अंधेर चलता है, वैसे तुमने अभी तक नअी सभानेत्रीका चुनाव नहीं किया, अिसलिअे तुम्हारी संस्थामें भी अंधेर चल रहा है क्या ?

कुछ भी हो, मगर मैं खाअूँ-पीअूँ और तुम्हें याद न करूँ, यह तो हो ही कैसे सकता है? तुमने किसीने भी गंगादेवीके बारेमें कुछ भी समाचार नहीं दिये, अिससे मैं अनुमान करता हूँ कि अब वे बिल्कुल स्वस्थ हो गअी हैं। जो कोअी भी बहन बीमार पड़े, अुसकी खबर तो तुम्हें मुझे देनी ही चाहिये।

आश्रममें जैसे स्त्रियाँ हैं वैसे पुरुष भी हैं, मगर मानो कि किसी दिन पुरुष न हों और चोर वगैरा आ जायँ, तब तुम सब क्या करो, अिसका विचार तुमने कभी किया है? न किया हो, तो करके मुझे लिखना कि तुम क्या करोगी? यह न मानना कि अैसे मौके कभी कहीं आयेंगे ही नहीं। हमारे छोटे गाँवोंमें अक्सर आ जाया करते हैं। दक्षिण अफ्रीकामें बहुत बार आते हैं।

मौनवार
चैत्र वदी ९

बापूके आशीर्वाद

२-५-'२७

बहनो,

मेरे पास अब हाथ-कागज बहुत आ गया है, अिसलिअे तुमने चाहा है अुससे यह क़द जरा छोटा होने पर भी तुम हाथ-कागज ही पसन्द करोगी, अैसा मानता हूँ। धर्म तो वस्त्रोंके बारेमें ही है। क्योंकि अुनसे भूखे मरनेवालोंको रोटी मिलती है। अैसा काग़ज बनानेवाले थोड़े ही हैं। मगर अिस देशमें जो चीज अच्छी बनती हो, वह मिले वहाँ तक हम अुसीको लें और अिस्तेमाल करें।

तुम डाकखर्चके लिअे पैसे जमा कर लेती हो, यह बहुत अच्छा है। वह रकम छोटी-सी भले हो, फिर भी बाक़ायदा हिसाब रखकर बहीखाता रखना तुममें से जो सीख सके, वह सीख ले।

तुम्हारी दूसरी प्रगति भी अच्छी मालूम होती है। पिछले सप्ताह पहरेके बारेमें मैंने जो सवाल पूछा है, अुसे टाल नहीं देना है। स्त्रियोंके लिअे 'अबला,' 'भीरु' वगैरा जो विशेषण काममें लिये जाते हैं, मैं चाहता हूँ तुम अुन्हें ग़लत साबित करो। वे सभी स्त्रियों पर लागू नहीं होते। रानीपरजकी स्त्रियोंको कौन डरपोक कहेगा? वे कहाँ अबला हैं? पश्चिमकी स्त्रियाँ तो आज-कल सब बातोंमें टाँग अड़ा रही हैं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि वह सब अनुकरण करने लायक ही है, मगर वे पुरुषोंकी बहुतसी धारणाओंको झूठी सिद्ध कर रही हैं। अफ्रीकाकी हब्शी स्त्रियाँ जरा भी भीरु नहीं हैं। अुनकी भाषामें स्त्रियोंके लिअे

शायद अैसा विशेषण ही नहीं है। ब्रह्मदेशमें स्त्रियाँ ही सारा कारबार करती हैं।

मगर मेरा सवाल तुम्हें घबरा देनेके लिअे नहीं, केवल शान्तिसे विचार करनेके लिअे है। आश्रममें हम सब आत्माका अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं। आत्मा न पुरुष है, न स्त्री, न बालक है, न वृद्ध। ये सारे गुण तो शरीरके हैं, अैसा शास्त्र और अनुभव दोनों कहते हैं। तुममें और मुझमें अेक ही आत्मा है। तब मैं तुम्हारी रक्षा किस तरह करूँ? अगर मुझे वह (आत्म-रक्षाकी) कला आ गअी है, तो तुम्हें सिखा देनी है।

आज तो अितना ही विचार करना। मुझे जोश आया तो फिर अिस विचारको आगे बढ़ाअूँगा।

जिन बहनोंको मुझे लिखना हो, वे शौकसे लिखें। मैंने सुना है कि बालजीभाअीने सबको डरा दिया है। डरना मत।

मौनवार
वैशाख सुदी २, '८३ बापूके आशीर्वाद

२०

नंदीदुर्ग,
९-५-'२७

बहनो,

तुम्हारा चोरोंके बारेमें विचार ठीक लगता है। अभी तो अितना ही काफी है कि तुम यह भूलनेकी कोशिश करो कि तुम अबला हो। अिस बारेमें मेरे लिखे हुअेका कोअी यह अर्थ तो भूलसे भी न करे कि पुरुषोंको अपना (स्त्री-) रक्षाका धर्म भूल जाना है। स्त्री अपना अधिकार प्राप्त करनेकी कोशिश करे,

मानना कि अुसमें कठिनाअी है। वहीखाता लिखना और समझना बहुत आसान है। अुसमें मुश्किल तो जोड़की है। अंक ठीक न आते हों और जोड़ लगानेकी आदत न हो, तो ज़रूर परेशानी होती है। मगर जोड़ लगाना केवल महावरेसे ही आता है। सादा जोड़, बाकी, गुणाकार और भागाकार जिसे न आते हों वह सीख ले। अिस काममें मेहनत है, बाकी तो आसान है। वह करनेकी जिसकी अिच्छा हो अुसे तो अुसमें मजा भी आता है।

मौनवार　　　　　　　　　　　　　　　　　　बापूके आशीर्वाद
वैशाख वदी ७

२३

नंदीदुर्ग,
३०-५-'२७

बहनो,

अिस सप्ताह तुम्हारा पत्र नहीं मिला।

मीरा बहनके पत्र तुम्हारे पास कभी आते हैं? अुसके पत्रसे देखता हूँ कि वह स्त्रियों और पुरुषों दोनोंमें खूब काम कर रही है। अुसके पत्रमें अेक ध्वनि है, सो तुम्हें बता दूँ। वह लिखती है कि जो बहनें अुससे मिलती हैं, वे सब बहुत भली पाअी जाती हैं, मगर अुनका अज्ञान अुसे भयानक लगता है। वे बहनें छोटीसे छोटी बात भी नहीं जानतीं। चरखेकी बात कहती है, तो वे आश्चर्य प्रगट करती हैं। और गरीबोंकी खातिर चरखा चलानेकी बात तो वे समझ भी नहीं पातीं। धर्म यानी

देव-दर्शन (अितना ही समझती हैं) । सेवा क्या होती है, अिसका अुन्हें जरा भी पता नहीं । अिस चित्रमें कुछ तो न समझनेके कारण होगा । मगर स्त्रियोंके साधारण अज्ञानकी बात तो हम जानते ही हैं । हम यह भी जानते हैं कि अिसका कारण मुख्यत: पुरुष ही हैं । अिस रोगको मिटानेका अुपाय तो यही रहा न कि स्त्रियाँ खुद ही तैयार हों? यह जिम्मेदारी तुम्हारे सिर पर है । तुम सब बहनें अिस कामके लिअे यथाशक्ति तैयार हो जाओ ।

वैशाख वदी १३, '८३ बापूके आशीर्वाद

२४

बंगलोर,
६-६-'२७.

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिल गया ।

आज मैं बंगलोर पहुँचा हूँ । कोअी तकलीफ नहीं हुअी । डॉक्टरोंने देख लिया और वे कहते हैं कि महीने भरमें मैं काफी अच्छा हो जाअूँगा ।

रमणीकलालभाअीकी सूचना ठीक है । पुस्तकें तो बहुतेरी पढ़ने लायक हैं । वे चाहे जो पसंद करें । अन्तमें दारमदार तो अिस बात पर रहता है कि पढ़नेवाला अुसमें कितना रस संचार करता है । जो किताब पढ़ी जाय अुसमें से कोअी भाग समझमें न आये, तो अुसे कोअी बहन छोड़ न दे, मगर बार-बार पूछ कर समझ ले । अेक भी चीज अिस तरह समझनेसे और बहुतसी चीजें समझमें आ जाती हैं । मणिबहन (पटेल) की

बनाअी हुअी चूड़ी* मुझे बहुत प्रिय लगी है। मैंने सुझाया है कि चूड़ी खादीकी नहीं, बल्कि सूतकी होनी चाहिये। राखी भी चूड़ी ही है और वह सूतकी होती है। सूतकी चूड़ीमें जितनी कला और जितने रंग भरने हों, अुतने भरे जा सकते हैं। और मुझे यकीन है कि अपने पहननेकी चीजमें अपने हाथों की गअी कलासे जो निर्दोष आनंद मिलता है, वह लाखोंकी रत्न-जटित चूड़ियोंमें नहीं होता।

हीरा बहनसे कहना कि वे पढ़ना ही चाहें, तो अुन्हें नियमसे जेकीबहनके पास जाना चाहिये, जब मनमें आवे तब नहीं।

जेठ सुदी ६ बापूके आशीर्वाद

२५

१३-६-'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिल गया।

सब बहनें बारी-बारीसे श्लोक बुलवाती हैं, यह बात मुझे पहले लिखी गअी थी, अुसके लिअे तुम्हें बधाअी देना रह ही गया था। श्लोकोंका अुच्चारण शुद्ध होता होगा। वैसे, भगवानका नाम शुद्ध लिया जाय या अशुद्ध, अिसका हिसाब अीश्वरके बहीखातेमें नहीं होता। वहाँ तो अन्तःकरणकी भाषा ही लिखी जाती है। अगर अन्तःकरण शुद्ध हो, तो तुतली बोलीके भी सौके सौ ही दाम चढ़ते हैं। अिस बारेमें लिखते हुअे हमें यहाँ जो मीठे अनुभव हो रहे हैं, अुनका हाल लिख दूँ।

---

* खादीके कपड़ेकी।

मैसूर कर्नाटकका भाग है, जहाँसे हमें काकासाहब मिले हैं। यहाँकी बहनें संगीत और संस्कृत दोनों अच्छे जानती हैं। अुनका संगीत नंदीमें सुना। परसों यहाँ दो बहनोंसे संगीत और संस्कृत दोनों सुननेको मिले। दो महिलाओंने रामायणका सार संस्कृतमें शुद्ध अुच्चारणसे गाया। मेरे खयालसे अुसके सौसे ज्यादा श्लोक थे। अुसमें मैं अेक भी भूल नहीं देख सका। अुनमें से अेककी पढ़ाअी अभी जारी है। वह अर्थ भी जानती है। मगर यह सब मैं तुम्हें किस लिअे लिखूँ? तुम अिस वक्त वहाँ जो काम कर रही हो, अुसका मूल्य मेरे लिअे संस्कृतके अभ्याससे ज्यादा है। तुम निर्भय बनो, पवित्र रहो, सेविका बनो और अेकत्र रहकर काम करने लगो, तो यह शिक्षा दूसरी सब शिक्षाओंसे बढ़ कर होगी। अुसमें संस्कृतादि मिल जाय, तब तो वह शहदसे भी मीठी हो जायगी।

मेरे पत्र या अुनकी नकल गंगाबहन आदिको पढ़नेके लिअे मिलती है न?

जेठ सुदी १४ बापूके आशीर्वाद

२६

बंगलोर,
२०-६-'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिला।

सूतकी चूड़ीकी मैंने तारीफ की, तो अुसका यह अर्थ नहीं कि सब पहनने लगो। अैसे परिवर्तन भीतरसे हों, तभी

टिकते हैं; और जब तक अन्तर तैयार न हो, तब तक मैं चाहता हूँ कि शर्मके मारे कोअी कुछ न करे।

आजकल मैं रोज अेक दुग्धालय देखने जाता हूँ। अुसे देखकर कअी तरहके विचार हुआ करते हैं। परन्तु अुनमें से अेक तो तुमको दे दूँ। जैसे तुमने भण्डारका काम लिया है, वैसे ही दुग्धालयका काम भी ले सकती हो। केवल हमारे अज्ञान और आलसके कारण रोज हज़ारों ढोरोंका नाश होता रहता है। मैं यह देख रहा हूँ कि यह काम भी अैसा है कि जितनी आसानीसे पुरुष कर सकते हैं, अुतनी ही आसानीसे स्त्रियाँ भी कर सकती हैं। काठियावाड़की ग्वालिनें और अुनके हथिनी-जैसे शरीर भी मेरी नजरके सामने खड़े होते हैं। हम किसान, जुलाहे और भंगी तो हैं ही; ग्वाले बने बग़ैर भी काम न चलेगा।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

जेठ बदी ६, '८३

२७

रविवारकी रात, २६–६–'२७

प्यारी बहनो,

तुम्हारा पत्र और हाज़िरी-पत्रक मिल गये। हाज़िरी-पत्रक मुझे भेजती ही रहना। अुससे मुझे बहुतसी बातें जाननेको मिलती हैं।

मणिबहनसे काफी समाचार पा सका हूँ। भंडारका काम तो निर्विघ्न पूरा करना। आश्रमको हम कुटुम्ब मानते हैं; और अुसे कुटुम्ब मानकर सारे देशको और अुसमें से तमाम दुनियाको परिवार समझनेका सबक़ सीखना चाहते हैं। अिसलिअे जैसे

कुटुम्बकी जिम्मेदारी मिलजुल कर किसी तरह निभा लेते हैं, अुसी तरह भंडारके बारेमें करना।

गो-सेवाकी या मेरी और किसी बातसे तुम्हें डरना नहीं चाहिये। मैं तो जो मुझे सूझता है, सो लिखता रहता हूँ, ताकि अुसमें से जितना तुम्हें रुचे और जितना तुमसे सहा जाय अुतना तुम प्रसंगके आते ही ग्रहण कर लो।

वालजीभाअीकी माताकी*-सी मौत कोअी पुण्यशाली ही पायेगा। धन्य वह पुत्र, धन्य वह माता और धन्य वह आश्रम जिसमें अैसी मृत्यु हुअी। अिस समय व्रजलालभाअी×की पवित्र मृत्यु भी याद आ रही है।

जेठ वदी १२ बापूके आशीर्वाद

२८

बंगलोर,
४-७-'२७

बहनो,

कल तुमको याद किया। प्रदर्शनी वगैराके काम पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंके अधिक हैं। मीठुबहनने जैसा अपना विभाग सजाया है, वैसा और लोग नहीं सजा सके। और यही होना भी चाहिये। वे तो चौबीसों घंटे यही सोचा करती हैं कि खादीको कैसे सजाया जाय। थोड़ीसी लड़कियोंसे आज तो ४०० लड़कियाँ

---

* वालजीभाअीकी माताजीने आश्रमसे शहर जाते हुअे नदी अुतर कर ठीक श्मशानमें ही वालजीभाअीकी गोदमें प्राणत्याग किया था।

× व्रजलालभाअी कुअेंमें से घड़ा निकालते समय डूब गये थे।

मेरा अनुवाद भी दोषरहित नहीं है, फिर भी हम किसीको मारनेकी दृष्टि रखे बिना भी निशाना ज़रूर तार्कें।

मुझे जो निशाने लगाने हैं, अुनमें से अेक तो तुम्हें पत्र लिखना; और दूसरा, चि० वसुमतिके पत्रका जवाब भी अुसीमें दे देना। वह पूछती है: बहनोंको जैसे रोटी बनाना आना चाहिये, वैसे ही गीताका अुच्चारण भी आना चाहिये अैसा आप कहते हैं। सो कैसे हो सकता है? अिसमें तो बहुत समय जा सकता है।

समय तो जायगा ही, परन्तु दृढ़ अिच्छासे क्या नहीं हो सकता? अधिक नहीं तो थोड़ा वक्त भी दिया जाय, तो काम हो सकता है। बड़ी अुम्रमें रोटी बनानेमें भी मुसीबत होती है। फिर भी वह मेहनतसे हो सकती है। बहनोंको अुच्चारण नहीं आता, अुसमें दोष अुनका नहीं, माँ-बापका और विवाहिता हों तो ससुरालवालोंका है। मगर औरोंका दोष देख कर हम क्यों रोयें? दोष कैसे दूर किया जाय, यह जान लें। आश्रममें हम अपनी ही बुराअी देखते हैं और फिर अुसे दूर करनेकी कोशिश करते हैं। अिस कामके पीछे पागल भी नहीं हुआ जा सकता। आश्रमके दूसरे छोटे-मोटे ज़रूरी काम करते हुअे जितना हो सके अुतना अुच्चारणके लिअे करें।

मेरे लिखनेका मुद्दा तो यही था कि कर्नाटकमें बहुतसी बहनें गुजरातके पुरुषोंसे भी शुद्ध अुच्चारण करती हैं।

मौनवार　　　　　　　　　　　　　　　　बापूके आशीर्वाद

आषाढ़ वदी ५, '८२

३१

बंगलोर,
२५-७-'२७

बहनो,

आजका पत्र तुम्हारी हाज़िरीके बारेमें लिखना चाहता हूँ। हाज़िरीमें अनियमितता बहुत पाता हूँ। आश्रममें बहनोंका सामाजिक जीवन और अुनकी सामाजिक सेवा अिस स्त्री-वर्गसे शुरू होती है। अिसलिअे जैसे हम बीमारी वगैराके कारण ही रोज खानेका नियम तोड़ते हैं, वैसे ही अिस वर्गमें हाज़िरी देनेका नियम भी अैसे किसी बड़े कारणसे विवश होकर ही तोड़ सकते हैं। बहनोंने अिस वर्गमें नियमित रूपसे आनेका व्रत लिया है। वे अिस व्रतको कैसे तोड़ सकती हैं? शरीरके नियमोंका पालन करके शरीरकी रक्षा की जाती है। संस्थाके नियमोंका पालन करके संस्थाको और समाजके नियमोंका पालन करके समाजको कायम रखा जाता है। अिसलिअे क्या तुम मुझे यह आश्वासन नहीं दे सकतीं कि संशयरहित कारणके बिना कोअी भी बहन गैरहाजिर नहीं रहेगी?

मौनवार
आषाढ़ वदी १२

बापूके आशीर्वाद

३२

१-८-'२७

बहनो,

अिस बार डाक अनियमित हो गअी है। सोमवारकी ठेठ कल पहुँची। अितनी बरसातसे* और बाढ़से कोअी घबराअी नहीं होंगी। अैसे मौके यह परीक्षा लेनेके लिअे आते हैं कि हमने जिन्दगीका सबक सीखा है या नहीं। हमारी कोशिशोंके बावजूद आश्रम चला जाय तो क्या और रह जाय तो क्या? और जो बात आश्रमकी, वही अहमदाबादकी। आश्चर्य तो यह है कि अितनी बाढ़ आने पर भी अितना बच गया। मगर हमें क्या पता कि बचनेमें लाभ है या जानेमें? बचा सो गया और गया सो बचा हो तो किसे मालूम? मगर बचना सबको अच्छा लगता है, अिसलिअे बच जाते हैं तो ओीश्वरका अुपकार मानते हैं। सच पूछा जाय तो हर हालतमें और हर समय अुसका अहसान ही मानना चाहिये। अिसीका नाम समत्व है।

मगर कांतिलाल गये अुसका क्या? यह दुःख कैसे सहा जाय? अुसे भी सहन करना चाहिये। बुद्धि कर्मानुसारिणी होती है। कांतिलालने अगर आत्महत्या ही की हो, तो अुसका कारण मैं कुछ-कुछ समझता हूँ। मगर हमें कारणकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहिये। हम तो यह निश्चय करें कि आत्महत्या हरगिज न करेंगे।

---

* सन् १९२७ में गुजरातमें भारी बरसातसे जो जलप्रलय हुआ था अुसका ज़िक्र है।

आत्महत्या करनेवाले संसारकी झूठी चिंता करनेवाले होते हैं, या दुनियासे अपने दोष छिपानेवाले होते हैं। हम जो नहीं हैं, वह दीखनेका ढोंग कभी न करें; जो न हो सके अुसे करनेके मनोरथ न करें।

श्रावण सुदी ४, '८३ बापूके आशीर्वाद

३३

८-८-'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिल गया। आज हम बंगलोरसे दूर प्रदेशमें हैं। यहाँ ठंढ कम है, मगर हरियाली ज्यादा है। कुछ-कुछ अंबोली* जैसा लगता है।

मेरा कामकाज तो यहाँ चल रहा है, फिर भी मेरा जी आश्रमके आसपास और गुजरातमें भटक रहा है। यह कोअी गुण नहीं, बल्कि अवगुण है; क्योंकि मोह है। मैं आश्रममें होअूँ तो अधिक क्या करूँ? गुजरातको क्या मदद दूँ? मगर अुत्पाती जीव छलाँगें भरा ही करता है। अैसी कुटेवसे तुम सब बची रहना। मगर अैसी तटस्थता पैदा करनेके लिअे अेक शर्त है। जो अपने कर्तव्यके ही ध्यानमें रम जाता है, वह दूसरी वस्तुओंसे अुदासीन हो जाता है। पत्थर तटस्थ है, परन्तु अुसे हम जड़ मानते हैं। अुसके मुकाबलेमें हम चेतन हैं। और अितने पर भी यदि प्राप्त हुअे कार्यमें ही रत रहें और दूसरी किसी वस्तुका

* बेलगाँव-सावंतवाड़ीके बीचका हवा खानेका स्थान।

विचार तक न करें, तो हमारा जीना सफल माना जा सकता है। अैसी ध्यानावस्था अेकाअेक नहीं आती।

मेरे दोषोंका तुम कभी स्वप्नमें भी अनुकरण न करो, अिसलिअे स्वाभाविक ही मैंने अपने अिस दोषका वर्णन तुम्हारे सामने कर दिया है।

आजकी भाषा जरा कठिन हो गअी है। जो शब्द या विचार समझमें न आये अुसे समझ लेना।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

३४

[शिमोगा]
१५–८–'२७

बहनो,

आज मुझे थोड़ेमें निपटा देना पड़ेगा। समय भी नहीं है और विषय भी नहीं है।

मणिबहनके लौटनेके बारेमें तुमने पूछा था, अुसका जवाब भूलता ही रहा हूँ। बहुत करके वह २० ता० के बाद तुरंत यहाँसे रवाना होगी और अेक-अेक दिन पूना तथा बंबअी ठहरेगी और भडौंचमें अुतर कर बादमें वहाँ पहुँचेगी।

आजकल आश्रममें हमारी काफी परीक्षा हो रही है। तुम सब वीरांगनाअें बनना और रहना। हमारी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। निरंतर रामको हृदयमें रखेंगे, तो हमारा बाल भी बाँका नहीं हो सकता।

काकासाहबकी तबीयत यहाँ अच्छी रहती है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

३५

२२–८–'२७

बहनों,

मैसूरका लंबेसे लंबा सफर पूरा करके कल यहाँ लौटे हैं। अिस सप्ताहके अंतमें, यानी मंगलवार ३० ता० को मैसूर बिलकुल छोड़ देना है, अिसलिअे सोमवारके बाद पहुँचनेवाले पत्र मद्रास भेजने होंगे। पता मैं अच्छी तरह नहीं जानता।

बहनें सीने वगैराका काम करके संकट-निवारण-कोषमें चंदा देंगी, यह बहुत अच्छी बात है। जो मज़दूरनियाँ आश्रममें काम करती हैं, अुन्हें भी अिस काममें शरीक करना। वे सीयें यह मैं नहीं कहता, लेकिन अिच्छा हो तो अेक दिनकी मज़दूरी अुसमें दें। अभी तो अितना ही काफी होगा कि अिस निमित्त से तुम अुनके संपर्कमें आओ। यदि अुनकी जरा भी अिच्छा न हो तो न दें। हमने आश्रममें काम करनेवाले मज़दूरोंके जीवनमें प्रवेश नहीं किया, यह बात अिस बार समझ लेंगे, तो आअिंदा यह संबंध अधिक बढ़ेगा। हमें गीताकी समदर्शिता अपनेमें पैदा करनी है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

२९-८-'२७

बहनो,

तुम्हारी ओरसे रमणीकलालभाओीका तैयार किया हुआ पत्र मिला।

मेरा मुद्दा ही समझमें नहीं आया। अुसमें कुछ तो अध्याहार ही था। पत्रोंमें तो अैसा ही होता है। अध्याहार पूरा कर लें, तो यह अर्थ निकलता है।

जब हम अेक सेवाकार्यमें लगे हों, तब दूसरेका विचार जब तक अनावश्यक हो, हम न करें। और करें तो मोह माना जायगा। मैं यहाँ बीमार आदमीसे जितनी हो सकती है अुतनी आवश्यक सेवा कर रहा हूँ। अैसे समय गुजरातके संकटके बारेमें काम करने या आश्रमके प्रश्नोंका जो हल मेरे वहाँ होने पर हो सकता है, वह हल करनेका विचार करना मोह है। तुम भी अुस स्थितिमें हो, तो तुम्हारे लिअे भी मोह है। अिसमें बढ़िया-घटियाका सवाल नहीं है। तुम वहाँ अपने सेवाकार्यमें लगी हुअी हो। मान लो कि मैं बीमार — सख्त बीमार — हो गया, या वहाँकी तरह यहाँ प्रलय हो गया, तो तुम्हारे लिअे, भले ही तुम मेरे जितनी अूँची न मानी जाती हो, (यहाँ दौड़ आनेका) अनावश्यक विचार करना मोह है। अिसका अर्थ यह नहीं हुआ कि तुम्हें मुझसे या मद्रासकी बाढ़से हमदर्दी नहीं है। हमदर्दी होनी चाहिये, जिससे तुम्हारा दया-भाव प्रगट हो, और प्रगट होना चाहिये। मगर तुम्हारा बेचैन होना मोह

है। वह त्याज्य है। अेक सेवाकार्यको अधूरा छोड़कर दूसरा करनेके लिअे कब जाना चाहिये और न जाना धर्म है, यह तो अलग प्रश्न है। संकटके समय हमने आश्रमको खाली कर दिया वह हमारा धर्म था। मगर जो लोग अुसमें न जा सके, अुन्हें बेचैन होनेकी ज़रूरत नहीं। अब भी समझमें नहीं आया हो तो पूछ लेना।

मौनवार — बापूके आशीर्वाद

भादों सुदी २

३७

५-९-'२७

बहनो,

तुम्हारी चिट्ठी मिल गअी।

आश्रमके मज़दूरोंके साथ सम्बन्ध जोड़नेकी मेरी बातका रहस्य तुम समझ गअी होगी। अुनसे संकट-निवारणके लिअे दो कौड़ी लेना तो निमित्तमात्र है। अिस प्रसंगके जरिये अुद्देश्य यह है कि तुम अुनके साथ सगाअीकी गाँठ बाँधो। वे हमें और हम अुन्हें समझें, अेक दूसरेके सुख-दुःखमें भाग लें। यहाँ मेरा कहना यह नहीं है कि अिस काममें तुम्हें बहुत समय देना है। यह तो हृदय-परिवर्तन करनेकी बात है। हम जो खाते हैं वह अुन्हें खिलावें, जो पहनते हैं वह अुन्हें पहनावें, यह लोभ हमें होना चाहिये। हमें जो अच्छा लगता है और हम जो प्राप्त करते हैं अुस सबमें वे हिस्सेदार बनें, अैसी अिच्छा हमें होनी चाहिये; और जहाँ अुस पर अमल हो सके वहाँ करना चाहिये।

मेरे अैसे लिखनेका लम्बा-चौड़ा अर्थ करके डर मत जाना। सब बातोंके कमसे कम दो अर्थ तो हो ही सकते हैं। अेक संकीर्ण और दूसरा व्यापक। व्यापकको समझें और अमल संकीर्णसे शुरू करें, तो घबराहट नहीं होगी।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

३८

१२-९-'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिल गया, यह तो नहीं कहूँगा। तुम्हारी चिट्ठी मिली है। काशीबहनके राजकोट चले जाने पर तुमने गं० स्व० गंगाबहन झवेरीको प्रमुख बनाया, यह समझा। अिस तरह तुम अेकके बाद अेक सभानेत्री नियुक्त कर सकती हो, यह तुम्हारी तंत्र चलानेकी शक्तिका कुछ सबूत है। ज्यादा सबूत तब मिलेगा जब तुम सभानेत्रीका हृदयसे आदर करो और अपना तंत्र अेकदिलीसे चलाओ। पुरुषोंमें अैसे अुज्ज्वल अुदाहरण अभी तक बहुत नहीं पाये जाते। घरकी ही मिसाल लें, तो हम सब जानते हैं कि अभी तक हमने आश्रमका तंत्र रागरहित होकर चलानेकी पूरी शिक्षा नहीं पाअी। अिसलिअे तुममें अभी वह शक्ति नहीं आअी हो, तो आश्चर्यकी बात नहीं। लेकिन अगर तुम मेहनत करोगी, तो मुझे शक नहीं कि वह शक्ति आ जायगी। जितना राग-द्वेष मिटा सको, मिटाना। कोशिश करते-करते हम आगे बढ़ेंगे ही।

बड़ी गंगाबहन संकट-निवारणके काममें चली गयी हैं, यह भी ठीक हुआ।

मेरी गाड़ी तो धीरे-धीरे चल ही रही है।

बापूके आशीर्वाद

मौनवार

भादों वदी १

३९

त्रिचनापल्ली,

१९-९-'२७

बहनो,

तुम्हारी चिट्ठियाँ मिलती रहती हैं। तुम्हारे कामका दर्शन यहाँ बैठा-बैठा किया करता हूँ। जो अपनी शक्तिके अनुसार करता है, वह सब कुछ करता है। मगर काम करनेमें जो गीता-दृष्टि हम चाहते हैं, वह पैदा करनी चाहिये। गीता-दृष्टि यह है कि सब काम सेवाभावसे करें। सेवाभावसे करें, यानी औश्वरार्पण करके करें। और जो औश्वरार्पण करके करता है, अुसमें यह भाव नहीं होता कि 'मैं करता हूँ'। अुसमें द्वेषभाव नहीं होता। अुसमें दूसरोंके प्रति अुदारता होती है। तुम्हारे छोटेसे छोटे हरअेक काममें यह सब होता है या नहीं, सो बारंबार मनसे पूछती रहना।

मैंने अपने बारेमें जो लिखा था, अुस पर रमणीकलालभाअीने प्रश्न अुठाया था। मैंने अुसका जो जवाब दिया, वह तुम सबकी समझमें आया या नहीं अुसके बारेमें कुछ नहीं लिखा। मैं चाहता

हूँ कि मैं जो कुछ लिखता हूँ अुसकी चर्चा करो, और अुसके सम्बन्धमें जो सवाल खड़े हों वे मुझसे पूछो।

मेरा स्वास्थ्य अभी तो काम दे रहा है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

४०

२६-९-'२७

बहनो,

आजका पत्र तुम्हें रूखा नहीं लगेगा। अपने मनमें रम रही बातें मैं लिख नहीं सकता था और समझदारीकी बातें लिखता रहता था। मेरे पत्रों जैसे तुम्हारे पत्र भी समझदारी भरे और राजनीतिज्ञको शोभा देनेवाले भले हों, मगर वे जवाब अैसे थे जो हम साधारण स्त्री-पुरुषोंको शोभा नहीं देते। वे जवाब नहीं, बल्कि सरकारी पहुँच जैसी पहुँच थीं।

आज तो मैं तुम्हें वहाँ होनेवाले लड़ाअी-झगड़ेके बारेमें लिखना चाहता हूँ। तुम्हारा अेक दूसरेमें विश्वास नहीं रहा, अेक दूसरेके प्रति आदर नहीं रहा और छोटी-छोटी खटपटें होती रहती हैं। यह हम दोनों जानते हैं। फिर भी अुसके बारेमें लिखनेकी किसीकी हिम्मत नहीं होती थी। मुझे लगा कि अिस नासूरको मुझे फोड़ना ही चाहिये। तुममें लड़ाअी-झगड़े क्यों होते हैं? द्वेषभाव कहाँ पैदा होता है? दोष किसका है? अिन सब बातोंकी तुम जाँच करना।

धर्म तो यह कहता है कि जब तक मनुष्य अपने मैलको जमा करता है, तब तक वह अपवित्र है; अीश्वरके पास खड़ा होने

लायक नहीं है। अिसलिअे तुम्हारा पहला काम तो यह है कि जिसमें मैल हो, वह अुसे प्रगट करके धो डाले। अिस पत्रका कारण मणिबहन (पटेल) का अनायास लिखा हुआ पुर्जा है। अुसके हिस्सेमें संकट-निवारणका काम आ गया, अिसलिअे वह भाग निकली। मगर अुसने अेक पुर्जेमें अपना सारा संताप अुँड़ेल दिया। आश्रममें जो फूट फैली हुअी है, अुसे वह सह न सकी। देखो, चेतो और आश्रमको सुशोभित करो।

अिस पत्र परसे जिस बहनको अलग पत्र लिखनेकी अिच्छा हो जाय वह लिखे।

क्वार सुदी १, '८३ बापूके आशीर्वाद

४१

३-१०-'२७

बहनो,

तुम्हारी तरफसे अिस बार जो अुत्तर आया है, अुसकी तो मानो मैंने अपने पिछले पत्रमें कल्पना ही कर ली थी। जिसके मनमें जिसके विरुद्ध जो कुछ भी भरा हो, अुसे वह बाहर निकालकर फेंक दे, यह आत्म-शुद्धिकी पहली सीढ़ी है। हमारे पड़ोसीके प्रति हमारे मनमें जो मैल हो, शंका हो, अुसे जब तक हम दूर न कर दें, तब तक अुसके प्रति प्रेम रखनेका पहला पाठ भी हम अमलमें नहीं ला सकते। आश्रममें कमसे कम अितना तो करनेकी हमारी शक्ति होनी ही चाहिये।

प्रार्थनाके बारेमें अभी खूब विचार करो। मैं भी अितना तो मानता ही हूँ कि आजकल सात बजेका जो खास समय है, वह तो कभी छोड़ना ही नहीं चाहिये। अपने वर्गको जानदार

बनानेका खास धर्म तुमने स्वीकार किया है। अभी तो मैं अितनी ही बात कहता हूँ। जिसकी शक्ति और अिच्छा हो वह बहन दूसरे किसीकी चर्चा किये बगैर चार बजेकी प्रार्थनामें जानेकी प्रतिज्ञा करे; और फिर, चाहे जो कष्ट हो, अुसे सहन करके भी जब तक तन्दुरुस्त हो, तब तक अुसका पालन करे।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

क्वार सुदी ८, '८३

४२

१०–१०–'२७

प्यारी बहनो,

मालूम होता है कि मेरे पिछले पत्रसे तुममें काफी खलबली मची हुअी है। अिसीलिअे तुम्हारा खत मुझे अभी तक नहीं मिला। यह खलबली मुझे पसन्द है। नम्रताके नाते तुम अेक दूसरीके साथ मिलो-जुलो, अितनेसे मुझे सन्तोष नहीं होगा, तुम भी सन्तोष न मानना। हमें कभी भी जैसे-तैसे काम नहीं चलाना है। बल्कि हमें तो अेकदिल होना है। हमें अपने आपको, दूसरेको या जगतको धोखा नहीं देना है। अिसलिअे जो कुछ मनमें भरा हुआ हो अुसे प्रगट करना चाहिये। अेक बार मनमें भरा हुआ मैल निकल जायगा, तो फिर नया भरनेमें देर लगेगी। लेकिन यदि जरा भी मैल रहा, तो जैसे मैले बरतनमें डाला हुआ साफ पानी भी मैला हो जाता है, वैसे ही मैले मनमें अच्छे विचार मिल जायँ, तो वे भी मैले बन जाते हैं। जिसके बारेमें हमें अेक बार शक हो जाता है, अुसकी तमाम बातों पर हमें सन्देह रहने लगता है।

क्वार बदी १, '८३ बापूके आशीर्वाद

४३

१७–१०–'२७

वहनो,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं समझता हूँ कि तुम बहुत बेचैन हो गअी हो। अिससे मैं नहीं घबराता। जब मैंने यह विषय छेड़ा, तभी समझता था कि तुम बेचैन हो जाओगी। मगर अिसके बिना मैल दूर करनेका मुझे कोअी रास्ता नहीं दिखाअी दिया। अब तुम धीरज रखो। सब बातें ठीक हो जायेंगी; और हम नअी और सच्ची शान्ति महसूस करेंगे। हम अेक कुटुम्ब बन गये हैं। कुटुम्बमें खलबली मचती है, तो हम क्या करते हैं? अगर दोनों सच्चे हों, तो अेक दूसरेका रोष सहन करते हैं, अपने आपको शान्त करनेकी कोशिश करते हैं। अुसी तरह हमें यहाँ भी करना है। हम सब अपना धर्म पालन करने लग जायँ, तो जो न पालते हों वे पालने लग जायँ या कठोर मूँगकी तरह निकल जायँ। अिस खलबलीसे अेक दूसरेके प्रति अुदारता रखनेकी शिक्षा तो ले ही लेना। अुदारताका पदार्थपाठ तभी सीखा जाता है, जब हम किसीको दोषी मानते हों, तब भी अुसके प्रति रोष न रखकर अुससे प्रेम करें, अुसकी सेवा करें। जब तक अेक दूसरेके बीच विचार और आचारकी अेकता है, तब तक यदि सद्भाव रहता है, तो यह अुदारता या प्रेमका गुण नहीं। वह तो केवल मित्रता है, परस्पर प्रेम है, अितना ही कहा जा सकता है।

मगर वहाँ प्रेम शब्दका अुपयोग अनुचित मानना चाहिये। अुसे स्नेह कहेंगे। दुश्मनके प्रति मित्रभावका नाम प्रेम है।

मौनवार   बापूके आशीर्वाद

दीवाली, मंगलवार, '८३
२५-१०-'२७

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिल गया। तुम घबराओ मत। सब साफ़ हों, तभी अेक भी साफ़ होगा, अैसा अुल्टा न्याय न करना। नियम यह है: अेक साफ़ हो जाय, तो दूसरे होंगे ही। अिस सम्बन्धकी हमारे यहाँ दो कहावतें हैं: (१) आप भला तो जग भला, (२) यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। अगर अैसा न हो, तो दुनियाके लिअे कभी आशा ही नहीं रखी जा सकती।

राम जगतकी लाज रखता है। सीता स्त्रीमात्रके लिअे आधार है। अिसलिअे निराश न होकर सब शुद्ध बननेके लिअे मेहनत करोगी और अपने कर्तव्यमें परायण रहोगी, तो तुम देखोगी कि सब ठीक हो जायगा। 'हारना' शब्द हमारे शब्दकोषमें हो ही नहीं सकता।

देखता हूँ तुमने नये वर्षमें कैसे नये निश्चय किये हैं। न बोले अुसे बुलवाना। जो न आये अुसके घर जाना। जो रूठे अुसे मनाना। और यह सब अुसके भलेके लिअे नहीं, परन्तु अपने भलेके लिअे करना। जगत लेनदार है। हम अुसके कर्ज़दार हैं।

बापूके आशीर्वाद

४५

३१-१०-'२७

बहनो,

अेक पत्र स्याहीसे लिखनेका प्रयत्न किया। मगर ट्रेन अितनी तेज़ीसे और अितनी हिलती हुअी चलती है कि स्याहीसे लिखा नहीं जा सकता और सोमवारका पत्र तो रोका ही कैसे जाय?

अेक होनेके अपने प्रयत्न तुम कभी न छोड़ना। हमारी कोशिशमें ही कामयाबी है। शुभ प्रयत्न कभी बेकार नहीं जाते, यह भगवानकी प्रतिज्ञा है और अिसका थोड़ा बहुत अनुभव हम सबको है। तुम भण्डारको अब छोड़ ही नहीं सकतीं। लिया हुआ काम घबराकर हरगिज न छोड़ना। घबराने या हारनेका कोअी कारण ही नहीं। दो-चार बहनोंको अनुभव हो जाय और वे कुशल बन जायँ, तब तो कोअी अड़चन आनी ही न चाहिये। अगर घबराकर भण्डार छोड़ोगी, तो दूसरा काम लेनेमें हमेशा हिचकिचाओगी। मतभेद, राग-द्वेषादिके रहते हुअे भी जो काम हैं, सो तो होने ही चाहियें। सब करें अुससे कम तो हम हरगिज़ न करें।

दो-चार दिनमें मिलनेकी आशा रखता हूँ।

कार्तिक सुदी ६, '८४ बापूके आशीर्वाद

७-११-'२७

बहनो,

वह पत्र जहाजमें लिख रहा हूँ। डाकमें तो दो दिन बाद डाला जायगा, लेकिन तुम्हें सोमवारको ही लिखनेकी आदत होनेके कारण लिख डालता हूँ।

अिस बार आश्रममें दो दिन खूब काममें बीते। थक जाने पर भी आश्रम छोड़ना अच्छा न लगा।

तुम देखती होगी कि तुम सबकी जिम्मेदारी दिन-दिन बढ़ती जा रही है। कोअी घबराये नहीं। कर्तव्यपरायण रहना और अशान्तिमें भी शान्ति प्राप्त करना सीखना। हमारा आनन्द हमारे धर्म-पालनमें हो, कार्यकी सफलतामें या संयोगोंकी अनुकूलतामें नहीं। नरसिंह मेहताने कहा है कि

नीपजे नरथी[1] तो कोअी न रहे दुःखी
शत्रु मारीने[2] सहु[3] मित्र राखे।

मगर मनुष्य तो रंक प्राणी है। वह राजा तभी होता है, जब वह अहंकार छोड़कर ओीश्वरमें समा जाता है। समुद्रसे अलग होकर बिन्दु किसीके काम नहीं आता। परन्तु समुद्रमें समा जानेसे अपनी छाती पर अिस बड़े जहाज़का भार झेल रहा है। अिसी तरह अगर हम आश्रममें और अुसके जरिये जगतमें यानी ओीश्वरमें समा जाना सीख लें, तो पृथ्वीका भार अुठानेवाले माने जायेंगे। मगर अुस समय तो मैं-तू मिटकर वही अकेला रह जाता है।

जहाज़ मालका ही हो तो अुसमें बड़ी शान्ति रहती है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

---

१. नर से २. मारकर ३. सब

४७

कोलम्बो,
१४-११-'२७

बहनो,

हम शनिवारको कोलम्बो पहुँचे। तुम्हारे किसी न किसी पत्रकी आशा रखी थी, मगर आज सोमवार तक नहीं मिला।

यह देश बहुत रमणीय है। हिन्दुस्तानके बाहर होने पर भी हिन्दुस्तान जैसा ही लगता है। दक्षिणकी तरफके लोग ही ज्यादा बसते हैं। वे यहाँके निवासियोंसे कोअी बहुत जुदा नहीं मालूम होते। यहाँकी औरतोंकी पोशाक सादी है। औरत-मर्दकी पोशाक लगभग अेकसी कही जायगी। दोनों धोती पहनते हैं। वह जैसे सुरेन्द्र पहनता है अुस ढंगकी होती है। अितना ही है कि यहाँकी धोतियाँ रंगीन और तरह-तरहकी होती हैं। अूपर दोनों बंडी पहनते हैं। बंडीकी बनावटमें थोड़ा फर्क़ ज़रूर है। स्त्रियाँ बंडीके बिना हरगिज नहीं रहतीं, जबकि मर्द ज्यादातर केवल धोतीसे ही सन्तोष मानते हैं। कुछ अैसी ही पोशाक मलाबारमें भी होती है। अितना ही है कि वहाँकी धोतियाँ रंगीन नहीं होतीं। ये कपड़े सस्ते तो बहुत ही पड़ सकते हैं। दोनों प्रदेशोंमें लोगोंको खादीसे प्रेम हो जाय, तो पहननेमें तो अड़चन आ ही नहीं सकती।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

४८

२१-११-'२७

बहनो,

तुम्हारी तरफसे अिस बार अभी तक पत्र नहीं मिला। लंकामें अितना ज्यादा घूमना होता है कि पत्र कोलंबोसे तुरंत नहीं पहुँच सकते।

लंकाकी स्त्रियोंको देखकर आश्रमकी स्त्रियाँ समय-समय पर याद आती हैं। अेक तरफ स्त्रियोंकी पोशाक सादी है, यह तो लिख ही चुका हूँ। दूसरी तरफ बड़े घरोंकी स्त्रियोंने अितना ज्यादा शौक बढ़ा लिया है कि अुनके शरीर पर रेशम और ज़रीके सिवाय कुछ भी नहीं पाया जाता। मेरी नजरमें तो यह बिलकुल शोभा नहीं देता। मैं मनसे यही पूछता रहता हूँ कि स्त्रियाँ अैसी पोशाक किसे दिखाने या रिझानेको पहनती होंगी। यहाँ पर्दा तो है ही नहीं।

स्त्रियाँ जितना बनाव-सिंगार करती हैं, वह सब किस लिअे? अिस सवालका अुत्तर जितना मैं दे सकता हूँ अुससे तुम ज्यादा दे सकती हो। मगर यह सब देखकर मुझे यह तो खयाल होता ही है कि आश्रममें जो कमसे कम शृंगार करनेकी रूढ़ि चल पड़ी है, वह अच्छा ही हुआ। मेरा मन यह तो नहीं मानता कि आश्रममें बिल्कुल शृंगार है ही नहीं। तुम्हारा मन मानता हो तो कहना।

बापूके आशीर्वाद

४९

जाफना,
२८-११-'२७

बहनों,

यह अिलाका भी लंका कहलाता है, फिर भी दक्षिणी लंकासे बहुत निराला है। यहाँ तो तामिल हिन्दुस्तानियोंकी ही बस्ती है। और वे सारे रीत-रिवाज हिन्दुस्तानके ही पालते हैं। अिसलिअे दक्षिणमें और अिसमें कोअी फर्क नहीं दिखाअी देता। यह ज़रूर जान पड़ता है कि यहाँकी बहनें शायद दक्षिणसे कुछ ज्यादा आज़ादीके साथ रहती हैं। यहाँ अेक गुजराती दम्पति है। बहन राजकोटके अच्छे घरानेकी लड़की है। अुसके पति बड़ौदाके प्रसिद्ध हरगोविन्ददास काँटावालाके पुत्र हैं। वे यहाँ न्यायाधीश हैं। अुन्होंने काफी कीर्ति फैलाअी है। यहाँ आधा खाना तो काशीबाअी (बहनका नाम) पहुँचाती हैं। अिसलिअे यह कहा जा सकता है कि बा छुट्टी पर हैं।

कल यहाँसे रवाना हो रहे हैं। अब जहाँ जाना है, वहाँ सचमुच अस्थिपिंजर हैं। फिरसे अुनके दर्शन करने, हृदयको अधिक मथने और चरखेका मर्म अधिक समझनेके लिअे अधीर हो रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मपुर,
५–१२–'२७

बहनो,

तुम्हारा मणिबहनको लिखा हुआ पत्र मिला। आज मेरे पास बहुत समय नहीं है। आश्रममें शृंगार तो हरगिज़ नहीं होना चाहिये, अिस बारेमें मुझे जरा भी शंका नहीं है। अितना तो साफ ही है कि जब तक देशमें भयंकर भुखमरी फैली हुअी है, तब तक रत्ती भरकी अँगूठी भी रखना या पहनना पाप है। कपड़े तो अैब ढँकने और सरदी-गरमीसे बचनेके लिअे ही पहने जाने चाहियें। अिस आदर्श तक पहुँच जानेका सब बहनोंको प्रयत्न करना चाहिये।

शृंगारकी अुत्पत्तिके बारेमें तो आज नहीं लिखूँगा। मेरा सवाल भी अच्छी तरह समझमें आया है, अैसा नहीं मालूम होता।

लक्ष्मीबहन बीमार कैसे हो गअीं? अुन्हें तो बीमार पड़ना ही न चाहिये था।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

बोलगढ़,
१२–१२–'२७

बहनो,

आज मुझे अेकान्त तो बहुत है, मगर वह बीमारके कमरेका अेकान्त है। यहाँकी हालत देखकर दिल जलता है और यहीं रह जानेकी अिच्छा होती है। तुममें से कोअी भी बहन तैयार हो, तो अुसे यहाँ आनेके लिअे ज़रूर ललचाअूँ। यहाँ सब स्त्रियाँ परदा रखती हैं। लोगोंके पास न पूरा कपड़ा है, न खानेको। अुड़ीसामें प्रवेश करनेसे पहले जब मीराबहनने जितने कपड़े थे अुससे भी कम करनेकी माँग की, तब मैं कुछ घबराया था। यहाँ आकर देखा कि यह माँग ठीक ही थी। यहाँकी स्त्रियाँ सिर्फ अेक धोती ही पहनती हैं। आधा भाग कमरमें और आधा भाग शरीरके अूपरके हिस्सेके लिअे। खानेमें न घी मिलता है, न दूध। लोग सब भयभीत हैं। किसी पुलिस-वालेने डरा दिया है, अिसलिअे मेरे पास भी नहीं आते। अेक घरमें मीराबहनको अकेली छोड़कर मैं चला गया, तो पचासों स्त्रियाँ अुसे घेर कर बैठ गअीं और अनेक प्रकारकी बातें पूछने लगीं। अगर कोअी बहन अिन बहनोंमें काम करनेवाली हो, तो मेरी रायमें वह बहुत कुछ कर सकती है। मगर यह सब तो भविष्यकी बात हुअी। अभी तो तुम सब तैयार हो जाओ। तैयार होनेका मतलब है 'मैं-पन' भूल जाओ। अितना कर लो, तो कहीं भी जा सकती हो।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

कटक,
१९–१२–'२७

बहनो,

अीश्वरकी अिच्छा होगी तो अिसके बाद तुम्हें पत्र लिखनेके लिअे अेक ही सोमवार रहेगा।

मीराबहनका पत्र मिल गया। तुमने पोशाकके विषयमें अधिक चर्चा करनेके लिअे लिखा है। अुस पर अभी तो चर्चा नहीं करूँगा, परन्तु जब हम मिलें, तब ज़रूर प्रश्न करना। भीतर ही भीतर जब तक शृंगारका मोह बाकी है, तब तक देखादेखी कुछ भी फेरबदल या त्याग करना व्यर्थ है। परन्तु जब मोह अुतर जाय और फिर भी मन अुस तरफ जाता हो, तब तो देखादेखी, शरमसे या किसी भी बहाने मोहको मारना चाहिये और अुचित परिवर्तन कर लेना चाहिये। मोहादि शत्रु हमें अितने तंग करते हैं कि हमें जो भी अुचित मदद मिल जाय, अुसका अुपयोग करके हम अुससे बच जायँ। यह सब अुनके लिअे लिखा जाता है, जो सच्चे हैं और सच्चे बनना चाहते हैं। गीताजीमें अेक जगह कहा है कि जो अूपरसे संयम करके मनमें विषयोंका सेवन करता है, वह मूढ़ात्मा, मिथ्याचारी है। यह वाक्य पाखण्डीके लिअे है। वही गीताजी सच्चा प्रयत्न करनेवालेके लिअे कहती है कि प्रमाथी* अिंद्रियोंका बारंबार संयम करो।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

---

* मथ डालनेवाली

बारडोली,
६–८–'२८

बहनो,

यहाँ तो समझौता* हो गया असा मालूम होता है। अिसलिअे अब मैं जल्दी आनेकी आशा रखता हूँ। थोड़े दिन तो वल्लभभाअी मुझे रोकना चाहते हैं। समझौतेका पक्का पता कल लगेगा।

मुझे तो रसोअीघरके ही विचार आयेंगे न? यह सोच रहा हूँ कि तुम अुसमें पूरी दिलचस्पी और भाग कैसे लेने लगो। मुझे यह ज़रूरी मालूम होता है कि तुम रसोअीघरका सारा कामकाज अपने हाथमें ले लो। तुम चाहो सो मदद तुम्हें दी जाय। मगर वह तभी हो सकता है, जब तुममें हिम्मत आ जाय। रसोअीघर और भंडारमें शोर-गुल मिट जाना चाहिये। अिस शोर-गुलसे मीराबहनके लिअे काम करना मुश्किल हो जाता है और छोटेलालजी भी घबरा जाते हैं। स्थितप्रज्ञके श्लोक गानेवालेको शांतिपूर्वक काम करनेकी आदत डालनी ही चाहिये। रोटी बेलते या चावल साफ करते वक्त हम अपने काममें अंतर्मुख होकर तन्मय क्यों नहीं रह सकते? मगर तुम तो कहती हो कि बातें न की जायें, तो वक्त ही न कटे। यह सुनकर मैं मजबूर

---

* यह बारडोली सत्याग्रहकी लड़ाअीके समझौतेका ज़िक्र है। समझौता ६ अगस्तको हुआ था। अुसका बाकायदा अैलान तो जब ७ तारीखको सत्याग्रहियोंको छोड़ देने के लिअे हुक्म निकले तब हुआ।

ो जाता हूँ। परन्तु मुझे कहना तो चाहिये कि अितने पर ी तुम्हारे लिअे शोर करनेकी ज़रूरत नहीं रहती। दिनमें कुछ ोकोंके विचारमें ही ग्रस्त क्यों न रहा जाय? देखो और ेचारो। ठीक लगे सो ही करना।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

५४

वर्धा,
२६–११–'२८

बहनो,

हम जलगाँव अेक घण्टा देरसे पहुँचे। अिसलिअे जो गाड़ी मिलनेवाली थी, सो चूक गये और वर्धा देरसे पहुँचे।

यहाँ जो अेक बात देखी, अुसकी तरफ तुम्हारा ध्यान तुरन्त खींचता हूँ। मैं तो आश्रमके रसोअीघरमें ही खाने लगा हूँ। तीनों बार वहीं खाया, परन्तु शोर-गुल जैसी बात ही नहीं। अिससे बहुत शान्ति रही और हमारा शोर-गुल याद आया। यहाँ न बर्तनोंकी खड़खड़ाहट सुनाअी देती थी और न लोगोंकी आवाज़। अितना फ़र्क़ ज़रूर है कि हमारे वहाँ बच्चे हैं, यहाँ नहीं हैं। फिर भी तुम चाहो तो बच्चोंको चुप रहना सिखा सकती हो और तुम खुद भी बातें करना बन्द रख सकती हो। हमारे रसोअीघरमें शोर नहीं मिटता, यह तो बड़ी भारी खामी है।

तुम्हारा वियोग मुझे सबसे ज्यादा खटकता है, क्योंकि तुमसे बहुतसा काम लेना अभी अधूरा पड़ा है। रहा हुआ काम तुम पूरा करना।

तुम अपना कर्तव्य तो जानती ही हो। रसोअीघर, बाल-मन्दिर और प्रार्थनाके काम तो चालू ही हैं। और जब सेवाके काम हाथमें लो, तब — जो जो काम लिये हैं — अुन्हें हारकर कभी न छोड़ना। अुसके लायक बननेके लिअे सबसे ज़रूरी बात यह है: जिस बहनने जो काम लिया हो अुसे पूरा करे, मर्ज़ीमें आये तब अुसे छोड़ न दे। गैरहाजिर रहनेकी आवश्यकता जान पड़े, तब दूसरा बन्दोबस्त करे; और न हो सके तो अपना काम कभी न छोड़े।

तुम सब बहनें प्रफुल्लित रहना, शान्त रहना। मन्दिरके सभी कामोंमें अपना हिस्सा पुरुषोंके जैसा और अुतना ही अदा करनेका आग्रह रखना। यह तुम्हारी शक्तिके बाहर तो कतअी नहीं है। अितनी ही बात है कि तुम्हें यह अिच्छा रखनी चाहिये और कोशिश करनी चाहिये।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

५५

वर्धा,
३-१२-'२८

बहनो,

श्री गंगाबहनका लिखा हुआ पत्र मुझे मिल गया है। शोर-गुलके बारेमें तुमने जो लिखा है, अुसमें कुछ तो बचाव है। परन्तु अिसमें सिर्फ बच्चोंकी ही जिम्मेदारी नहीं, बड़ोंकी भी है। अिसके अलावा खाते समय या काम करते समय शान्ति रखना या बच्चोंसे रखवाना बड़ी बात न होनी चाहिये। खास बात

यह है: तुम बहनें यह न मान बैठो कि बातोंके बिना खानेका या काम करनेका समय कटेगा ही नहीं, या बच्चोंको शान्त रखा ही नहीं जा सकता। शान्तिसे काम करनेवाले करोड़ों मनुष्य हैं। तुम जानती हो न कि बड़े कारखानोंमें मज़दूरोंको जबरदस्ती शान्ति रखनी पड़ती है। जो वे जबरदस्तीसे करते हैं, वह हम स्वेच्छासे क्यों न करें?

अब तुम्हारे पास हफ्तेमें अेक बार काका साहब आया करेंगे। क्या फिर भी वालजीभाअीसे आग्रह करनेकी ज़रूरत मालूम होती है? मैं आग्रह करूँगा तो वे आयेंगे तो सही, मगर चूँकि मैं जानता हूँ कि वे हमेशा काममें लगे रहते हैं, अिसलिअे जहाँ तक होता है, अुन पर ज्यादा बोझ नहीं डालता।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

५६

वर्धा,
१०–१२–'२८

बहनो,

तुम्हारी तरफसे पत्र मिल गया।

मेरे बारेमें समाचार तो अुस पत्रमें देखोगी, जो मैंने सारे मन्दिरके लिअे लिखा है।

रसोअीघरमें शोर बन्द करनेके लिअे केवल तुम्हारा निश्चय ही चाहिये। अेक बार निश्चय कर डालो, तो शोर बन्द हो ही जायगा।

रसोअीघर अभी तक स्वभावके अनुकूल न बना हो, तो अेक बात की याद दिलाअूँ। जहाँ यह बात न हो कि अेक

साल तक दूसरा कोओी विचार भी किया जा सके, वहाँ स्पष्ट है कि अुसे पसंद कर लेनेमें ही लाभ है ।

मगर अभी जो दुःखद घटना हो गओी है, वह तुम सब बहनोंके विचार करने योग्य है । यह घटना कोओी छिपी हुओी नहीं है । वह छिपी हुओी न रहे, अिसीलिअे यहाँ चर्चा की है । अिस दोषमें अेक ही बहन नहीं, परन्तु कम से कम तीन थीं । अिन तीन बहनोंकी तरफ़ अुँगली अुठानेकी भी ज़रूरत नहीं, क्योंकि अैसे दोष हम सभी, स्त्री हो या पुरुष, करते हैं और अपने जीवनमें किये भी होंगे । मैं तो चाहता हूँ कि तुम अिससे दो बातें सीखो । वे ये हैं : यदि सम्मिलित भोजनालयके कारण ही हम जान सके हों कि यह पाप हममें है, तो अुस भोजनालयको तो चालू ही रखेंगे । घरमें पड़े-पड़े हम अपनी पाप करनेकी शक्तिको नहीं जानते । वह तो मौके पर खिलती है । यहाँ संग और प्रसंग दोनों आ गये, अिसलिअे मनमें बसी हुओी कमजोरी फूट निकली । अिसलिअे यह समझना चाहिये कि अैसा भोजनालय तो हमारे लिअे अुपकारक है । दूसरी बात यह है : चूँकि सच-सच जाहिर कर देनेकी हिम्मत न थी, अिसलिअे अिस कमजोरीके कारण चोरी और झूठ वगैरा पाप हुअे । हमें जो कुछ करना है, वह हिम्मतके साथ क्यों न करें? जैसे हैं वैसे दिखनेमें डरना क्या? स्वादका रस लेना हो, तो अुसे छिपाना क्यों?

स्वादका रस लेनेमें पाप नहीं है । लेनेकी अिच्छा होने पर भी न होनेका भाव दिखानेमें पाप है, फिर चोरीसे लेनेमें पाप है । सब भाओी-बहन जैसी अुनकी अिच्छा हो, वह चीज़

खा सकते हैं। सत्याग्रह आश्रमसे अुद्योग-मंदिर बननेमें यह भी अेक कारण तो था ही। जिसे स्वादका रस लेना हो, वह ले सकता है। मर्यादा अितनी ही है कि रसोअीघरमें जितने स्वाद होते हों, अुतने ही भोगे जायँ। घरमें लुक-छिप कर या खुले तौरसे स्वादके लिअे नहीं पकाया जा सकता। परंतु मित्रके यहाँ बाहर जाकर खानेकी अिच्छा हो जाय, तो अुसमें छिपानेकी कोअी बात नहीं और जो कुछ खाना हो, सो खाया जा सकता है। घरमें कोअी स्वादकी चीज़ जमा करके रखनी हो, जैसे मेवे वगैरा, तो वह रखी जा सकती है। यह छूट न लेना अच्छा है, मगर अब अैसी छूट न लेनेका बंधन नहीं रहा। सब बहनोंसे मेरी माँग अितनी ही है: जैसी हो वैसी दिखना। जो करना हो सो खुले तौर पर करना, किसीसे मत दबना, और शर्मा कर हाँ करनेके बाद अुससे अुलटा आचरण मत करना।

रसोअीघर में जानेवाली बहनको अपने नियम पालना ही चाहिये। अभी तक अैसा नहीं मालूम होता कि बड़ी गंगा बहनको सब बहनोंने निर्भय कर दिया हो। रसोअीघरका तो हरअेक काम यंत्रकी तरह नियमित रूपसे होना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

अिसे दुबारा नहीं पढ़ा।

वर्धा,
१७-१२-'२८

बहनो,

तुम्हारी तरफसे अिस बार पत्र नहीं आया। परन्तु जो पत्र मिले हैं अुनसे मालूम होता है कि अब रसोअीघरमें ज़रूर कुछ-कुछ शांति पाली जाती है। जब तक पूरी शांति न पाली जाय, तब तक तुम संतोष न मानना। यह काम मुख्यत: तुम्हारा ही है। रसोअीघरको हर तरहसे शोभाके लायक बनानेकी जिम्मेदारी तुम अपने पर ही रखना। जब वहाँ सब शांतिसे खायें, वहाँका सब काम कर्तव्य समझकर करें, और जो मिल जाय अुसमें संतोष मानें, तभी माना जायगा कि हमारा रसोअीघर आदर्श पाठशालाका अेक आदर्श विभाग बन गया है। सारा मंदिर अेक पाठशाला है, यह तो तुम जानती ही हो। रसोअीघर पाकशाला है। वहाँ अनाज शास्त्रीय ढंगसे रखा जाना चाहिये, पकाया जाना चाहिये और खाया जाना चाहिये। मतलब यह कि हरअेक क्रियामें स्वच्छता होनी चाहिये; संयम होना चाहिये। वहाँ हम भोगके लिअे न जायँ और न खायँ। परंतु शरीर अीश्वरके रहनेका मंदिर है। अुसे हम झाड़-बुहारकर साफ रखें और अन्न देकर अुसकी नित्य रक्षा करें। अिस कल्पनाको तुम हजम कर लो, तो हम खानेमें जो लड़ाअी-झगड़ा देखते हैं, वह सब बन्द हो जायगा। सारे मंदिरके लिअे जो पत्र लिखा है, अुसमें की चारों बातों पर विचार करना और यदि अच्छी लगें, तो अुन पर अमल करना।

कैलाश, शीला अित्यादि बालक बीमार हरगिज न पड़ने चाहियें। अेक भी बच्चा बीमार हो जाय, तब यह समझनेके बजाय कि अुसकी चिन्ता अुसकी माँ ही रखे या अुसके लिअे वही ज़िम्मेदार है, तुम सब ज़िम्मेदारी अुठाओ। माता खुद न सँभाल सके या अुसे मालूम न हो, तो जिसे मालूम हो वह अुस बच्चेको सँभाल ले, यह हमारे यहाँ स्वाभाविक नियम हो जाना चाहिये। किसी माँ को यह न लगना चाहिये कि वह अकेली पड़ गअी है।

आज तो अितना ही।

मौनवार | बापूके आशीर्वाद

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गये।

५८

कलकत्ता,
२४-१२-'२८

बहनो,

आज छोटा ही पत्र लिखनेका समय है।

चि० दुर्गाबहनको पत्र लिखा है, जो सभी बहनों पर लागू होता है। अुसे पढ़ना। अुमाके जानेसे सभी बहनोंको अेक सबक सीखना है। मन्दिरके सारे बच्चे तुम्हारे ही बच्चे हैं। अुनमें से कोअी चला जाय, तो यह समझना चाहिये कि अुसे अीश्वर ले जा रहा है, दूसरे आवें तो यह समझो कि अीश्वर भेज रहा है। आश्रममें जन्मसे वृद्धि नहीं होती, परन्तु दूसरे कुटुम्बोंके आ जानेसे तो वृद्धि होती ही है। अिन सब बच्चों

पर बराबर प्रेम रखना सीख जायँ, तो अुमाके वियोगका दुःख तो हो ही नहीं सकता । मगर हमें अिसका अर्थ समझना चाहिये ।

अब तो जल्दी मिलेंगे ।

मौनवार   बापूके आशीर्वाद

५९

कलकत्ता,
३१-१२-'२८

बहनो,

मैं आशा करता हूँ कि मेरा यह आखिरी खत है । अभीके हिसाबसे तो रविवारको सवेरे वहाँ पहुँचूँगा ।

आज तो अितना ही लिखनेका समय है कि आकर मुझे तुमसे हिसाब लेना है । नया लिखनेकी ज़रूरत भी कहाँ है ? तुम स्थिरचित्त हो गअी हो, रसोअीघरमें शान्ति फैला सकी हो और प्रार्थनामें नियम पालती हो, तो मैं समझूँगा कि बहुत कर लिया ।

मौनवार   बापूके आशीर्वाद

६०

कराची,
४-२-'२९

बहनो,

अब तो तुम्हारी कक्षाअें नियमित चलती होंगी । जो व्यवस्था अिस समय आसानीसे हो गअी है, मैं यह मानता हूँ कि अुससे अच्छी व्यवस्था नहीं हो सकती । अिस व्यवस्थासे पूरा लाभ अुठाना ।

रसिक* की तन्दुरुस्ती तो बहुत ही खराब मानी जायगी। यह पत्र तुम्हारे पास पहुँचेगा, तब तक वह रहेगा या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु हम तो रोज पढ़ते हैं कि जन्म-मरण दोनों अेक ही चीज़के दो पहलू हैं। जो जन्म लेता है वह मरता है, जो मरता है वह जन्म लेता है। अिस कोल्हूमें से कोअी-कोअी निकल ज़रूर जाते हैं। मगर जो निकलते हैं और जो नहीं निकलते, अुन दोनोंके जन्म-मरणसे हर्ष-शोक होनेका कारण बिलकुल नहीं है। यह जानता हूँ अिसीलिअे मैं निश्चिन्त होकर घूमता रहता हूँ। रसिक तो अब रामायणका पुजारी हो गया है, अिसलिअे अैसी प्रतीति होती है कि अुसकी आत्मा शान्त ही है।

मैं चाहता हूँ कि तुम बहनें रसोअीघर और बालमंदिरको ज्यादा सुशोभित करो। बच्चोंको मसाले खानेके लिअे न ललचाना। तुम भविष्यमें देखोगी कि अिससे बच्चोंको लाभ ही है। अब तो तुमने देख लिया होगा कि मसालेके बिना आम तौर पर शरीर बिगड़ता नहीं है। कुछ लोगोंमें अुसकी आदत घर कर गअी हो और वे न छोड़ सकें, तो यह बात बिलकुल अलग है। अिस चीज़ पर विचार करना। बच्चोंका शोर बंद करना तो तुम्हारे ही हाथमें है। तुम्हें गंगाबहनका बोझा हलका कराना चाहिये। अुनसे दूसरा काम भी लिया जा सकता है। घंटोंके हिस्से करके अमुक समयके लिअे तो तुम्हें गंगाबहनको रसोअीघरमें आने ही न देना चाहिये।

---

* गांधीजीका पोता

छाराड़ी* के सिवा कहींसे भी घी मँगवानेका विचार छोड़ देना चाहिये। वहाँका घी न मिले, तब अुसके बिना काम चलानेकी आदत डाल लेनी चाहिये। अब तो यह साबित हो गया माना जा सकता है कि अलसीके तेलसे जरा भी नुकसान नहीं होता। दूध-दही मिले, तो घी न मिलनेसे चिंताका कारण ही नहीं।

सागकी मर्यादा बाँध ही लेना। साफ किया हुआ कोअी भी साग अेक बारमें फी आदमी दस तोलेसे ज्यादा हरगिज न बनाया जाय, यह नियम बना लेना आवश्यक है।

अितने परिवर्तनोंमें तुम्हारे मानसिक सहयोगकी जरूरत है। यानी तुम्हें अुन्हें दिलसे और मनसे स्वीकार करना चाहिये।

बालमंदिरके लिअे तुम्हें तैयार होना है। वह तैयारी अब तुम जी भरकर कर सकती हो, क्योंकि तुम्हारे लिअे ही अेक शिक्षक नियुक्त है और वह कुशल है।

मैं १५ तारीखके बजाय १६ को रातको वहाँ पहुँचूँगा। यहाँ देरसे आया अिस कारण अेक दिन टूट जायगा।

बापूके आशीर्वाद

---

* आश्रमके पास गायोंकी डेरीवाला अेक गाँव।

६१

११–२–'२९

बहनो,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम जो कुछ हृदयपूर्वक कर सको, असुसे मुझे सन्तोष ही है। तुम्हारी शान्तिमें मेरा सुख समाया हुआ है।

रसिकके चल बसनेका मुझे अन्तरमें दुःख नहीं है। हाँ, स्वार्थके वश कभी दुःख अुमड़ पड़े अितना मोह है। रसिक जहाँ गया है, वहाँ हम सबको जाना है। अिसमें फर्क सिर्फ समयका है। अिसमें दुःख क्या? फिर, मौतका डर किस लिअे? मौतके बाद जन्म है या मोक्ष है। जन्म अच्छा तो लगता ही है। प्रयत्न करें और पसन्द हो तो मोक्ष भी है। तीसरी स्थिति है ही नहीं। अगर मोक्षके लिअे सतत प्रयत्न न हो, तो जन्म तो अनिवार्य है ही। और जन्म हमें अच्छा लगता है, अिसलिअे किसी भी तरह दुःखका कारण नहीं। दुःख हमारी मूर्छामें है। यह समझकर मैंने अपना अेक भी काम क्षणभरके लिअे भी नहीं रोका।

अिस बार अैसे मुहूर्तसे निकला हूँ कि वहाँ आनेकी तारीख सरकती रहती है। अिस बारेमें छगनलालके पत्रसे जान लेना।

बापूके आशीर्वाद

६२

रंगून,
४-३-'२९

बहनो,

आज तो तुम्हें याद करने जितना ही समय मेरे पास है।

तुम्हारा पत्र तो अबकी डाकमें ही आये तो आये। डाकको बराबर सात दिन लगते हैं।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

६३

मांडले,
१८-३-'२९

बहनो,

जहाँ लोकमान्यने गीताकी टीका लिखी, जहाँ लालाजी और सुभाष बोस कैद थे, अुस शहरका नाम है मांडले। आज हम अिसी शहरमें हैं। मैं तो यह सब देखनेके लिअे नहीं जा सका, मगर और सबको भेजा है। यहाँ जिस परिवारमें ठहरे हैं, अुसकी स्त्री कोअी साध्वी स्त्री है। धन बहुत है, पति जिन्दा है, बालबच्चे हैं, फिर भी रत्तीभर गहना नहीं पहनती। अपनी लड़कियोंको गहने पहननेको नहीं ललचाती। तेरह बरसकी अेक लड़की है, जिसे बीस बरस तक विवाहका विचार तक न करनेको ललचा रही है। अुसके पास जो गहने थे, मुझे दिलवा दिये हैं।

आश्रमके और नियम भी पालती है। 'नवजीवन' नियमसे पढ़ती है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि बहुत पढ़ी-लिखी है।

तुम्हारे सब काम अच्छी तरह चल रहे होंगे।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

६४

कलकत्ता,
२५–३–'२९

बहनो,

आज तो तुम्हें याद करनेको ही पत्र लिख रहा हूँ, क्योंकि लगभग अिस पत्रके साथ ही पहुँचनेकी आशा रखता हूँ।

बहनें जो सच्ची शिक्षा (अनुभवकी) अुद्योग-मंदिरमें पा रही हैं, वैसी मैं कहीं नहीं देखता। मगर अभी हमें बहुत-कुछ करना बाकी है। हमारी यह स्थिति होनी चाहिये कि किसी भी बहनको हम निर्भयतासे भरती कर सकें।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

६५

८–४–'२९

बहनो,

अुद्योग-मन्दिरमें हुअी घटनाओंकी याद भुलाअी ही नहीं जाती। सारी घटनाओंमें हिम्मतकी कमी देखता हूँ। जहाँ हिम्मत नहीं, वहाँ सत्य हो ही नहीं सकता। भूल करनेमें तो पाप है ही, परन्तु अुसे छिपानेमें अुससे भी बड़ा पाप है। शुद्ध हृदयसे जो

अपने आप भूल कबूल कर लेता है, अुसका पाप धुल जाता है और वह सीधे रास्ते लग सकता है। जो झूठी शर्म रख कर भूलको छिपाता है, वह गहरे गड्ढेमें गिरता है। यह हमने तमाम मामलोंमें देख लिया, अिसलिअे मैं तो बहनोंसे यही माँगता हूँ कि तुम झूठी शर्मसे बचना। जाने या अनजाने बुरा हो जाय, तो फौरन जाहिर कर देना और दुबारा अैसा न करनेका निश्चय कर लेना।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

६६

१५-४-'२९

बहनो,

आज ज्यादा लिखनेका समय नहीं है। मैं यह माँगता हूँ कि जो हैं वे मन्दिरको चलायें और अुज्ज्वल करें।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

६७

२२-४-'२९

बहनो,

आज तो अैसे गाँवमें पड़े हैं, जहाँ कोअी सुविधायें ही नहीं हैं। अिसलिअे डाक जल्दी तैयार करनी पड़ेगी। फिर यहाँसे आठ मील दूर डाकखाना है, वहाँ पत्र जायँगे। परेशानी काफी होती है, साथ ही अुतना अनुभव भी मिलता है। [चन्देमें] पैसा तो मिलता ही रहता है।

यह तो तुम जानती ही हो कि यहाँ की कुछ स्त्रियाँ कातनेमें बहुत कुशल होती हैं। स्त्रियोंमें खादीका प्रचार गुजरातसे बहुत ज्यादा है। परदे या घूँघट जैसी कोअी चीज़ नहीं है, अिसलिअे स्त्रियोंके शरीर मजबूत दिखाअी देते हैं, मेहनत भी वे खूब करती हैं।

मेरी झोलीमें स्त्रियोंने गहने बहुत डाले हैं। बहुतेरी तो अपनी अँगूठियाँ देती हैं। कुछ चूड़ियाँ और कोअी अपने हार दे देती हैं। अब तक लगभग अेक लाख रुपये अिकट्ठे हो गये होंगे।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

६८

२९-४-'२९

चि० गंगाबहन झवेरी,

अिस पत्रको बहनोंके नाम भी समझना।

तुमने और वसुमतीने स्त्री-विभागका बोझा अुठाया है, अिसमें तुम्हारी अिच्छा और शक्तिकी अपेक्षा मेरे प्रति प्रेम अधिक देखता हूँ। यह हो तो भी अच्छा है। ओीश्वर तुम्हें अिच्छा और शक्ति दे। मगर अैसा न हो, तो बूतेसे ज्यादा कुछ न करना।

सारे आश्रमकी कसौटी हो रही है। अुसमें बहनें भी आ जाती हैं। जिसे अलग रहना हो वह रह सकता है, यह मैंने छगनलालको लिख दिया है। यह सोचना होगा कि जिन बहनोंके साथ कोअी भी पुरुष नहीं है अुनके लिअे क्या किया जाय?

मगर अिस मामलेमें तुम सब जो विचार करना हो कर डालना। जो आश्रम या (अुद्योग) मन्दिरसे अलग हो जाय, अुस पर अेक भी नियम लागू नहीं होगा। और अुन्हें मेरी यह जोखिमभरी हिदायत है कि वे केवल किरायेदारकी हैसियतसे रहें। लेकिन मैं देखता हूँ कि अिसके सिवाय कोअी अुपाय नहीं है। किन्हीं नरम नियमोंको लागू करना भी ठीक नहीं लगता। किरायेदार जहाँ तक रह सके और मकान-मालिक जब तक अुसे रखना पसन्द करे, तब तक वह रह सकता है। कोअी बहन अैसी स्थितिमें रखी जना पसन्द करेगी या नहीं, या पसन्द भी करे तो अुसे अिस तरहसे रखनेकी जोखिम अुठाअी जा सकती है या नहीं, यह मैं अभी तक तय नहीं कर पाया हूँ। मगर तुम सब वहाँ हो तो अभी विचार तो कर ही सकती हो।

बापूके आशीर्वाद

६९

रेजोल,
६-५-'२९

बहनो,

यह पत्र जहाँसे लिख रहा हूँ, वह रेलसे दूर अेक गाँव है। वहाँसे जहाँ जाना हो वहाँ नदी पार करके ही जा सकते हैं। नदीके पुल नहीं होनेसे यह टापू जैसा ही माना जायगा। जब नदीमें बाढ़ आ जाती है, तब आसपासकी ज़मीनमें कीचड़ आ जाता है। अुससे ज़मीन बहुत अुपजाअू बन गअी है। अिस कारण यहाँके लोगोंमें कुछ सुखी हैं और अिसीलिअे रुपयेके लालचसे मुझे यहाँ लाये हैं। रुपया मिल भी रहा है।

काकीनाड़ासे दुर्गाबाअी नामकी अेक बहन हमारे साथ घूमने लगी है। अुसके पतिकी सालाना आमदनी ४००० रुपये है। यह बहन हर साल अिसमें से २००० रुपये अेक महिला-विद्यालयमें लगाती है। अुस पाठशालामें खुद ही हिन्दी पढ़ाती है। चरखेकी शिक्षा भी देती है। लगभग ८० लड़कियाँ हिन्दी जानती हैं। स्त्री भली है, मेहनती है। मेरे खयालसे अुसके काममें श्रद्धा है, ज्ञान अितना नहीं। यह नहीं कहा जा सकता कि वह बहुत हिन्दी जानती है। कताअीके बारेमें भी यही कहा जा सकता है। वह कहती है कि अुसे रास्ता बतानेवाला या मदद देनेवाला काकीनाड़ामें कोअी नहीं है। अैसा मालूम होता है कि अिससे अुसकी शक्तिका पूरा अुपयोग नहीं होता।

बापूके आशीर्वाद

७०

नेलोर,
१३-५-'२९

बहनो,

अब हमारे मिलनेमें थोड़े ही दिन रह गये हैं। वहाँकी तरह यहाँ भी गरमी बढ़ती जा रही है। वैसे, मुझे तो बहुत नहीं मालूम होती। तुम प्रार्थना-वर्गको, बालमन्दिरको और पाकशालाको आग्रहपूर्वक चला रही हो, अिसमें मुझे कल्याण दिखाअी देता है। ये सब अपूर्ण हैं, सदा ही अपूर्ण रहेंगे। मगर हम जाग्रत

रहकर अुनमें सुधार करते रहें तो काफी है। अुन्हें टूटने न देनेमें ही कुछ न कुछ सुधार तो हो ही जाता है। बहनोंकी प्रार्थनाके श्लोक सब बहनोंको ठीक अर्थ सहित सीख लेने चाहियें।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

७१

करनूल,
२०-५-'२९

बहनो,

आशा तो यह है कि अिस सफरका मेरा यह आखिरी पत्र है। दूसरे सोमवारको तो पत्रके बजाय मैं खुद ही बम्बअीसे मन्दिर आनेको रवाना हो जाअूँगा।

अिस शहरमें लोगोंने मुझे अपूर्व शांति दी है। बाहर भी दर्शनोंके लिअे भीड़ नहीं खड़ी होती। अब तक तो मैं सोमवारको भी भीड़से नहीं बच सका हूँ। दो दरवाजों पर खसकी टट्टी लगा दी गअी है, अिसलिअे बाहर गरम हवा चलने पर भी अंदर ठंडक है। अितने प्रेमका अनुभव होने पर भी मैं सफरकी तकलीफोंकी शिकायत करूँ, तो मेरे जैसा कृतघ्न कौन होगा?

कानोंमें पाँच-सात जगह, नाकमें तीन जगह, हाथकी हरअेक अँगुलीमें और पैरकी हरअेक अंगुलीमें बाली, अँगूठी व कंगन पहननेवाली बहनोंको कौन समझा सकता है कि अिनमें कतअी शृंगार नहीं है?

कुछ पढ़ी-लिखी बहनें भी यह सब पहनती दिखाअी देती हैं। जब-जब अिस तरह सजी हुअी बहनोंको देखता हूँ, तब-तब (अपने) मंदिरकी बहनोंकी याद आती है। तुम कितनी अुपाधिसे छूट गअी हो।

मौनवार — बापूके आशीर्वाद

७२

नैनीताल,
१७-६-'२९

बहनो,

तुम्हारी जिम्मेदारी बढ़ती जा रही है। 'आदर्श बाल-मंदिर' के बारेमें किशोरलालका जो पत्र आया है, वह साथमें भेजता हूँ। तुम पढ़ना और शिक्षकोंको पढ़नेके लिअे देना। मैं चाहता हूँ कि जिन बहनोंको दिलचस्पी है, वे खूब तैयार होवें। नारणदासको खूब तंग करके भी सीख लेना। अुससे भी ज्यादा होशियार बतानेवाला होना सम्भव है। मगर 'अेक ही साधे सब सधे' वाली बात है।

रसोअीघरको तो सुशोभित करोगी ही।

मौनवार — बापूके आशीर्वाद

७३

९-९-'२९

बहनो,

आज मुझे गुजराती 'नवजीवन', हिन्दी 'नवजीवन' और बचा हुआ 'यंग अिण्डिया' का काम करना है और वक्त कम है। अिसलिअे थोड़े को बहुत समझ लेना। यहाँ होने पर भी

मैं वहीं हूँ, अैसा मान लेना। सब अेकराग होना। अेक-दूसरेकी मदद करना और अपनेको और मंदिरको सुशोभित करना।

बापूके आशीर्वाद

७४

भोपाल,
१६–९–'२९

बहनो,

अभी मुझसे लम्बे पत्रोंकी आशा न रखना। सोमवारको मुझे समय थोड़ा ही रहता है। क्योंकि दोनों 'नवजीवन' का काम सोमवारको ही करना पड़ता है। यह देखना है कि सफरके आगे बढ़ने पर क्या होता है। यहाँ थोड़े ही दिन ठहरना है, फिर भी मीराबहनने पींजना-कातना सिखानेकी कक्षा खोली है। जमनाबहन वम्बअीसे स्त्रियोंके बनाये हुअे जो कपड़े लाअी हैं, अुन्हें बेचती हैं। प्रभावती अुसमें मदद देती है। कुसुम अपने काममें डूबी रहती है। मेरी तबीयत ठीक ही गिनी जा सकती है। परन्तु कोअी अपना आदमी भूल करे, तो बहुत चिढ़ जाता हूँ। अिससे समझता हूँ कि शरीर जैसा चाहता हूँ वैसा अभी नहीं हुआ, और शरीरसे मन अितना अलग नहीं हुआ कि वह कैसे भी शरीर पर पूरा काबू रख सके।

बापूके आशीर्वाद

मौनवार

कानपुर,
२३-९-'२९

बहनो,

तुम्हारी तरफसे गंगाबहनका लिखा हुआ पत्र मिल गया। मेरी गैरहाजरीमें वालजीभाअी वर्ग लेते हैं, यह बहुत अच्छा है। सभी अुनकी विद्वत्ताका पूरा लाभ लेना। अुनके पास जो है, वह मैं नहीं दे सकता। अिसलिअे आजकल जब वे अधिक समय दे सकते हैं, तो अुनके ज्ञानको लूटना।

लक्ष्मीबहन अब आ गअी होंगी। रमाबहन और डांही-बहन प्रार्थनामें मौजूद न रह सकें, यह समझा जा सकता है। कर्तव्यपरायणता ही प्रार्थना है। प्रत्यक्ष सेवाके लिअे योग्यता प्राप्त करनेको प्रार्थनामें बैठते हैं। मगर जहाँ प्रत्यक्ष कर्तव्य आ पड़े, वहाँ प्रार्थना अुसमें समा जाती है। समाधिमें बैठी हुअी स्त्री किसीको बिच्छू काटने पर चिल्लाते हुअे सुने, तो वह समाधि छोड़कर अुसकी मददके लिअे दौड़नेको बँधी हुअी है। दुःखीकी सेवामें समाधिकी पूर्ति है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

७६

लखनअू,
३०-९-'२९

वहनो,

लखनअू तो वहनोंके परदेका केन्द्र माना जाता है। यहाँ मुसलमान वहनें वहुत रहती हैं। अुन्होंने मुझसे पूछा कि अुनका दुःख कैसे मिटे? मैं तो अेक ही जवाव दे सकता हूँ न? अपने वन्धन हम खुद ही तैयार करते हैं। कल ही अिन वहनोंकी सभा थी। अुन्हें परदा रखनेके लिअे किसीने मजवूर नहीं किया था, मगर अुन्होंने खुद ही मान लिया कि परदेके विना चल ही नहीं सकता। अैसी अड़चनें दूर करनेके लिअे आश्रम है और अुसकी डोर तुम्हारे हाथमें है। तुम वन्धन तोड़कर, मर्यादा-धर्मका पालन करके, ज्ञान लेकर, सेवापरायण वन जाओ, तो दूसरी वहनोंके लिअे सहजमें ही अुदाहरण वन जाओगी।

मौनवार

वापूके आशीर्वाद

७७

गोरखपुर,
७-१०-'२९

वहनो,

समय-समय पर तुम याद आती रहती हो। सफरमें जैसे-जैसे वहनोंको देखता हूँ, वैसे-वैसे तुम्हारे सामने पड़े हुअे कामका विचार आया करता है और वैसे-वैसे समझता हूँ कि अच्छी तालीम तो हृदयकी है। अगर अुसमें शुद्ध प्रेम प्रगट हो, तो वाकी सव कुछ अपने आप आ जाता है। सेवाका क्षेत्र

अमर्यादित है। सेवाकी शक्ति भी अमर्यादित बनाओी जा सकती है, क्योंकि आत्माकी शक्तिकी कोओी मर्यादा है ही नहीं। जिसके हृदयके कपाट खुल गये हैं, अुसके हृदयमें तो सब कुछ समा सकता है। अैसे आदमीका जरासा काम भी खिल अुठता है। जिसके हृदय पर मुहर लगी हुओी है, अुसका ज्यादा काम भी नहींके बराबर होगा। विदुरकी भाजी और दुर्योधनके मेवेमें यही अर्थ छिपा हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

७८

हरद्वार,
१४-१०-'२९

बहनो,

आज हम गंगाके अुद्गमके नजदीक पहुँच गये हैं। यहाँसे बिलकुल नजदीक ही गंगाका सपाट भूमि पर बहना प्रारंभ होता है। अब आगे बढ़ने पर धीरे-धीरे पहाड़ आयेगा।

आज मौनवार होनेके कारण कुसुम, प्रभावती और कांति देवदासके साथ प्रसिद्ध स्थान देखने निकल गये हैं। यहाँ कुदरतकी तो कृपा है, मगर अिन्सानने सब जगह बिगाड़ दी है।

आज बस अितना ही।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

७९

मसूरी,
२१-१०-'२९

बहनो,

मसूरी अेक अैसी जगह है, जहाँ राग-रंगकी सीमा ही नहीं। यहाँ परदा तो शायद ही हो। धनिक स्त्रियाँ नाच-गानमें भी शरीक रहती हैं। होठ रंगती हैं, तरह-तरहके साज सजती हैं और पश्चिमका हानिप्रद अनुकरण खूब करती हैं। हमारा तो मध्यम मार्ग है। हमें अन्ध-विश्वास और परदेको नहीं पालना है, तो निर्लज्जता और स्वच्छन्दताको भी पोषण नहीं देना है। यह बीचका मार्ग सीधा है, मगर मुश्किल है। अिस मार्ग पर लगना और कायम रहना हमारा अुद्देश्य है।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

८०

मेरठ,
२८-१०-'२९

बहनो,

आज हम मेरठमें कृपलानीजीके आश्रममें हैं। अिसलिअे वहाँका वातावरण यहाँ भी दिखाअी देता है।

आज सम्मिलित भोजनालयके बारेमें लिखता हूँ। अब दीवाली आ पहुँची है। मेरे पास कुछ पत्र आ चुके हैं। यह पत्र मैं तुम्हें निर्भय बनानेके लिअे लिख रहा हूँ। तुमने

अेक वर्षका अनुभव लिया। सारा बोझा अुठाया। मैंने तो सिर्फ भोजनालयका रस ही चखा है। असलिअे मैं अपनी रायका कोअी मूल्य ही नहीं समझता। सच्ची कीमत तुम्हारी ही रायकी है। असलिअे तुम सब बहनें जिस निर्णय पर पहुँचोगी, अुसे तो मैं मानूँगा ही। मेरी सिफारिश अितनी तो ज़रूर है: बहुत चर्चा न करना। बहुत समय भी न लेना। ज़रूरी बातें करके झट निर्णय कर डालना और जो निर्णय करो अुस पर कायम रहना। अैसा करके ही हम आगे बढ़ेंगे। दोनों रायोंके पक्षमें दलीलें तो हो ही सकती हैं। किसी भी राय पर पहुँचनेमें कुछ न कुछ भूलें भी होती हैं। असकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

निश्चय करनेकी और अुस पर डटे रहनेकी आदत डालनेकी बड़ी ज़रूरत है। कोअी निश्चय करनेके बाद यदि यह लगे कि अुसमें पाप ही है, तो अलग सवाल है। पाप करनेके निश्चय दुनियामें हो ही नहीं सकते।

बापूके आशीर्वाद

८१

अलीगढ़,
४–११–'२९

बहनो,

आजकल मुझसे लम्बे पत्रोंकी आशा न रखना। नया वर्ष सबके लिअे सुखकर हो।

कलावतीके ज़ेवर चले गये, यह हमारे लिअे शर्मकी बात है। परन्तु मुझे कलावती पर दया नहीं आती। जो भाअी या बहन अपने गहने या कीमती चीज़ें अपने पास रखते हैं,

वे आश्रमका द्रोह करते हैं; और अुनके गहने वग़ैरा चोरी चले जायँ, तो अुन्हें रंज नहीं करना चाहिये। अिस अुदाहरणसे हम सब चेतें और अपने पेटी-पिटारे देख लें। आश्रमको अमानत दी हुअी चीज़ जब चाहिये तब वापस मिल सकती है, यह विश्वास सबको रखना चाहिये।

रसोअीघरका नियम बन गया यह अच्छा हुआ। अब अुसकी चर्चा हरगिज़ न होनी चाहिये। जिन पुराने परिवारोंको अलग भोजन बनानेकी अिजाज़त मिल जाय, वे ज़रूर अलग बनायें और अुनसे कोअी द्वेष न करे।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

८२

शाहजहाँपुर,
११-११-'२९

बहनो,

अिसके बाद तो अब मुझे अेक ही सोमवार लिखनेको रह जायगा।

हमारे यहाँ जो चोरियाँ होती रहती हैं, अुनका कारण हमारी गफलत है। यह रोज साबित होता जा रहा है। गफलत दो तरहकी है: हम सावधान नहीं रहते और कअी बार समझाने पर भी कोअी गहने रखती है, तो कोअी रुपया रखती है। चोर तो दुनियामें रहेंगे ही। अुनसे बचनेके तीन अुपाय हैं: पासमें कुछ रखा ही न जाय, यह पूर्णता तो आ नहीं सकती। जितना रखें अुसके लिअे अुतने सावधान रहें। और तीसरा अुपाय, चोरको सरकारके दंड रूपी भयसे चमकाना

और खुद भी अुसे दंड देनेमें शरीक होना। हमने अिस तीसरे अुपायका त्याग कर दिया है। पहला अुपाय हमारा आदर्श है, दूसरा अुपाय हम आजकल कर रहे हैं। संग्रह जहाँ तक हो सके कम किया जाय और जितना अनिवार्य है, अुसकी चोरी वगैरासे रक्षा की जाय। अिसमें जैसी मैंने बतायी वैसी गफलत रही है।

यह पत्र सबके लिअे हो गया। अिसलिअे शामकी प्रार्थनाके समय भी पढ़नेके लिअे देना।

भोजनालयके भारसे घबरा न जाना। जो मदद चाहिये वह माँग लेना, परन्तु हारना मत। कोअी काम हाथमें न लेना ठीक है, परन्तु ले लें तो अुसके लिअे मर मिटना चाहिये। जो अितनी दृढ़तासे काम करता है, अुसे भगवान सहायक होता ही है। गजेन्द्र मोक्ष और कछुवा-कछुवीके भजनमें यही सीख है।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

८३

प्रयागजी,
१८-११-'२९

बहनो,

संतोकके ऑपरेशन परसे अेक विचार आया सो लिख देता हूँ। हिन्दुस्तानमें बहनोंको अपने शरीर डॉक्टरको दिखलानेमें संकोच होता है। यह अच्छा नहीं, परन्तु खराब रिवाज है। अिससे हमने बहुत नुकसान अुठाया है। अिस शर्मकी जड़में पवित्रता नहीं परन्तु विकार है। मैं चाहता हूँ कि हम अिस

अंध-विश्वासको दूर कर दें। संतोकका ऑपरेशन अगर हरिभाओीको न करने दिया होता, तो वह न होता और शरीर ख़तरेमें पड़ जाता। पुरुष डॉक्टरको भी अपना शरीर दिखानेमें किसी स्त्रीको संकोच नहीं रखना चाहिये। पासमें अपने सगे-संबंधी तो होते ही हैं। अिसलिअे भयका कोओी भी कारण नहीं हो सकता। तुम्हें पता नहीं होगा कि मैंने तो बा की आख़िरी प्रसूतिके समय पुरुष डॉक्टरको ही रखा था। बा का अेक ऑपरेशन कराया था, वह भी पुरुष डॉक्टरके हाथसे। अुसमें बा ने कुछ खोया नहीं था। अैसी बातों में हमें अपने मनमें सिर्फ़ अेक अलग ढंगकी वृत्ति भर पैदा करनी होती है। अिसलिअे तुम्हारे सामने यह बात रखी है। अब अिस बारेमें मुझसे पूछना हो, तो मंगलवार २६ तारीखको पूछना।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

८४

वर्धा,
९-१२-'२९

बहनो,

अिस बारकी धाँधलीमें दो बातें रह गअी हैं। अेकके लिअे तो देखनेके बाद समय ही नहीं रहा था। दूसरीको भूल गया था।

आख़िरी पहले लेता हूँ। हमारी स्त्रियाँ पुरुष डॉक्टरोंको अपने अवयव नहीं दिखातीं और शस्त्रक्रिया भी नहीं करने देतीं। यह झूठी शर्म है और अिसकी अुत्पत्ति विकारमय स्थितिसे होती है। अिस मामलेमें मैं तो पश्चिमका रिवाज पसन्द करता हूँ। मुझे मालूम है कि अुससे कभी-कभी अनिष्ट परिणाम हुअे हैं। दुष्ट डॉक्टर और भोली तथा झट विकारवश हो जानेवाली स्त्रीका

मिलाप होने पर दुराचार हुअे हैं। अैसा तो दुनियामें हर हालतमें होता रहा है। मगर अिससे हम अच्छे और ज़रूरी काम करना बन्द न करें। हमें अपनेमें भरोसा होना चाहिये। अिसलिअे संतोकका डॉ० हरिभाअीसे आपरेशन कराना मुझे बहुत ही अच्छा लगा और संतोककी बहादुरीके बारेमें मेरी राय मजबूत हुअी। फिनिक्समें तो यह प्रथा ही डाल दी गअी थी। देवदासके जन्मके समय पुरुष डॉक्टर था। बा को योनिकी बीमारी थी। अुसकी शस्त्रक्रिया करनी थी। वह पुरुष डॉक्टरसे कराअी थी। अैसे मामलोंमें बा बहुत बहादुर और भोली है। हाँ, अैसे अवसर पर अुसे मेरी मौजूदगीकी ज़रूरत अवश्य रहती है। मगर यह तो छोटीसी बात है। हरअेकको अैसे मौके पर कोअी भरोसेका आदमी चाहिये और यह ठीक है। अितना सब लिखनेका अुद्देश्य यही है कि हम आश्रममें अिस किस्मकी हिम्मत पैदा करें और झूठी शर्म छोड़ें। झूठी शर्मके कारण सैकड़ों या हजारों स्त्रियाँ तकलीफ पाती हैं। विद्यावतीका अुदाहरण तो हमारे पास ही है। वह तो स्त्री डॉक्टरको भी अपने अंग दिखलानेको तैयार नहीं थी। हम तो शुकदेवजी जैसी निर्दोषिता साधना चाहते हैं। जब तक वह न आअी हो, तब तक अैसा दंभ भी न करें। अैसे पुरुष हैं, जिन्हें स्त्री-मात्रके स्पर्शसे विकार होता है। अैसी स्त्रियाँ हैं, जिनका हर मर्दके स्पर्शसे यही हाल होता है। अैसे लोगोंको तो जबरदस्तीसे भी दूर रहना अुचित है, फिर भले ही अपना शरीर रोगोंसे पीड़ित रहे। मैंने तो सिर्फ झूठी शर्म छोड़नेकी बात लिखी है। जिसे स्पर्शमात्रसे विकार होनेका डर हो, अुसे साफ दिलसे अैसा स्वीकार कर लेना चाहिये और अपनी मर्यादामें रहना चाहिये। अैसी विकारी

स्थिति अेक तरहकी बीमारी है और अुसे पर-पुरुष या स्त्रीका स्पर्श छोड़ना ही चाहिये। समय पाकर सम्भव है वह रोग मिट जाय।

अिस पत्रका यह भाग दो-चार बार पढ़कर भी समझनेकी कोशिश करना। समझमें न आये तो मुझसे पूछना। बालजीभाअीसे पूछोगी तो वे भी समझा देंगे। है तो सरल ही।

दूसरी बात अुमियाकी शादीसे पैदा होती है। विवाह होते ही अुमियाने तुरंत नाक-कानमें गहने पहन लिये। यह मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। अिसमें देनेवालेका भी कसूर था और लेनेवालेका भी। यह बात आश्रमके रिवाजके विरुद्ध हुअी। अुमिया अपने ससुराल जाकर पहन सकती थी, मगर वह बेचारी रह न सकी। यह घटना मैं अपना दुखड़ा रोनेके लिअे बयान नहीं कर रहा हूँ, मगर अुससे सबक सिखानेके लिअे ही किया है। अुमियाका अनुकरण कोअी और लड़की न करे। बेचारी अुमियाको आश्रमकी तालीम थोड़ी ही मिली है। जयसुखलालने अुस पर पूरा ध्यान नहीं दिया। माँ भली है और पुरानी सब बातोंको अच्छा-बुरा सोचे बिना संग्रह करनेवाली है। अिस-लिअे अुसका दोष क्षंतव्य है। मैंने अुमिया और अुसके पतिको सावधान कर दिया है। पतिकी तरफसे तो छोटी-सी चूड़ीके सिवाय कुछ भी नहीं मिला। मगर आश्रमको जाननेवाली स्त्री या कन्या अैसा कभी न करे, यह बतानेके लिअे मैंने यह किस्सा बयान किया है। मगर अिसमें से दूसरा भी सार निकालना चाहता हूँ। स्त्रीको विकारी पुरुषोंने गिराया है। अुसे अपनेको लुभानेवाले हाव-भाव सिखाये हैं, बनाव-सिंगार करना सिखाया

है । स्त्रीने अिसमें अपनी पराधीनता नहीं देखी । अुसे भी विकार अच्छे लगे, अिसलिअे नाक छेदी, कान छेदे, और पैरोंमें बेड़ियाँ पहनकर गुलाम बनी । नाककी नथसे या कानकी बालीसे लम्पट पुरुष स्त्रीको अेक घड़ीमें घसीट ले जाय । अिस प्रकार अपंग बनानेवाली चीज़ समझदार स्त्री क्यों पहनती होगी, यह मेरी समझमें नहीं आता । सच्ची शोभा तो हृदयमें है । आश्रमकी प्रत्येक स्त्री बाह्य शोभासे, नाक छिदवानेसे बचे । हम पशुकी नाक छेदते हैं, क्या अितना काफ़ी नहीं है ? अब छः बज गये हैं, अिसलिअे बन्द करता हूँ । सुबह-सुबह तुम्हारा स्मरण किया, क्योंकि तुमसे बहुत कुछ लेना है ।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

८५

वर्धा,
१६-१२-'२९

बहनो,

पिछली बार तुम्हें जी भरकर लिखा था, अिसलिअे आज थोड़ेमें ही निपटा देना चाहता हूँ । और बहुतसे पत्र लिखने हैं और समय पूरा हो गया है । मैं तो बहुत ही लिखा करता हूँ । अुसमें से तुम जो पचा सको, वह ले लो । बाकी छोड़ सकती हो । जो समझ लो और स्वीकार करो, अुसे पूरा करनेकी कोशिश करो ।

मौनवार बापूके आशीर्वाद

८६

दिल्ली,
२३-१२-'२९

बहनो,

दिल्लीमें सुबहकी प्रार्थनाके बाद यह लिख रहा हूँ। ठंढ कड़ाकेकी है। अैसी कि मीराबहनके पैर ठिठुर गये हैं और वह बिस्तरमें घुसकर मेरे पास ही पड़ी है। लाहौरमें तो यहाँसे भी ज्यादा सरदी है।

मगर मुझे ठंढकी बात नहीं लिखनी है। मुझे तो हमारे कर्तव्यके बारेमें लिखना है। अभी तो अितना ही लिखना है कि जो अपने स्वार्थका विचार करते होंगे, अुनका पतन ज़रूर होगा। जो सेवापरायण रहेंगे, अुन्हें पतनका समय भी कहाँसे मिलेगा? मेरा सदा यह अनुभव रहा है कि जितने गिरे हैं, वे सत्य-विमुख रहे हैं और हुअे हैं। पाप कर्मको अन्धेरेकी ज़रूरत होती है। वह ज्यादातर छिपकर ही होता है। अैसे मनुष्य देखे जाते हैं जिन्होंने शर्म छोड़ दी है और खुल्लम-खुल्ला पाप-कर्म करते हैं; और कुछ अैसे भी हैं जो पापको पुण्य मानते हैं। हम अैसोंकी बात तो नहीं करते। हमारे बहुतसे काम रुक गये हैं, अिसका अेक कारण, जैसा मैंने अूपर कहा है, स्वार्थ है और अुस स्वार्थमें हमारे और समाजके पतनकी सम्भावना छिपी हुअी है। अिस पर सोचना, मनन करना और अिस दृष्टिसे हरअेकने अपने-अपने जीवनका निरीक्षण करना।

बापूके आशीर्वाद

लाहोर,
३०-१२-'२९

बहनो,

तुम्हें आज मौनवारको याद कर रहा हूँ, यह बतानेको ही यह पत्र लिख रहा हूँ। वहाँ ५ तारीखको पहुँचनेकी आशा रखता हूँ। ठंड काफी पड़ रही है। अिस समय चारों तरफसे आवाज़ आ रही है। मैं सभामें बैठा हूँ, अिसलिअे अधिक लिखनेकी कोशिश नहीं करूँगा।

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

[सन् १९२६ में बापू क्षेत्रसंन्यास लेकर अेक बरस साबरमती आश्रममें ही रहे थे। अुस वक्त अुन्होंने आश्रमकी बहनोंको संगठित करके किसी न किसी सार्वजनिक कार्यमें लगा देनेकी कोशिश की थी। अिसके लिअे अुन्होंने आश्रमकी बहनोंकी अेक अलग प्रार्थना सवेरे सात बजे शुरू की थी, क्योंकि सुबह चार बजेकी प्रार्थनामें सब बहनें आ नहीं सकती थीं। और शामकी प्रार्थना लगभग सार्वजनिक स्वरूपकी थी। आश्रमवासियोंके लिअे खास तौर पर कुछ कहना होता, तो बापू सवेरे चार बजेकी प्रार्थनामें कहते। अुसका लाभ बहुतसी बहनोंको नहीं मिलता था, अिसलिअे बहनोंसे कहनेका काम अुन्होंने अुनकी अिस सात बजेकी प्रार्थनामें रखा था। बादमें जब-जब वे बाहर जाते, तब अपने मौनवारको आश्रमकी बहनोंको विशेष पत्र लिखकर अुनसे संबंध बनाये रखते। सन् '२६ के दरमियान मणिबहन (पटेल) भी ज्यादातर आश्रममें ही रहती थीं। अुन्होंने बहनोंके सामने दिये गये बापूके प्रवचनोंके नोट ले रखे थे। यद्यपि वे बहुत छुटपुट और संक्षिप्त हैं, फिर भी जितने हैं, अुतने बोधप्रद होनेके कारण यहाँ दिये जाते हैं।]

बहनोंकी प्रार्थनाके पहले तीन श्लोक द्रौपदीके चीरहरणके समय अुसने श्रीकृष्णकी जो प्रार्थना की थी अुसके हैं। वे अिस प्रकार हैं :

गोविन्द, द्वारिकावासिन्, कृष्ण, गोपीजनप्रिय।
कौरवैः परिभूतां मां किं न जानासि केशव॥
हे नाथ, हे रमानाथ, व्रजनाथार्तिनाशन।
कौरवार्णवमग्नां माम् अुद्धरस्व जनार्दन॥
कृष्ण, कृष्ण, महायोगिन्, विश्वात्मन्, विश्वभावन।
प्रपन्नां पाहि गोविन्द, कुरुमध्येऽवसीदतीम्॥

अिन पर विवेचन करते हुअे बापूने कहा कि :

मेरा आदर्श यह है कि पुरुष पुरुष रहते हुअे स्त्री बने और स्त्री स्त्री रहते हुअे पुरुष बने । पुरुषके स्त्री बननेका अर्थ यह है कि वह स्त्रीकी नम्रता और विवेक सीखे और स्त्रीके पुरुष बननेका मतलब यह है कि वह अपनी भीरुता छोड़कर हिम्मतवाली और बहादुर बन जाय ।

यह कहा जाता है कि स्त्रियोंमें अीर्ष्या-द्वेष बहुत होता है । परन्तु पुरुषोंमें अीर्ष्या नहीं होती सो बात नहीं । अिसी तरह तमाम स्त्रियाँ अीर्ष्यालु होती ही हैं, सो बात भी नहीं । बात अितनी ही है कि स्त्रीको घरमें ही चौबीसों घंटे रहना पड़ता है, अिसलिअे अुसकी अीर्ष्या अधिक जाहिर होती है ।

* * *

तुम्हें सिखानेमें मेरे धीरजका पार नहीं रहेगा । जहाँ तुम्हारी जिज्ञासाका अंत होगा, वहाँ मेरे धीरजका अन्त होगा ।

* * *

पुरुष और स्त्री दोनों निर्भय हो सकते हैं । पुरुष यह मानता है कि वह निर्भय रह सकता है, मगर यह हमेशा सच नहीं होता । अिसी तरह स्त्रियाँ अपनेको निर्बल मानकर जो अबला कहलवाती हैं, वह भी ठीक नहीं । अुन्हें भयभीत रहनेकी ज़रा भी ज़रूरत नहीं । मीराबाअीकी अेक बात मैंने परसों सुनी सो कह दूँ । मीराबाअी वृन्दावन गअीं और अेक साधुका दरवाज़ा खटखटाया । साधुने कहा कि मैं किसी भी स्त्रीका मुँह नहीं देखता । अिस पर मीराबाअीने अुत्तर दिया कि आप कौन हैं? मैं तो अेक ही पुरुषको जानती हूँ, और वह अीश्वर

है। यह सुनकर अुस साधुने दरवाजा खोल दिया और मीराबाओीको साष्टांग नमस्कार करके कहा कि आज मेरी आँखें खुलीं। मैं अंधकूपसे बाहर निकला हूँ।

*   *   *

स्त्री और पुरुष दोनों जब तक विकारवश हैं, तब तक दोनोंको भय है।

द्रौपदीने अुतना ही बल दिखाया, जितना युधिष्ठिरने दिखाया।

द्रौपदीने पाँच पतियोंसे शादी की, तो भी वह सती कहलाती है। अुसे सती कहनेका कारण यह है कि अुस जमानेमें पुरुष जैसे कअी स्त्रियोंसे विवाह कर सकते थे, वैसे ही (अमुक प्रदेशमें) स्त्रियाँ अेकसे अधिक पुरुषोंसे विवाह कर सकती थीं। विवाह सम्बन्धी नीति युग-युग (और देश-देश) में बदलती रहती है।

[दूसरी तरहसे देखें तो] द्रौपदी बुद्धिका रूपक है; और पाँचों पाँडव वशमें आओ हुओ पाँचों अिन्द्रियाँ हैं। अिन्द्रियाँ वशमें आ जायँ, यह तो अच्छा ही है। पाँचों अिन्द्रियाँ वशमें आ गओं और संस्कृत हो गओं, यानी बुद्धिने अिन्द्रियोंसे शादी कर ली।

द्रौपदीने जो ताकत दिखाओी है, वह अगाध शक्ति है। भीम भी द्रौपदीसे डरता था। युधिष्ठिर जैसे धर्मराजा भी अुससे डरते थे।

अिस वक्त द्रौपदीने जो प्रार्थना की थी, वह जब मैंने जेलमें महाभारतमें पढ़ी, तो मैं खूब रोया था।

मेरी दृष्टिसे द्रौपदीकी अिस प्रार्थनाकी शक्ति अपूर्व है। अुत्तर हिन्दुस्तानमें असंख्य पुरुष यह प्रार्थना गाते हैं।

शब्दोंकी शक्ति भी अुनके पीछे रहनेवाली तपश्चर्याके हिसाबसे घटती बढ़ती है। ॐ शब्द क्या है? केवल अ–अु–और म तीन अक्षर अिकट्ठे करके अेक शब्द पैदा किया, मगर अिसकी कीमत तो अुसके पीछे की जानेवाली तपश्चर्यामें समायी हुअी है। ज्यों-ज्यों तपश्चर्या बढ़ती है, त्यों-त्यों अुसकी कीमत बढ़ती है। अिसी तरह यह द्रौपदी है। यह भी व्यासजीका अेक कल्पित पात्र माना जा सकता है। अैसी स्त्री हुअी हो या न भी हुअी हो। अेक तो व्यासजीकी तपश्चर्या; और अुन्होंने द्रौपदीसे जो प्रार्थना कराअी है वह बादमें करोड़ों मनुष्योंने की, अिसलिअे भी अिस प्रार्थनाकी कीमत बढ़ गअी।

गो-विन्दका अर्थ है अिन्द्रियोंका स्वामी। गोपी का अर्थ है हजारों अिन्द्रियाँ। गोपी-जन-प्रिय अर्थात् बड़े समुदायको प्रिय, या यों कहिये कि निर्बल मात्रको प्रिय। द्रौपदी कौरवोंसे घिरी हुअी थी। कौरव यानी हमारी तमाम दुष्ट वासनाअें। वह कहती है कि केशव, तू मुझे कैसे नहीं जानता? यह आर्तनाद है। दुखियोंकी आवाज़ है। हम सबको दुष्ट वासनाअें कहाँ नहीं होतीं? किस समय विकार नहीं होता? द्रौपदी कहती है कि कौरवोंने मेरे चारों ओर घेरा डाल रखा है। यहाँ कौरवोंका अर्थ दुष्ट पुरुष भी हो सकता है। परन्तु दुष्ट पुरुषोंकी अपेक्षा हम दुष्ट वासनाओंसे अधिक घिरे हुअे हैं। अिसलिअे कौरवोंका अर्थ दुष्ट वासना ही करना अच्छा है।

द्रौपदी अीश्वरकी दासी है। और दासीको अीश्वरके साथ भी लड़नेका हक है। अिसलिअे वह कहती है, हे नाथ, हे प्रभु, हे रमानाथ, यानी हे लक्ष्मीपति अर्थात् सारे जगत्के पति,

मोक्ष देनेवाले, आत्मदर्शन करानेवाले; मैं कौरवरूपी समुद्रमें डूब गअी हूँ, यानी अनेक विकारोंमें डूब गअी हूँ, दुष्ट वासनाओंसे भरी हूँ, मेरा अुद्धार कर।

कृष्ण कृष्ण, अिस प्रकार दो बार द्रौपदीने कहा। मनुष्यको खूब खुशी हो तब, या बहुत दुःख हो तब, वह दो बार बोलता है। तेरे शरण आअी हूँ, मेरी रक्षा कर, दुष्ट वासनाओंसे घिरकर मैं शिथिल हो गअी हूँ। मेरे गात्र ढीले पड़ गये हैं। मेरा अुद्धार कर।

*　　　　*　　　　*

बम्बअीमें अेक जानकीबाअी नामकी महिला है। सन् १९१५ में जब मैं रेवाशंकर भाअीके यहाँ था, अुस वक्त वह मुझे मिलनेके लिअे वहाँ आअी और कहने लगी: मैं यह करती हूँ, वह करती हूँ। मुझे अुस समय अुस पर विश्वास नहीं हुआ। बादमें जब मैं द्वारका गया, तब वह भी वहाँ पहुँची। अिसलिअे मैंने अुसके बारेमें ज्यादा जाँच की, तो मुझे मालूम हुआ कि वह दुष्टसे दुष्ट मनुष्योंके बीच भी निर्भय होकर घूमती रहती है। बस अुसे यह ख़याल हो गया है कि मैं दुष्टसे दुष्ट मनुष्योंके बीचमें रहकर भी अपना सतीत्व कायम रखूँगी। और होता भी यही है कि कोअी गुस्सेमें भी अुसे 'तू' नहीं कहता। वह दुष्ट मनुष्योंके बीचमें सिंहनीकी तरह घूमती है।

*　　　　*　　　　*

हम द्रौपदीकी तरह गरीब हैं, क्योंकि हममें अनेक प्रकारकी वासनाअें, अनेक तरहकी गन्दगियाँ भरी हैं। हमारे गरीब होनेका सबूत यह है कि हम सब साँप वगैरासे डरते हैं।

आश्रममें मैं सबसे बड़ा माना जाता हूँ, फिर भी डरता हूँ। मतलब यह कि मैं भी द्रौपदीसे गरीब हूँ।

द्वारकाका अर्थ है सारा जगत् या हम खुद — काठियावाड़में पोरबन्दरके पासका छोटासा गंदा गाँव नहीं।

* * *

स्त्रियोंने ऐसा क्या किया होगा कि अुनके बारेमें तुलसीदास जैसोंने भी बुरे विशेषण बरते हैं? अिसे तुलसीदासका दोष कहिये या परिस्थितिका कहिये, मगर यह दोष तो है ही।

ये पुराने कानून ऋषि-मुनियों यानी पुरुषोंने ही बनाये हैं। अिनमें स्त्रियोंके अनुभवकी कमी है। दरअसल स्त्री-पुरुषोंमें किसीको अूँचा या नीचा न मानना चाहिये। दोनोंके स्थान और कार्य अलग-अलग हैं। दोनोंकी मर्यादा ओश्वरकी बनाओ हुओ है।

* * *

आत्माका अुद्धार आत्मा ही कर सकती है। आत्माका बंधु आत्मा ही है। स्त्रियोंका अुद्धार स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। अिसके लिअे तपस्याकी ज़रूरत है। यह बात सच है कि पुरुषोंसे स्त्रियोंमें ज्यादा तपस्या है, मगर तपस्या ज्ञानपूर्वक होनी चाहिये। अभी तो वे मज़दूरोंकी तरह लाचारीसे काम करती हैं।

यह कहा जा सकता है कि स्त्रीकी कोओ भी रक्षा करनेवाला नहीं है। वह खुद ही अपनी रक्षा कर सकती है। वह स्वावलम्बी बन सकती है या नहीं, अिस प्रश्नका अुत्तर अन्तरमें से यही निकलता है कि हाँ। वह सत्याग्रह सीख ले, तो पूरी तरह स्वतंत्र और स्वावलम्बी बन जाय। अुसे किसी पर आधार न रखना पड़े। अिसका अर्थ यह नहीं कि वह किसीसे

लोटाभर पानी भी न ले। ज़रूर ले। मगर दुनिया न दे, तब निराधार न बन जाय। मिलनेवाले पदार्थोंका अुपयोग करते हुअे भी हम मनको अुनसे अलग रखें, तो स्वावलम्बी ही हैं। फिर तो सारी दुनियाका आसरा लें, तो भी हम पराधीन नहीं बनते। कोअी आश्रय न दे, तो भी हम यही समझें कि अच्छा, न दे। अुस समय हम क्रोध न करें। किसीकी बुराअी न करें। अिसीका नाम सत्याग्रह है। हम बुद्धिसे विचार करते हैं कि हमें डरना नहीं चाहिये। अितना ही काफी नहीं है। अैसा दिलसे होना चाहिये। हमारे डर छोड़ देनेका अर्थ यह नहीं कि हम दुनियाकी परवाह न करें।

यह विचार छोड़ देना चाहिये कि मेरा कोअी नहीं है। सबका आधार अीश्वर ही है। आजकल स्त्रियोंकी जो हालत है, अुसके लिअे विचार करने पर अुनके पतियों पर दोष डाला जा सकता है। परन्तु स्त्रियोंको तो यही सोचना है कि हम खुद अपनी कमजोरी निकाल डालें।

* * *

संसारमें प्रार्थना अेक ही हो सकती है। अगर हम वह प्रार्थना रोज करेंगे और अुसे समझकर करेंगे, तो वह मनके भीतर रम ही जायगी। केशव तो हमारे पास ही हैं। वह कोअी द्वारकामें नहीं रहता। यह तो कविकी भाषा है। द्रौपदी भूल गअी कि केशव अुसके पास हैं। मगर कृष्णने तो वहाँ बैठे-बैठे अुसका चीर बढ़ाया था। हमारे मनमें भी बुरी वासनाअें अुठती हों, दुष्ट विचार आयें, तो हमें अैसा लगना चाहिये कि अरे, अैसे विचार क्यों आते हैं? अुस समय अिस श्लोकको याद करें।

[बहनोंकी प्रार्थनाके श्लोकोंका अर्थ समझानेके बाद थोड़े दिन 'हिन्द स्वराज' पढ़नेका कार्यक्रम रखा गया था। अुसके बारेमें बापू अिस प्रकार बोले थे:]

यह पुस्तक केवल राजनीतिकी पुस्तक नहीं है। राज-नीतिके बहाने धर्मकी थोड़ी-सी झाँकी करानेका प्रयत्न किया गया है। हिन्द स्वराजका अर्थ क्या? धर्मराज्य या रामराज्य। मैं पुरुषोंकी जितनी सभाओंमें बोला हूँ, अुतनी ही स्त्रियोंकी सभाओंमें भी बोला हूँ। वहाँ मैंने स्वराज्य शब्द नहीं, परन्तु रामराज्य शब्द अिस्तेमाल किया है।

यह पुस्तक कितने ही वर्षोंके चिन्तनका सार है। जैसे अिन्सानसे नहीं रहा जाता तब वह बोलता है, वैसे ही मुझसे भी नहीं रहा गया तब मैंने अिसे लिखा है। यह पुस्तक खास तौर पर अपढ़ लोगोंके लिअे लिखी गअी है।

*　　　*　　　*

हमें माँ-बापके चरित्रकी जो विरासत मिले, वही सच्ची विरासत है। वह आध्यात्मिक विरासत कहलाती है। अुसमें वृद्धि करना हमारा धर्म है। बाप अेक लाख रुपये छोड़ गया हो और लड़का अुसके दस लाख कर ले, तो क्या वह यह कहेगा कि कैसा बाप था जो अेक लाख ही जमा किये; जबकि मैं कैसा होशियार हूँ कि दस लाख अिकट्ठे कर लिये? अैसा कहनेवाला कपूत कहलाता है। अिसमें अभिमान है। हमें तो माँ-बापके धनकी विरासतमें नहीं, बल्कि चरित्रकी विरासतमें — आध्यात्मिक विरासतमें — वृद्धि करनी है। फिर भी हमें अभिमान

नहीं करना चाहिये। नम्रताके विना आध्यात्मिक विरासत मिलती ही नहीं।

* * *

जो चीज़ हम जन्मसे ही न करते हों, जैसे कि हम लोग मांस नहीं खाते, अुसमें हमारा त्याग नहीं कहा जा सकता। यह तो हमारे लिअे स्वाभाविक ही था। अिसमें हमने पुरुषार्थ नहीं किया।

* * *

मनुष्यका सौन्दर्य अुसकी नीतिमें है। पशुकी सुन्दरता अुसके शरीरसे देखी जाती है। गायको देखकर हम यह कहते हैं कि अुसकी चमड़ी देखो, अुसके बाल देखो, अुसके पैर देखो और अुसके सींग देखो; मगर मनुष्यके लिअे यह नहीं कहा जा सकता कि साढ़े पाँच फुट अूँचा होनेसे सुधरा हुआ है और साढ़े चार फुट अूँचा होनेसे बिगड़ा हुआ है। साढ़े पाँच फुटसे अेक अिंच अधिक लम्बा हो, तो अधिक सुधरा हुआ नहीं कहा जायगा। मनुष्यके सुधारका आधार तो अुसके हृदय पर है, अुसकी धन-सम्पत्ति पर नहीं। यहाँ आश्रममें हमने हृदयके गुणोंका विकास करना ही धर्म माना है। हम खाते-पीते हैं, अींट-पत्थरके मकान बनवाते हैं, परन्तु लाचारीसे। मिट्टीके मकानोंकी हमने अवहेलना नहीं की। मिट्टीके मकानोंके भीतर रहकर हम शर्मायें नहीं। हम वैभवमें पड़ गये हों तो ही शर्मायें। वैभव बढ़ायें तो हमें शर्मके मारे गड़ जाना चाहिये। हाँ, सेवाके लिअे हमारे पास ज़रूर धन हो सकता है। अैसे धनका संग्रह हमें लाचारीसे करना पड़ता है। मगर कुछ लोग तो अपने लोभको ही धर्म समझकर धन अिकट्ठा करते हैं। यह बात ठीक नहीं।

जितना बाहरका प्रपंच बढ़ाते हैं, अुतना भीतरी विकास कम होता है, अुतनी धर्मकी हानि होती है।

* * *

बंबअीके बाजारमें हमारे व्यापारियोंको करोड़ों रुपयेकी कमाअी होतीहै। अिससे हमें खुश नहीं होना, बल्कि रोना चाहिये। क्योंकि बम्बअीका व्यापारी दलाली करके जब पाँच करोड़ कमाता है, तब अंग्रेज़को पचानवे करोड़ मिलते हैं। और वह भी हिन्दुस्तानसे और गरीबोंको चूसकर। अुसका हमें पता नहीं चलता, क्योंकि तेंतीस करोड़के खाये जानेमें भी कुछ समय तो लगेगा ही न?

* * *

[अंगमेहनतके बारेमें अेक दिन बोले:]

मज़दूर अगर अपना तमाम काम अीश्वरार्पण करके करे, तो अुसे आत्मदर्शन हो सकता है। आत्मदर्शन यानी आत्म-शुद्धि। असलमें तो अंगमेहनत करनेवालेको ही आत्मदर्शन होता है, क्योंकि 'निर्बलके बल राम' हैं। निर्बल यानी शरीरसे निर्बल नहीं, यद्यपि अुसका बल भी तो राम ही है। यहाँ तो साधन-संपत्तिमें निर्बल अैसा अर्थ लेना है। मज़दूरमें नम्रता आनी चाहिये। केवल बुद्धिका विकास होनेका अर्थ तो राक्षसी बुद्धिका विकास होगा। अिसलिअे केवल बुद्धिका काम करते रहनेसे तो हममें आसुरी वृत्ति आती है। अिसीलिअे गीतामें कहा है कि मेहनत किये बिना खाना चोरी है। मज़दूरीमें नम्रताका भाव है। अिसीलिअे वह कर्मयोग है। मगर जो पैसोंके लिअे ही मज़दूरी करते हैं, अुनकी मज़दूरी कर्मयोग नहीं कही जा सकती; क्योंकि वे केवल पैसोंके लिअे मज़दूरी करते

हैं। पैसोंके लिअे पाखाने साफ करना कोअी यज्ञ नहीं है। परन्तु सेवार्थ, सफाअीकी दृष्टिसे, दूसरोंके भलेके लिअे पाख़ाने साफ करना, यज्ञ कहलाता है। सेवाभावसे, नम्रतापूर्वक, आत्म-दर्शनके लिअे कोअी मज़दूरी करे तो अुसे आत्मदर्शन हो। अैसे मज़दूरी करनेवालेको आलस्य तो आना ही नहीं चाहिये। वह अतंद्रित होगा।

*　　　*　　　*

कठौती कूँडेको क्या हँस सकती है, जबकि दोनोंके आकार लगभग अेकसे हैं? अिसी तरह पुरुष स्त्रीको क्या कह सकता है या अुस पर क्या कटाक्ष कर सकता है? स्त्रियोंमें अनेक संशय, वहम, वासनाअें और डर भरे हैं। पुरुषोंमें भी ये सब बातें हैं। कुछ शास्त्री कहते हैं कि स्त्रीको मोक्ष नहीं मिलता। मगर मेरे देखनेमें अैसा नहीं आया। वैष्णव संप्रदायमें तो यह कल्पना है ही कि मीराबाअी जैसी भक्त कोअी नहीं। मेरा खयाल है कि अगर मीराबाअीको मोक्ष न मिले, तो किसी भी पुरुषको नहीं मिल सकता।

*　　　*　　　*

खेतमें किसान सोता है, तुम या अंग्रेज अफसर थोड़े ही वहाँ सोनेवाले हो? मगर अुसका भाव कौन पूछता है? अुसके जीवनमें रस भी क्या होता है? सवेरे अुठकर खेतमें काम करना है, अिसलिअे वह वहीं बिस्तर डाल लेता है। कभी साँप काट ले तो मर जाय। मगर अैसा जीवन किसान मजबूरन बिताता है। यदि यह अुसका त्याग माना जाय, तो वह मजबूरीसे किया हुआ त्याग है। यदि कोअी अुसे रेलगाड़ीमें बिठाये तो वह न बैठे, अैसा थोड़े ही है! वह तो तुरन्त बैठ

जाय। अिन सब बातोंके पीछे ज्ञान हो, तो अुसका जीवन धन्य हो जाय। कुछ ज्ञानी-जन किसानों जैसा या जड़भरत जैसा जीवन बिताते हैं। यह सब अुनका जान-बूझकर किया हुआ होता है।

*   *   *

मैं मिट्टीका पुतला बनाकर ज़रूर पूजा करूँ, अगर अुससे मेरा मन हलका होता हो। मेरा जीवन सार्थक होता हो तो ही बालकृष्णकी मूर्तिकी की हुअी पूजा कामकी है। पत्थर देवता नहीं है, मगर पत्थरमें देवताका निवास है। मैं अगर मूर्तिको चंदन चढ़ाकर, चावल चढ़ाकर अुससे कहूँ कि आज अितनोंके सिर अुतार लेनेकी शक्ति मुझे दे, तो तुममें से जो लड़की काबिल होगी वह तो अुस मूर्तिको अुठाकर कुँअेमें डाल देगी या तोड़कर चूर-चूर कर डालेगी।

*   *   *

अगर हम समदर्शी बनना चाहते हों, तो हमें अैसा हिसाब बैठाना चाहिये कि जो सारी दुनियाको मिले सो मुझे मिले। अगर तमाम जगत्को दूध मिले, तो हमें भी दूध मिले। अीश्वरसे हम कह दें कि अगर मुझे दूध पिलाना हो तो सारे संसारको दूध पिला। मगर अैसा कौन कह सकता है? जिसमें अितनी करुणा हो, जो दूसरोंके लिअे मेहनत-मज़दूरी करता हो। हम अिस कानूनको नहीं निभा सकते, परन्तु अुसे समझ तो ज़रूर सकते हैं। हम अभी तो अीश्वरसे अितना ही माँगें कि हम अितने ज्यादा गिरे हुअे हैं कि जो कुछ हम करें अुसे वह निभा ले। हम आगे न बढ़ें, परन्तु हमारे पास जो परिग्रह है अुसे घटानेकी शक्ति दे। हम अगर अपने पापोंका प्रायश्चित्त करें, तो

अुनका आगे विस्तार न हो। अेक भी चीज़ अपनी समझकर न रखनी चाहिये। और यथाशक्ति परिग्रह छोड़नेकी कोशिश करनी चाहिये।

*   *   *

सत्यका पालन करनेके लिअे, अहिंसाका पालन करनेके लिअे अगर सारी दुनियाकी मदद चाहिये, तब तो मनुष्य पराधीन बन जाय। मगर औश्वरने अितना सुन्दर नियम बनाया है कि तमाम संसार विमुख हो जाय तो भी मनुष्य सत्यका, अहिंसाका पालन कर सकता है। अगर हम झगड़ा न करना चाहें, तो दूसरा आदमी झगड़ा कर ही नहीं सकता। अन्तमें वह थक कर चुप हो जायगा। गुस्सेके जवाबमें गुस्सा करनेसे गुस्सा बढ़ता है। जलतेमें घी डालने जैसा होता है।

*   *   *

जिसके मनमें कभी कोअी सवाल नहीं अुठता, वह कैसे अूँचा अुठ सकता है?

*   *   *

. . . बहनने आत्महत्या की, अिस परसे सबक यह लेना है कि अिन्सानको अपने मनके भीतर ही भीतर दुःख या चिन्ताको घोंटते नहीं रहना चाहिये, मन ही मन जलते नहीं रहना चाहिये। जिसकी तरफसे दुःख हुआ हो, अुससे तुरन्त कह देना चाहिये। तभी वह दुःख हमारे मनमें नहीं रहेगा। मनके अन्दर ही अन्दर मसोसते रहना भी अेक प्रकारकी आत्महत्या है।

आत्म-निन्दा कहाँ तक ठीक है? अपने बारेमें अपने मनमें असन्तोषका रहना अेक तरहसे अच्छा है। मगर वह असन्तोष

हदसे ज्यादा न होना चाहिये। अेक हद तक असन्तोष रहे, तो मनुष्य अूपर अुठता है। मगर यदि वह व्यर्थ ही अपने आपमें हमेशा दोष निकालता रहे कि मुझे यह नहीं आता, वह नहीं आता, तो सचमुच ही वह अुसे आवेगा भी नहीं और वह मूर्ख बन जायगा! हमें मनके भीतर प्रसन्नता रखनी चाहिये और अुसके साथ-साथ अेक तरहका असन्तोष भी रखना चाहिये। तब तो हमारी अुन्नति होगी।

देहको रत्नचिन्तामणि कहा है। हम ईश्वरपरायण रहें तो सचमुच ही अुसे रत्नचिन्तामणि बना सकते हैं। ईश्वरपरायण होनेके लिअे अुसका दमन भी करना चाहिये।

पुरुषको तो बाहर घूमना-फिरना पड़ता है। अुसके लिअे बाहर काम है, अिसलिअे अुसे झट-झट अैसी अुदासी नहीं आती। मगर स्त्रीको घरके घर ही में रहना पड़ता है, अिसलिअे वह अेकान्तवासी बन जाती है और अुसमें झटपट अुदासी आ जाया करती है। यदि अुसे बात करनेको दूसरी स्त्री मिल जाय, तो अुसकी जबान अितनी चलने लगती है कि अुसे यह भी विवेक नहीं रहता कि क्या बोलना चाहिये और क्या नहीं। घरमें बन्द रहनेके कारण अुसमें अैसे कअी अैब घर कर गये हैं। वैसे, अेक तरहसे यह अेकान्तवास सेवन करने लायक भी है। अुसके कारण कितने ही प्रलोभनोंसे दूर रहा जा सकता है। मगर अिस अेकान्तवासका लाभ तभी मिल सकता है, जब हम अन्तर्मुख होना, दिल टटोलना और आत्म-निरीक्षण करना सीख लें।

* * *

अेक बहन अैसी है जिसे अेक अक्षर भी नहीं आता। अेकका अंक तक नहीं बना सकती। फिर भी वह अपने काममें मग्न रहती है। अपना न हो, तो अेक घासके तिनकेको भी वह नहीं छूती। सपनेमें भी चोरी नहीं करती। यह पूछो कि भागवत क्या है, तो सामने देखने लगती है, मगर सब पर प्रेम अितना रखती है जैसे साक्षात् जगदंबा हो।

जबकि दूसरी अैसी हो जिसे सब कुछ आता हो, अुपनिषद् कंठस्थ हों, अुच्चारण भी खूब बढ़िया हों, परन्तु वह चोरी करे, झूठ बोले, औरोंसे काम करा लेनेमें पक्की हो, अुसमें बत्तीसों लक्षण हों।

अिन दोनोंमें से अच्छी तो पहली ही है, अिसमें जरा भी शंका नहीं। मगर अुसे लिखना-पढ़ना आता हो, तो अुससे भी अच्छी हो सकती है।

* * *

जिस ज्ञानमें नम्रता नहीं, कोमलता नहीं, अुस ज्ञानको क्या करें? कौशिक मुनिने अपने पर पक्षीकी बीट पड़ गअी तो क्रोध किया। अुससे पक्षी जलकर भस्म हो गया। अपने तपकी यह शक्ति देखकर मुनिके मनमें जरा अभिमान हो आया। बादमें वे अेक आदमीके यहाँ अतिथि बन कर जाते हैं। घरकी मालिकन अपने पतिकी सेवामें लगी हुअी थी, अिसलिअे अतिथिको खड़ा रखती है। पतिकी सेवा पूरी होनेके बाद मुनिके पास भोजन लेकर जाती है और देर होनेका कारण बताकर मुनिसे माफी माँगती है। अिस पर मुनिको गुस्सा आ गया। अुस स्त्रीने कहा, मैं कोअी वह चिड़िया नहीं हूँ जो आपके क्रोधसे जल जाअूँगी; और आपका अिस तरह क्रोध करना ज्ञान नहीं

कहला सकता । अिस पर कौशिक मुनिको ज्ञान हुआ और अुन्होंने अुस स्त्रीसे कहा, तूने तो मुझे दो प्रकारका भोजन दे दिया : अेक भोजनान्न और दूसरा ज्ञानान्न ।

*　　　　*　　　　*

अपने पास स्वाभाविक रूपमें आये हुअे कामको जो आदमी करता है, अुससे वह अलिप्त रह सकता है । अैसे कामके प्रति अुसे मोह नहीं होता ।

*　　　　*　　　　*

सच्चा ज्ञान, सच्ची शिक्षा तो हमारी अपनी कर्तव्यपरायणतामें समाअी हुअी है ।

*　　　　*　　　　*

अस्पतालमें किस तरहके लोग आते हैं, यह वहाँ जाकर देखें तो हम काँप अुठें । डॉक्टर दवा देता है, मगर अुसके साथ ही नीरोगी रहना सिखाना भी अुसका काम है । लेकिन यह काम शायद ही कोअी डॉक्टर करता होगा । बहुतेरे डॉक्टर तो शरीरकी झूठी हिफाजतमें लग जाते हैं । अैसा करके वे मनुष्यकी नीति और आत्माको नुकसान पहुँचाते हैं । और शरीरकी चिन्ता करके वे शरीरकी भी सच्ची रक्षा नहीं कर सकते ।

जीवित प्राणियोंको मारकर शरीरके लिअे दवाअें तैयार करना, शरीरको जोड़ना और दो-चार टाँके लगाना सीखना भी कोअी अिन्सानका काम है? अैसा तो राक्षस करते हैं ।

*　　　　*　　　　*

पुरुष हो या स्त्री, अुसे थोड़े-बहुत विकार तो होते हैं । फिर अुसका मन अिधर-अुधर देखता ही रहता है और भटकता

ही रहता है। अेक बात समझ लेनी है कि हमारा जन्म भोग करने या करवानेके लिअे नहीं, बल्कि आत्मदर्शनके लिअे है।

शिव-पार्वतीका विवाह आदर्श विवाह माना जाता है। जिसे पार्वती जैसी सच्ची शादी करनी हो, अुसे तो शिवजी जैसे निर्विकारीका चिन्तन करना चाहिये। अैसी रेखा केवल पार्वतीके हाथमें ही थी सो बात नहीं। हरअेक स्त्रीके हाथमें वह रेखा है ही।

पतिके चुनावमें यह नहीं सोचना या देखना है कि अुसने कैसे कपड़े पहने हैं या कैसा साफा बाँधा है, परन्तु यह देखना है कि अुसकी विद्या कितनी है और गुण कैसे हैं। अेक बार विचार कर लिया कि व्याह करना है, तो अैसे आदमीसे, जिसका चरित्र अच्छा हो और जिसके साथ हमारा मन मिल जाय, विवाह कर लिया जाय। अैसा चरित्रवान आदमी मिले तो ठीक है, न मिले तो कुँवारी रहनेका संकल्प करना चाहिये। यह विचार नहीं किया जा सकता कि जो भी मिले अुससे शादी कर ली जाय। पार्वतीजीने तो संकल्प किया था कि शिवजी जैसा निर्विकारी पुरुष मिलेगा तभी विवाह करूँगी, नहीं तो अविवाहित रहूँगी। हरअेक कन्याको पार्वतीका आदर्श रखना चाहिये।

*　　　　*　　　　*

किसीके कंधे पर न बैठना भी सेवा है। किसीसे सेवा नहीं लेना, काम न करवानेकी वृत्ति रखना, भी सेवा है।

*　　　　*　　　　*

यह दुनिया तो अैसी है कि तीन टाँके लगायें तो तेरह टूटते हैं। तो फिर अिसे कहाँ-कहाँ सुधारेंगे? सच्चा सुधार तो यही है कि हम अपने भीतर रहनेवाले आत्मारूपी सत्यको पहचानें।

* * *

आप भला तो जग भला। अहिंसाके नजदीक वैर छूट जाता है, यह पतंजलि भगवानने लिखा है। अगर हम खुद गुलाम हों, तो हम सारे संसारको गुलाम मानेंगे। मतलब यह है कि निर्दोष मनुष्यको कौन धोखा देने जाता है? अुसके साथ कोअी दगा करेगा, तो वह वापस अुसीको लगेगा। अगर हम प्रतिकार न करें यानी दुष्ट मनुष्यका विरोध न करें, तो अुसकी दुष्टता ही अुसे गिरा देती है। अुसे ठोकर लगती है और वह सीधा हो जाता है।

* * *

अगर हम आश्रममें अपना स्वराज ले लें, तो सारे हिन्दुस्तानका स्वराज मिल जाय। यानी सब सीधे-सच्चे हो जायँ। किसीको किसी पर सन्देह न हो। अविश्वास न हो तो स्वराज हथेली पर है।

स्वराजका अर्थ यह है कि दूसरों पर नहीं, बल्कि अपने पर राज्य करें, यानी अपने पर अंकुश रखें। जिसने अपनी अिन्द्रियों पर काबू पा लिया है, अुसने सब कुछ पा लिया है।

जिस आदमीने दंडनीति ग्रहण की है, शस्त्रनीति ग्रहण है, अुसे छल-कपट करना ही पड़ता है। अिस नीतिके साथ छल-कपट लगे ही हुअे हैं।

* * *

हम सबका मंदिर आश्रममें है। आश्रममें भी नहीं, वह तो हमारे हृदयमें है। दो-चार पत्थर जमा करके बनाया हुआ मंदिर किसी कामका नहीं। हम अपने हृदयमें मन्दिर बना सकें, तो वह कामका है।

आश्रम अगर अिसी तरह बराबर चलता रहे और अुसमें दुष्ट मनुष्य पैदा न हों, तो वह तीर्थक्षेत्र बन जाय।

नर्मदाके जितने कंकर हैं, अुतने सब शंकर कहलाते हैं। नर्मदाका अर्थ वही नदी नहीं है जो भड़ौंचके पास है, बल्कि सभी नदियाँ हैं। नदीके कंकरको धोकर जहाँ बिल्वपत्र चढ़ाया कि वह शंकर हो गया। अिससे आगे बढ़कर यदि साफ मिट्टी लेकर अुसका शिवलिंग जैसा आकार बनायें और अुस पर बिल्व-पत्र चढ़ावें, तो वह भी शंकर बन जायगा। अिससे भी आगे बढ़कर विचार करें, तो हमारे हृदयमें ही शंकर विराजमान हैं।

हम तो मूर्तिपूजक भी हैं और मूर्तिभंजक भी। मूर्तिके भीतर समाअी हुअी पाषाणताके भंजक हैं, परन्तु अुसके अन्दर समाअी हुअी अीश्वरकी भावनाके पूजक हैं।

* * *

मेरी अपेक्षा यह है कि आश्रमके अन्दर सब स्त्रियाँ अेक भी काम विचार किये बिना न करें। अिसके लिअे स्त्रियोंको ज्ञानी बनना चाहिये। आजकल तो हिन्दुस्तानके अन्दर स्त्री-समाज शुष्क बन गया है।

* * *

जिन लड़कियोंको कुँवारी रहना है, अुन्हें स्वतंत्रताको ब्याहना चाहिये। परतंत्र रहनेवाली लड़की कुँवारी रह नहीं सकती।

* * *

भूत मरे तो प्रेत पैदा हो। मतलब यह है कि हम किसीको लूटें, तो हमें लूटनेवाला दूसरा बैठा ही है। अिस परसे दूसरी कहावत है कि शेरके लिअे सवा शेर तैयार है। यहाँ शेरसे मतलब सिंह है। सिंह मारकर फाड़ खाता है। मगर अुसे मारकर फाड़ खानेवाले दूसरे शेर मौजूद ही हैं।

* * *

जैसे भोजन बनाना न आने पर भी कच्चा-पक्का बनाकर खा लें, तो अपच हो जाता है, वैसे ही जिसे पढ़ना न आये, तो कितनी ही बार पढ़ने पर भी कुछ समझमें नहीं आता; अुसे पढ़नेसे बदहज़मी हो जाती है।

* * *

बड़ेसे बड़ा आदमी भी यदि न करनेका काम करे, तो अुसे अुसकी सजा मिलती ही है।

भक्त अन्तर्नादकी प्रेरणासे काम करते हैं। परन्तु अन्तर्नाद भी कभी-कभी धोखा देता है, अिसलिअे भक्तको सावधान रहना चाहिये।

* * *

जो आदमी आधा झूठ बोलता है, वह डेढ़ झूठ बोलता है; क्योंकि वह अपने मनको धोखा देता है। जबकि सरासर झूठ बोलनेवालेको तो स्वयं पता होता ही है कि मैं यह झूठ बोल रहा हूँ।

* * *

बच्चोंकी शिक्षाका मुख्य आधार माताओं पर होता है। मैं आश्रममें कितनी ही शिक्षा दूँ, परन्तु माताओंके सहयोगके

बिना कुछ नहीं कर सकता। हमें तो अपने बच्चोंको परोपकारी बनाना है।

शिक्षकके पास जाने पर भी बच्चा माताके हृदयके भीतरसे अेक तार लेकर जाता है। अुसके जीमें यही रहता है कि कब माँ के पास जाअूँ। अुस तार द्वारा माता अुसे खींचती रहती है।

गीताजी पढ़ें, रामायण पढ़ें, 'हिन्द स्वराज' पढ़ें, मगर अुनमें से हमें जो सीखना है, वह तो है परमार्थ। बच्चोंको भी यही सिखाना है।

* * *

हमारे जिन बापदादोंने शराब छोड़ दी, अुन्होंने बड़े पुरुषार्थ और पुण्यका काम किया। परन्तु हमको, जिन्होंने कभी शराब नहीं पी, नकारात्मक पुण्य मिलता है। अितना ही कि हम शराब पीनेका पाप नहीं करते। हम शराबकी तमाम बुराअियाँ समझने लगें, तब कहा जा सकता है कि हमने सच-मुच शराब छोड़ी।

अिसी तरह हम अपने पुराने त्योहार मनाते हैं और व्रत पालते हैं। अुन्हें बिना समझे पालें, तब तो अुसका कोअी अर्थ नहीं। परन्तु जब हम अुनका रहस्य समझने लगें और दूसरोंको भी समझा सकें, तो अुससे हमें और समाजको लाभ होता है। हमारी बहनें नाग-पंचमी, जन्माष्टमी आदि तमाम त्योहार मनाती हैं। अुन्हें अिनका रहस्य समझना चाहिये। नागपंचमीका अर्थ यह होगा कि नागको दुश्मनकी अुपमा देकर अुसके ज़रिये अिस भावनाका प्रचार करनेके लिअे कि शत्रुको भी नहीं मारना चाहिये, नागपंचमीका व्रत बनाया गया।

अिस दुनियामें नाग जैसे जहरीले मनुष्य और कोअी नही हैं। हों तो वह हमीं हैं। अगर किसीको नाग जैसे जहरीले मानते हों, तो अुन्हें भी अमृतके समान मानें। और अिससे यह शिक्षा लें कि मनुष्यमात्र पूजा करने लायक़ है, यानी सेवा करने लायक़ है।

*   *   *

यह संसार प्रेमके बन्धनसे चल रहा है। अेक दूसरेके प्रति प्रेमभाव रखनेके रोजके प्रसंगोंका अुल्लेख तो अितिहासमें नहीं किया जाता, परन्तु लड़ाअी-झगड़ों और मार-काटका जिक्र किया जाता है। दुनियामें अेक दूसरेके साथ प्रेमके व्यवहारके प्रसंग जितने होते हैं, अुनकी तुलनामें लड़ाअी-झगड़ेके अवसर तो बहुत कम होते हैं। दुनियामें हम अितने गाँव और शहर बसे हुअे देखते हैं। अगर संसार हमेशा लड़ाअी पर चलता होता, तो अिन गाँवों और शहरोंकी हस्ती ही न होती।

*   *   *

जिन-जिन कानूनोंसे धर्मका लोप होता हो, अुन कानूनोंको हमें ज़रूर मिटाना चाहिये। अैसे कानूनों को न मानें, अितना ही नहीं, बल्कि अुनका सक्रिय विरोध करें। विरोध करनेके दो मार्ग हैं: मार-काट करनेका और सत्याग्रहका। हमें तो सत्याग्रहका मार्ग ही लेना चाहिये। हमें धर्मके नाम पर डाका नहीं डालना है। हम तो धर्मके नाम पर फाँसी पर चढ़ जायँ, मर मिटें, मगर दूसरेको न मारें।

*   *   *

यह प्रश्न कअी बार पूछा जाता है कि स्त्रियाँ अपने सतीत्वकी रक्षा कैसे करें। और स्त्रियोंको यह भी सुझाया जाता है कि वे खंजर रखें। अगर स्त्रियाँ खंजर रखने लगेंगी, तो वह

खंजर अुन्हींके विरुद्ध काम आवेगा। खंजर काममें लेनेके लिअे तो बहुत कठोरता चाहिये। खंजर इस्तेमाल करनेके लिअे हमें सारा सांसारिक जीवन बदलना चाहिये। जिस आदमीने कभी खून न देखा हो, खून निकाला न हो, वह खंजर इस्तेमाल नहीं कर सकता। खंजर काममें लेनेके लिअे शिकार करना चाहिये, कितने ही बकरे काटने चाहियें। किसीके शरीरमें खंजर भोंकनेके लिअे हृदयको अितना कठोर बनाना चाहिये।

अिसलिअे स्त्रियोंको खंजर इस्तेमाल करना सिखानेके बजाय यह शिक्षा देनी चाहिये कि तुम्हें डर किसका है? तुम पर सदा ही अीश्वरका हाथ है। अगर हम सचमुच दिलसे मानते हों कि अीश्वर है, तो हमें डर किसका रहे? कैसा ही दुष्ट मनुष्य तुम पर हमला करने आये, तो तुम रामनाम लेना। बहुतसे दुष्ट मनुष्य तो अिस पुकारसे ही भाग जायँगे। मगर कदाचित् अैसा न भी हो तो क्या? अुस समय हमें मर मिटना चाहिये। बच्चा मरनेको पड़ा हो, तो हम अन्त तक अुसके पीछे मर मिटते हैं न? और खूब सेवा करने पर भी बच्चा गोदमें मर जाय, तो माताको सन्तोष रहता है कि मुझसे जितना हो सका किया। प्राण देनेकी पूरी तरह तैयारी रखना ही हमारा धर्म है। कितना ही दुष्ट मनुष्य हो, हम मर मिटें लेकिन अुसके बलात्कारके वश न हों, तो फिर वह दुष्ट मनुष्य भी क्या कर सकता है? संभव तो यह है कि मरनेकी पूरी तैयारीवाले पवित्र मनुष्यके सामने कैसा भी दुष्ट मनुष्य अपनी दुष्टता छोड़ देता है। यानी सत्याग्रहसे दोहरा लाभ होता है। जो आदमी सत्याग्रह करता है, अुसका तो भला होता ही है, मगर जिसके प्रति सत्याग्रह किया जाता है, अुसका भी अुससे भला होता है।

स्त्रियोंकी प्रार्थना

गोविन्द, द्वारिकावासिन्, कृष्ण, गोपीजनप्रिय ।
कौरवैः परिभूतां मां किं न जानासि केशव ! ॥

हे केशव, हे द्वारिकावासी गोविन्द, हे गोपियोंके प्रिय कृष्ण, कौरवोंसे — दुष्ट वासनाओंसे — घिरी हुई मुझे तू कैसे नहीं जानता !

हे नाथ ! हे रमानाथ ! व्रजनाथार्तिनाशन ।
कौरवार्णवमग्नां माम् उद्धरस्व जनार्दन ! ॥

हे नाथ, हे रमाके नाथ, व्रजनाथ, दुःखोंका नाश करनेवाले जनार्दन ! मेरा, कौरवरूपी समुद्रमें डूबी हुईका, तू उद्धार कर ।

कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वभावन ।
प्रपन्नां पाहि गोविन्द कुरुमध्येऽवसीदतीम् ॥

हे विश्वात्मा ! विश्वको उत्पन्न करनेवाले महायोगी कृष्ण ! कौरवोंके बीचमें हताश और तेरी शरण आई हुई मुझे बचा ।

धर्मं चरत माऽधर्मं; सत्यं वदत नानृतम् ।
दीर्घं पश्यत मा ह्रस्वं; परं पश्यत माऽपरम् ॥

अधर्मका नहीं, धर्मका आचरण करो; असत्य नहीं, सत्य बोलो; छोटी नहीं, लम्बी दृष्टि रखो; नीची नहीं, ऊँची दृष्टि रखो ।

अहिंसा सत्यम् अस्तेयम् शौचम् इन्द्रियनिग्रहः ।
एतं सामासिकं धर्मम् चातुर्वर्ण्येऽब्रवीत् मनुः ॥

हिंसा न करना, सत्य बोलना, चोरी न करना, पवित्रताका पालन करना, अिन्द्रियोंको वशमें रखना; मनुने संक्षेपमें चारों वर्णोंका यह धर्म बताया है।

अहिंसा सत्यम् अस्तेयम् अकाम-क्रोध-लोभता ।
भूत-प्रिय-हितेहा च धर्मोऽयं सार्ववर्णिकः ॥

हिंसा न करना, सत्य बोलना, चोरी न करना, विषयेच्छा न करना, क्रोध न करना; लोभ न करना, परन्तु संसारमें प्राणियोंका प्रिय और हित करना, यह सभी वर्णोंका धर्म है।

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर् नित्यम अद्वेष-रागिभिः ।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस् तं निबोधत ॥

विद्वानोंने जिसका सेवन किया हो, संतोंने जिसका सेवन किया हो, राग-द्वेषसे नित्य मुक्त वीतरागी पुरुषोंने जिसका सेवन किया हो और जिसको अपने हृदयने स्वीकार किया हो, अैसे धर्मको तू जान।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वम्, श्रुत्वा चैवावधार्यताम ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत ॥

धर्मका रहस्य सुनो और सुनकर हृदयमें अुतारो। वह यह कि जो अपने लिअे प्रतिकूल हो वह दूसरोंके प्रति न करो।

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यद् अुक्तं ग्रंथकोटिभिः ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम् ॥

जो करोड़ों श्लोकोंमें कहा गया है वह मैं आधे श्लोकमें कहूँगा। वह यह कि दूसरे पर अुपकार करना पुण्य है और दूसरेको पीड़ा पहुँचाना ही पाप है।

आदित्य-चंद्रौ अनिलोऽनलश्च
द्यौर् भूमिर् आपो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च अुभे च सन्ध्ये
धर्मोऽपि जानाति नरस्य वृत्तम् ॥

सूर्य, चंद्र, वायु, अग्नि, आकाश, पृथ्वी, जल, हृदय, यम, दिन और रात, शाम और सुबह, और धर्म खुद मनुष्यका आचरण जानता है, अिसलिअे मनुष्य अपनी कोअी चीज़ छिपा नहीं सकता ।